कुछ दूध बेचा भी जाता है। उसने बताया की सारा दूध परिवार के लोगों में ही खप जाता है—और जो कुछ बचता भी है, उसकी लस्सी (छाछ) व मक्खन बन जाता है। इतनी पर्याप्त मात्रा में दूध मिलने के कारण ही यहां के लोग इतने हट्टे-कट्टे होते हैं।

## पूर्ण वैभव

जिन गांवों में मैं गया वे किसी न किसी सामूहिक योजना-क्षेत्र या विस्तार खण्ड में पड़ते हैं। मुझे पता चला कि एक साल के अन्दर ही इन गांवों का स्वरूप बदल गया है। सड़कें और गलियां चौड़ी की गयी हैं और ईंटें बिछा दी गयी हैं; सड़कें चौड़ी करने के लिये, मकान-मालिकों ने अपने चबूतरे तोड़ने की अनुमति खुशी से दी है। जगह-जगह बड़े-बड़े कुएं बनाये जा रहे हैं, तैयार कुओं में रहट लगे हैं, सुन्दर पंचायत घर व वाचनालय बन गये हैं और वयस्क शिक्षा की कक्षाएं खुली हुई हैं। इच्छा होती है कि हर सप्ताह दो-तीन दिन मैं इन गांवों के खुले वातावरण में ही बिता सकूं और इनकी स्वच्छ एवं शीतल वायु का सेवन करूं।

इन गांवों का पूरा आनन्द लेने के लिये जरूरी है कि वहां आप ऊंचे अफसर के भाव से न जायं, बल्कि अपने को गांव वालों में समझें, ग्रामीणों से मिलें उनकी चारपाई पर बैठें, उनके घरों में जायें और इस प्रकार से बर्ताव करें कि उन्हें अनुभव हो कि उनका कोई भाई ही उनसे मिलने आया है। पूरा आनन्द आपको इसी प्रकार से प्राप्त होगा और आप उनके नेत्रों में प्रेम एवं स्वागत की झलक स्पष्ट रूपसे देख सकेंगे।

मैं बहुधा इन गाँवों में जाता और ग्रामीणों से बातचीत करता हूँ, अपने विचार उन्हें बताता और उनकी बातें खुद सुनता व समझता हूं। उदाहरणार्थ, कुछ गांवों में मैंने देखा कि उनमें जितने मनुष्य रहते हैं प्रायः उतने ही पशु भी रहते हैं। अधिकतर ये पशु घरों के आंगन में भी बंधे थे। यह स्थिति हानिकारक थी, विशेष कर बालकों के लिए। इसलिए मैंने सुझाया कि जिन लोगों के घरों के साथ पशु रखने के गोंडे नहीं हैं, क्या वे सब मिलकर अपने पशु एक साथ, घरों से कुछ दूरी पर एक या अधिक बाड़ों में नहीं रख सकते। गांव वालों को यह सुझाव बहुत पसन्द आया और उन्होंने इसे आजमाने का वचन दिया।

## हर गांव के लिए उद्योग क्षेत्र

इसी प्रकार मैंने एक और सुझाव भी गांव वालों के सामने रखा। मैंने कहा कि हर गांव में उद्योग-धन्धों की एक जगह अलग से कायम की जानी चाहिये। अभी अधिकतर ग्रामोद्योग ग्रामीणों के घरों में ही स्थित हैं। जुलाहा अपने झोंपड़े में ही अस्वास्थ्यकर स्थिति में करघा चलाता है। बातचीत करने को कोई साथी भी नहीं होते, इसलिए काम भार बन जाता है। जुलाहों को इस प्रकार से काम करते देख कर मुझे बहुत दुःख होता है। और यही स्थिति गांव के तेली की भी है। अपने घर में ही उसने कोल्हू लगा रखी है, जो उसका भैंसा या बैल खींचता रहता है। बढ़ई, लोहार, आदि भी अपने घरों में ही अपने धन्धे करते हैं—गंदी और अस्वास्थ्यकर स्थिति में। घर वैसे ही छोटा होता है और धन्धे का काम फैलाने से वह थोड़ी जगह भी भर जाती है।

यही सब देखकर, मैं गांव वालों से बहुधा कहा करता हूँ कि काम धन्धे के लिए उन्हें गांव के केन्द्र में या उसके किसी भी ओर एकाध एकड़ ज़मीन अलग रखनी चाहिए और गांव का उद्योग-क्षेत्र इसी भूमि पर स्थापित किया जाना चाहिए। इस क्षेत्र को चारों ओर से घेर दिया जाना चाहिये और कारीगरों को अपने काम यहीं करने चाहियें। जुलाहों को अपने करघे, तेली को अपनी घानी और लोहार को अपनी भट्ठी घरों से हटा कर इसी उद्योग-क्षेत्र में लगानी चाहिये। उन्हें सवेरे से ही इस क्षेत्र में पहुंच कर, साफ़-सुथरी स्थिति में साथियों के साथ अपने काम शुरू कर देने चाहिएं। यदि संयोग से गांवों को बिजली भी प्राप्त हो, तो फिर कहना ही क्या। ये उद्योग-क्षेत्र भी अपनी ज़रूरत के मुताबिक बिजली ले सकते हैं। मैं समझता हूं कि वह दिन दूर नहीं, जब पंजाब के गांव बिजली का आनन्द उठा सकेंगे।

## बिजली की सप्लाई

बिजली की सप्लाई की बात से मेरे मन में एक और महत्वपूर्ण विचार उत्पन्न होता है। वह है इन उद्योग-क्षेत्रों को अन्य गांवों से ३-४ मील की दूरी पर स्थित किसी ऐसे गांव में स्थापित करना जिसमें बिजली लगी हो। गांवों में बिजली पहुँचाना, सुविधा के लिए ही नहीं, बल्कि ग्रामोद्योग की उन्नति के लिये भी बहुत आवश्यक है। हर राज्य में; गांवों

में बिजली पहुँचाने की कोशिश हो रही है। पर यह भी स्पष्ट है कि निकट भविष्य में सभी गांवों को बिजली के खंभे, तार और बिजली घर बनाने में लागत खर्च बहुत बैठेगा, जो छोटे गांव उठा नहीं सकते। इसलिये मेरा सुझाव यह है कि जिन गांवों में बिजली पहुँच जाय, उनके आसपास के गांव अपने उद्योग-धन्धे उन्हीं गांवों में ले जायें। ग्रामीणों को अपने घरेलू धन्धे इन बिजली वाले गांवों में खोलने चाहिएं। वे वहां सवेरे पहुंच कर अपना धन्धा शुरू कर सकते हैं और ६ या ८ घण्टे के काम के बाद संध्या समय अपने घरों को वापस आ सकते हैं। मैं नहीं चाहता कि कोई कारीगर या घरेलू उद्योगों का काम करने वाला कोई भी कर्मकार, ऐसा करने में अपने बाप-दादों का गांव ही छोड़ दें।

जमींदारी समाप्ति का एक यह असर हुआ है कि बहुत से लोग गांव छोड़ कर शहरों में आ बसे हैं, खास तौर से पढ़े-लिखे नवयुवक। इससे हमारे बहुत से गांवों की अर्थ व्यवस्था बिगड़ गयी है। मैं चाहता हूँ कि हमारे शिक्षित नवयुवक शहरों में नौकरी के लिये मारे-मारे न फिर कर गांवों में जाकर बसें और आधुनिक तरीकों से खेती करें। जल्दी ही गांव-गांव में बिजली पहुँच जायगी और गांव के कारीगरों की मदद से वहां छोटे उद्योग धन्धे चलाये जा सकते हैं।

## सहकारी खेती

मैं जहां जाता हूँ सहकारी खेती पर जोर देता हूं। शुरू-शुरू में १०-१० या २०-२० किसान अपनी अपनी जमीनें मिलाकर १०० एकड़ के खेत बना कर सहकारी रूपसे काम कर सकते हैं। फिर उन्हें इसके लाभों का पता चलेगा। दिल्ली राज्य के सुखमेलपुर गांव के ११ किसानों ने इसी प्रकार मिलकर १५० एकड़ जमीन में सहकारी खेत बनाया है। उनकी योजना बहुत अच्छी है और मैंने दूसरे गांव वालों से भी कहा है कि वे सुखमेलपुर जाकर इसको देखें।

इसी प्रकार सारे गांव का दूध दुहने और बेचने की कोई सम्मिलित व्यवस्था होनी चाहिये।

## चिकित्सा की सुविधाएं

सबसे अंत में आती है उपभोक्ता सहकारी समितियां। मुझे बताया

गया है कि एक गांव में ऐसी समिति अच्छी तरह चल रही है। उन्होंने ७५) रु० मासिक पर एक मैनेजर रख लिया है। मैंने उनसे कहा कि जब तक उनका कारोबार अधिक न हो १०००) रु० वार्षिक ख़र्च उठाना उनके लिए कठिन होगा। मध्य प्रदेश में इन समितियों के संचालन का एक अच्छा ढंग निकाला गया है जिसमें सदस्य ही निःशुल्क सारा काम करते हैं। मान लीजिये किसी समिति के १०० सदस्य हैं। उनकी ४-४ की २५ टुकड़ियां बनायी जायं और हर टुकड़ी एक-एक सप्ताह प्रतिदिन २ घण्टे समिति की दूकान पर काम करे तो प्रत्येक टुकड़ी को दो साल में केवल दो बार काम करना पड़ेगा और संचालन में एक पैसा भी ख़र्च न होगा। मैंने गांव वालों को यह ढंग बताया तो उन्हें भी पसन्द आया और उन्होंने ऐसा ही करने का वचन दिया।

गांवों में चिकित्सा की सुविधाओं का दुःखद अभाव है। लोगों को डाक्टर के पास जाने के लिए १०-१२ मील तक चलना पड़ता है। इसका एक उपाय यह हो सकता है कि कुछ अच्छी दवाओं के बक्से गांवों में शिक्षकों आदि सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के पास रख दिये जायें और वे दवायें बांटा करें। जो लोग दे सकते हैं वह १-२ आने डिब्बे में डालते रहें इस प्रकार दवाइओं का कुछ ख़र्च निकलता रहेगा। वैसे अच्छा यही है कि हमारे डाक्टर ही इस काम में गांव वालों की सहायता करें।

## निःस्वार्थ कार्यकर्त्ता

भारत के डाक्टरों को मैं निःस्वार्थ जन-सेवक समझता हूँ। हम लोग नहीं जानते कि डाक्टर लोग अपने ग़रीब रोगियों की मुफ्त चिकित्सा में कितना समय लगाते हैं! मैं जानता हूं कि दिल्ली के बड़े-बड़े डाक्टर हर रोज़ अस्पतालों में जाकर मुफ़्त काम करते हैं। अतः जब मैंने इन गांवों में विशेष कर बच्चों के लिये चिकित्सा सम्बन्धी सुविधाओं का अभाव देखा तो मुझे एक विचार सूझा कि यदि सभी चिकित्सिक चाहे वे निजी प्रेक्टिस करते हों, अथवा सरकारी डाक्टर हों तथा जिले के अधिकारी आपस में मिल कर ग्रामवासियों के लिये चिकित्सा का प्रबन्ध करने के लिए प्रयत्न करें, तो कितना अच्छा हो। जिले के अधिकारी सप्ताह में एक या दो बार, ३-४ घण्टों के वास्ते डाक्टरों के गांवों में, आने जाने के लिये कोई सवारी का प्रबन्ध करदें, तो डाक्टर आसानी से आसपास के १०-१२ मील के

दायरे में स्थित गांवों में जाकर इलाज कर सकते हैं। तब डाक्टर नियमित रूप से निर्धारित समय और स्थान पर पहुंच सकते हैं, जहां आसपास के गांवों के निवासी उत्सुकता से उनकी प्रतीक्षा करेंगे और उनकी चिकित्सा का लाभ उठा सकेंगे। इस योजना का बहुत स्वागत किया गया है और हर्ष की बात है कि जिले के अधिकारियों ने आस पास के डाक्टरों के सहयोग से, इस योजना को अमल में लाने की तत्परता दिखाई।

## पंचायत घर

पंजाब के ये गांव एक बात में बड़े सौभाग्यशाली हैं कि प्रत्येक गांव में एक अच्छी चौपाल या पंचायत घर मौजूद है, जो सदियों से गांवों के सामूहिक जीवन के केन्द्र रहे हैं। इन पंचायतघरों का अब अनेक प्रकार से विकास हो रहा है। पंचायतघरों में बहुत से समाचार पत्र आते हैं। लोग इन्हें पढ़ते हैं। ग्रामवासी अब न्याय पंचायतों तथा प्रशासनिक पंचायतों के लाभों को समझते हैं और वयस्क मताधिकार के कारण गांव के लोगों में अब जागृति फैल रही है। अब ग्रामवासियों में अपने मान, प्रतिष्ठा के भाव जगे हैं। पुराने जमाने में लोग स्त्रियों को दासी समझते थे। उनका काम गृहस्थी चलाना ही समझा जाता था। मुझे यह जान कर बड़ा अचरज हुआ कि सदियों पुरानी रूढ़ियों में स्त्रियों को चौपाल, पंचायतघर आदि स्थानों में जाना मना था। मेरे अनुरोध पर इन तीन गांवों के लोगों ने इस कुरीति को सदा के लिये छोड़ दिया, और वह दृश्य देखने लायक था जब गांवों की स्त्रियां जीवन में पहली बार ग्रामवासियों के साथ पंचायत घर में आकर बैठीं और भाषण सुने।

मैंने ग्रामवासियों से कहा कि हमारे देश की महिलाएं मर्दों से कई दृष्टियों से बहुत अच्छी हैं। वह कठिन परिश्रम करती हैं। परिवार में उनकी निःस्वार्थ निष्ठा की जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है और मर्दों की तरह अदालत में सफेद झूठ तो महिलाएं कभी भी नहीं बोलतीं। इस आखिरी बात को सुन कर सभी लोग हंस पड़े।

बस एक सुझाव देकर मैं अब इस बात को खत्म करता हूँ। शहरों के रहने वाले जितनी बार हो सके, अपने परिवारों के साथ गांवों में जायं तब वे ग्रामीण भाइयों और बहनों के उत्कृष्ट उच्च चरित्र को समझ सकेंगे और उनके हार्दिक स्नेह को प्राप्त कर सकेंगे।

धातु अथवा उपधातुओं, रत्नों और उपरत्नों की भस्में बनाने अथवा उन्हें मारण करने का अर्थ है, उनके सूक्ष्म परमाणुओं को अत्यन्त सूक्ष्म, निरुत्थ और सेन्द्रिय घटक युक्त बनाना, ताकि सेवन करने पर वे शरीर में भली प्रकार सात्म्य होकर उपकारक हो सकें और कोई हानि उत्पन्न न करें। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि जड़ द्रव्यों की जड़ता को दूर कर उन में शरीरोपयोगी लघुत्व गुण को उत्पन्न करने के उद्देश्य से भस्में बनाई जाती हैं।

धातु-उपधातुओं की भस्म बनाने से उनका धातुत्व नष्ट हो जाता है ऐसा नहीं समझना चाहिये। धातुत्व नष्ट होना सम्भव ही नहीं है। भस्म चाहे जितनी ही सूक्ष्म बनाई जाय किन्तु वह धातु फिर भी अपना मूल स्वभाव (गुण विशिष्ट) नहीं छोड़ती ऐसा प्रयोगों से सिद्ध हो चुका है। निश्चय ही भस्म का अर्थ राख नहीं है; भस्म और राख में बहुत बड़ा अन्तर है। भस्में अति तेजस्वी, वीर्यवान और गतिवान होने से शीघ्र फलदायक हैं। वास्तव में भस्में तैयार करने में सेन्द्रिय क्षार का संयोग धातु के साथ इस प्रकार कराया जाता है। कि भस्में सेन्द्रिय बनकर शरीरोपयोगी हो जाती हैं।

सुवर्ण, रौप्य, लौह, वंग, यशद, मण्डूर, मुक्ता, मुक्ता शुक्ति, प्रवाल तथा अन्य रत्नोपरत्न स्वभाव से सौम्य हैं। ताम्र, संखिया, हरताल आदि उग्र हैं। हमारी फार्मेसी में धातु, उपधातुओं, रत्नों, उपरत्नों के शोधन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। शास्त्रीय विधि के अनुसार ही पुट और भावना देकर भस्में तैयार की जाती हैं अतः हमारी भस्में पूर्ण रूप से निर्दोष और शीघ्र फल दिखाने वाली हैं।

**अकीक भस्म**—दिल की कमजोरी, नेत्ररोग, रक्तपित्त, विशेषतः थूक के साथ खून आने में अत्यन्त लाभ करती है। मात्रा—२ से ४ रत्ती तक।

अभ्रक भस्म—अभ्रक भस्म शुद्ध हिमालय के वज्राभृक से बनाई जाती है। यह रसौषधि न होते हुए भी संयोगवाही है। अनुपान और संयोग भेद से, ज्वर, खांसी, यक्ष्मा, श्वास, जीर्ण ज्वर, प्रमेह प्रदर, वातविकार, अम्लपित्त, संग्रहणी, पाण्डु, हृदय दौर्बल्य नपुंसकता आदि में लाभ करती है।

अभ्रकभस्म में जितने पुट ज्यादा दिये जायेंगे उतनी ही गुण वृद्धि होती है। साधारणतया २१ पुटी, ६० पुटी, १०० पुटी, ५०० पुटी, १००० पुटी अभ्रक भस्म तैयार की जाती है।

अभ्रक श्वेत भस्म (र. सु.)—विषम ज्वरों में तृषा शामक है। मात्रा २ से ४ र० तक

कपर्दिका भस्म (भा. पु.)—उदर शूल, परिणाम शूल, मन्दाग्नि और अम्लपित्त में अत्यन्त लाभ करती है। मात्रा—१ से २ र० तक

कहरवा भस्म (फा. मि.)—रक्तपित्त, रक्तप्रदर, नकसीर, अर्श तथा हृदय की दुर्बलता में बहुत अच्छा लाभ करती है। मात्रा—½ से २ र०

कान्त लौह भस्म (र. सु.)—पाण्डु, रक्ताल्पता, जिगर की खराबी, अर्श और अशक्ति में लाभ करती है। मात्रा १ से २ र० तक

कांस्य भस्म (आ. प्र.)—प्रमेह रक्तविकार, स्त्रियों के गर्भाशयदोष और उदरकृमि में अच्छा लाभ करती है। मात्रा १ से २ रत्ती तक।

कसीस भस्म (फा. वि.)—यकृत्वृद्धि, प्लीहा वृद्धि, पाण्डु, रक्ताल्पता ज्वर के बाद की कमजोरी में लाभदायक है। मात्रा—१॥ से २॥ र० तक

कुक्कुटाण्डत्वक भस्म (वै. मृ.)—स्वप्न दोष, प्रमेह प्रदर, नपुंसकता और शारीरिक निर्बलता में लाभदायक है। मात्रा २ से ४ र० तक।

खर्पर भस्म (यो. र.)—प्रमेह, यक्ष्मा, ज्वर, मधुमेह, कास आदि अनेक रोगों में लाभ करती है। मात्रा १ से २ र० तक

गोदन्ती हरताल भस्म (आ. प्र.) – विषमज्वर तथा मलेरिया में अपूर्व लाभदायक है। मात्रा ४ से ८ र० तक।

गोमेद भस्म (र. का.)—अपस्मार, उन्माद, पक्षाघात तथा अन्य वातरोगों में पूर्ण लाभदायक है।। मात्रा २ से ४ र०

---

ज़हर मोहरा (पिष्टी) भस्म (यू. वि.)—बच्चों के हरे पीले दस्त, दूध डालना तथा सूखा रोग में लाभ दायक है। मात्रा ४ से ८ र० तक।

ताम्र भस्म (र. मु.)—कफ और वायु के विकार, ज्वर, खांसी, श्वास और पाण्ड में अच्छा लाभ करती है। मात्रा १ से २ र० तक।

तीक्ष्ण लौह भस्म (फा. वि.)—यह फौलादी भस्म फार्मेसी में खास तौर पर तैयार की जाती है। नपुंसकता, प्रमेह, कमज़ोरी और पाण्डु रोग में दिव्य प्रभाव प्रभाव करती है। मात्रा १ से २ र० तक

तुत्थ भस्म (र. रा. सु.)—रक्त विकार, मोसमी फोड़े, फुन्सी, चम्वल तथा सूजाक में अत्यन्त लाभ करती है। $\frac{1}{4}$ से $\frac{1}{2}$ र० तक।

नाग भस्म पीली (र. यो)—रक्तविकार, अपची, कण्ठमाला, धातुक्षीणता, प्रमेह, प्रदर और अशक्ति में लाभकारी है। मात्रा १ से ३ र० तक।

नाग भस्म (काली) (र. क.)— यह विशेष रूप से बाजीकर और कामोद्दीपक है। मात्रा १ से २ र० तक।

नीलम भस्म (र. का.)—हिस्टीरिया, हृदय दौर्वल्य, स्नायु दुर्वलता, यक्ष्मा तथा शारीरिक अशक्ति में परम लाभदायक है। मात्रा $\frac{1}{2}$ से १ र० तक

नीलांजन भस्म (फा. वि.)—(काले सुरमे की भस्म) यह कफ को पतला करके निकालती है और फुफ्फुसावरण के शोथ को दूर करने में बहुत अच्छा काम करती हैं।

पन्ना भस्म (यू. वि.)—हृदय की गति को नियन्त्रित करती है। त्रिदोष नाशक, बलवर्द्धक, कास, श्वास, और यक्ष्मा को दूर करती है। मात्रा $\frac{1}{2}$ से १ र० तक।

पारद भस्म श्वेत (र.त. स.)—उपदंश तथा उसके उपद्रवों का नाश करती है। मात्रा $\frac{1}{2}$ से १ र० तक।

प्रवाल भस्म (अग्निपुटी) (आ. प्र.)—कास, श्वास यक्ष्मा प्रदर और प्रमेह में चमत्कार पूर्ण लाभ दिखाती है। मात्रा १ से ३ र० तक

पुष्पराज (पुखराज) भस्म(र.क.)–शारीरिक निर्वलता, मन्दाग्नि, क्षय तथा विष दोषों में खूब फायदा करती है। मात्रा—१ से २ र० तक।

प्रवाल भस्म (चन्द्रपुटी) (फा. वि.)—(प्रवाल पिष्टी)–यह अग्नि पुटी भस्म की अपेक्षा सौम्य है अतः पित्त दोष, रक्तपित्त, अम्ल पित्तादि में भी अच्छा

लाभ दिखाती है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**पीतल भस्म** (आ. प्र.)—यह उष्णवीर्य और शीतल है। रक्तपित्त, श्वेत कुष्ट, जिगर, तिल्ली बढ़ना, पाण्डु, और कृमि रोगों का नाश करती है। मात्रा—½ से १ र० तक।

**फीरोजा भस्म** (यू. वि.)—पागलपन, याददाश्त की कमी, दिमागी कमजोरी और रक्तचाप (ब्लड प्रशर) में अति उपयोगी है। मात्रा—१ से २ र० तक

**फौलाद भस्म अपूर्व** (फा. वि.) (फार्मेसी में विशिष्ट योग से बनी)—यह खास तौर पर नपुंसकता, प्रमेह तथा काम ग्रन्थियों की निर्बलता दूर कर प्रबल वाजीकरण प्रभाव उत्पन्न करती है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**बंग भस्म श्वेत** (र. सु.)—वीर्यदोष और प्रमेह को दूर करने में अद्वितीय लाभ करती है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**बंग भस्म (हरताल योग की)** (आ. प्र.)—यह भस्म किंचित उग्र स्वभाव की है। कफ प्रकृति प्रधान रोगियों तथा रोगों की बढ़ी हुई दशा में देनी चाहिये। मात्रा १ से २ र० तक।

**बेर पत्थर भस्म** (यू. वि.)—मूत्राश्मरी और मूत्र कृच्छ्र में लाभ करती है। मात्रा—२ से ३ र० तक।

**मण्डूर भस्म** (र. रा. सु.)—हमारी मण्डूर भस्म अत्यन्त पुराने मण्डूर से तैयार की जाती है; इसलिये विशिष्ट लाभ दायक सिद्ध हुई है। जिगर की खराबी, पाण्डु रोग, कामला, मन्दाग्नि, संग्रहणी तथा अर्श में खूब फायदा करती है। मात्रा—१ से ३ र० तक

**मधु मण्डूर भस्म** (र. त. सा.)—यह भस्म साधारण मण्डूर भस्म से अधिक लाभ करती है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**माणिक्य भस्म** (यू. वि.)—हृदयरोग, स्नायु, दुर्बलता और न्यूरेस्थीनिया में अपूर्व लाभ करती है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**मुक्ता भस्म** (र. का.)—रक्तस्राव, उरःक्षत, यक्ष्मा, जीर्ण ज्वर में अत्यन्त लाभकारी है। निर्बल रोगियों को बल वर्धन की अपूर्व औषधि है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**मुक्तापिष्टी** (यू. वि.)—मुक्तापिष्टी भस्म की अपेक्षा अधिक सौम्य गुणयुक्त है। मात्रा भस्म के समान।

---

**मुक्ता शुक्ति भस्म (र. सु.)**—(शौक्तिक भस्म) सीप मोती भस्म—अजीर्ण अम्लपित्त, उदरशूल और गुल्म की खास दवा है। मात्रा २ से ४ र० तक।

**मुक्ताशुक्ति पिष्टी (फा. वि.)**— यह भस्म की अपेक्षा अधिक सौम्यगुणी है। मात्रा भस्म के समान।

**मयूर पंख (मयूर पुच्छ) भस्म (र. रा. सु.)**— हिचकी और दमे में बहुत अच्छा लाभ दिखाती है। मात्रा २ से ४ र० तक।

**मृगशृंग भस्म (शा. ध.)**— कफ वात जन्य (न्यूमोनिया का) पार्श्व शूल, हृदय शूल में खूब अच्छा लाभ दिखाती है। मात्रा १ से ३ र० तक।

**यशद भस्म (यो. र.)**— कफ पित्त प्रधान रोगों में लाभकारी है। ज्वर, अतिसार, ग्रहणी, पाण्डु, तथा नेत्र रोगों में फायदा करती है। मात्रा १ से २ र० तक।

**राजावर्त भस्म (वृ. यो.)**— उन्माद, अपस्मार और क्षीण स्मृति में लाभप्रद है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**रौप्य भस्म** (चाँदी की काली भस्म हरताल योग की)—दिल की धड़कन तथा प्रमेह आदि में लाभकारी है। मात्रा १ से २ र० तक।

**रौप्य भस्म**—(चाँदी की लाल भस्म पारद योग की)—नपुंसकता और शीघ्र पतन को दूर कर पुरुषत्व और काम शक्ति को बढ़ाती है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**रौप्य माक्षिक भस्म (र. का.)**— पाण्डु, ग्रहणी, उदर विकार, प्रमेह और स्त्रियों के प्रदर तथा सोम रोग में अत्यन्त हितकारी है। मात्रा १ से २ र० तक।

**लोह भस्म स्पेशल शतपुटी**— साधारण लोह भस्म की अपेक्षया विशेष गुण कारी है।

**लोह भस्म नं १ वारितर (हिंगुलयोग की) (आ. प्र.)** — यह साधारण लौह भस्म से प्रभाव में तीव्र और अधिक गुण युक्त है। मात्रा १ से २ र० तक।

**लोह भस्म नं २ (र. सु.)**—कामला, पाण्डु, रक्ताल्पता, मन्दाग्नि, यकृत्प्लीहा वृद्धि में अत्यन्त लाभदायक है। मात्रा १ से २ र० तक।

**वैक्रान्त भस्म (र. सु.)**— उन्माद, अपस्मार, मृगी, प्रमेह और अशवित

में लाभ करती है। मात्रा २ से ४ र० तक।

**शंख भस्म (र. का.)**— अजीर्ण, उदरशूल, अतिसार और परिणामशूल तथा अम्लपित्त में अति हितकर है। मात्रा २ से ४ र० तक।

**संग यशब भस्म (यू. वि.)** — हृदय और मस्तिष्क के रोगों को दूर कर उन्हें वल देती है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**संग जराहत भस्म (आ. प्र.)**— रक्तपित्त, रक्तप्रदर, अथवा शरीर के किसी भी भाग मे रक्त आने को रोकती है। मात्रा—१ से २ माशे तक।

**स्फटिका भस्म (फिटकरी भस्म)**— विषम ज्वर और मैलेरिया की आम औषधि है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**स्वर्ण माक्षिक भस्म (र. सु.)**— प्रत्येक प्रकार का प्रदर, पाण्डु, प्रमेह, अर्श, निद्रानाश में हित कारी है। यह भस्म अपेक्षा कृत सौम्य प्रकृति की है इस लिए कोमल स्वभाव वाले स्त्री पुरुषों को खूव माफ़िक आती है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**स्वर्ण भस्म (शा. ध.)**— श्वास, कास, राजयक्ष्मा, जीर्ण ज्वर, शारीरिक दुर्वलता, निद्रानाश, अपस्मार में अपार फलदायक है। नपुंसकता और प्रमेह की दिव्य औषधि है। उत्तम रसायन और प्रबल वाजीकरण है। मात्रा-½ से १ र० तक।

**सोमल (संखिया) भस्म (फा. वि.)** — नपुंसकता, रक्तविकार, आमवात, उपदंश और पाण्डु एवं जीर्ण ज्वर तथा विषमज्वर में लाभदायक है। पित्त विकार के रोगी को नहीं देनी चाहिए। मात्रा—½ से ¼ र० तक।

**सौवीरांजन भस्म (फा. वि.)**— खूनी अर्श, पुराना सुज़ाक, नकसीर और रक्तपित्त में लाभदायक है। मात्रा—४ से ८ र० तक।

**हरताल वर्की भस्म (फा. वि.)**— ज्वर, वातरक्त, कुष्ठ, वातविकार तथा अन्य कफ और वात के रोगो में अतीव लाभदायक है। मात्रा ¼ से ½ र० तक।

**हिंगुल भस्म (फा. वि.)**— यह फार्मेसी के विशेष योग से तैयार की गई है। नपुंसकता, शारीरिक दौर्वल्य, प्रमेह में अत्यन्त लाभ प्रद है। मात्रा—१ र०।

**त्रिवंग भस्म(आ. प्र.)**—वहुमूत्र, मधुमेह, प्रमेह, अनेक प्रकार के वीर्य दोष, प्रदर और गर्भाशय दोषों का नाश करने की अत्युत्तम औषधि हैं। मात्रा—१ से २ र० तक

---

नोट—मंगलमय मणियों, रत्नों वा पाषाणों की भस्में वा पिष्टियें हृदय रोगों में अपूर्व लाभ करती हैं। हृदय को बल मिलता है। नाड़ी स्थिरता से चलती है। सन्तत ज्वर क्षयादि में तापमान कम हो जाता है। रोगी शक्ति अनुभव करता है। मात्रानुसार मधु, मक्खन, मुरब्बा सेब या मुरब्बा आमला में मिला कर दिन में २—३ बार चटा दें।

# रस रसायनों की विशेषता

जिन जिन रस-रसायनों में स्वर्ण का विधान है, हम उनमें स्वर्ण-भस्म ही मिलाते हैं सोने के वर्क नहीं। अनेक औषधि निर्माता सोने के वर्क मिलाते हैं, जिन से कोई विशेष लाभ नहीं होता। काशी के रसायनाचार्य स्वर्गीय श्री श्याम सुन्दराचार्य ने यह प्रत्यक्ष प्रमाणों द्वारा सिद्ध कर दिया था कि सोने या चांदी के वर्क कच्चे धातु रूप में होने के कारण शरीर में सात्म्य नहीं हो पाते और विना किसी प्रभाव के मल द्वारा शरीर से बाहिर निकल जाते हैं। अतएव जिन रसों में स्वर्ण विधान है उनमें स्वर्ण भस्म ही प्रयोग में लानी चाहिये।

स्वर्ण, मुक्ता (मोती), संखिया, मीठा तेलिया, कुचला, अफीम, हरताल घटित रस रसायनों का उनके नाम के साथ स्पष्ट निर्देश कर दिया गया है। ताकि वैद्य बन्धु उनके प्रयोग में सावधानी वर्त सकें।

अफीम वाली औषधियों में भारत सरकार के परमिट से प्राप्त की हुई सौ फ़ीसदी शुद्ध अफ़ीम इस्तेमाल की जानी चाहिये। बाज़ारी ठेके की अफीम मिलावट की और पूर्ण शुद्ध नहीं होती। पटियाला फार्मेसी अपनी औषधियों में कभी बाज़ारी अफीम नही मिलाती।
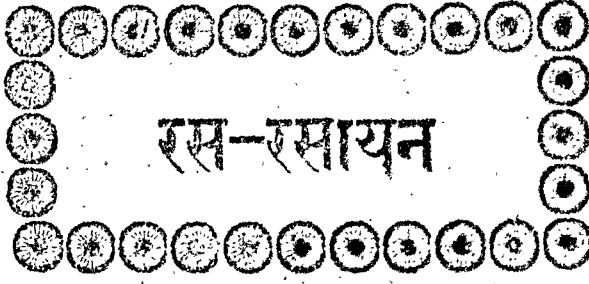
रस पारद को कहते हैं। जिन जिन औषधियों में पारद या पारद के खनिज द्रव्य शिंगरफ को मिलाया जाता है उन सब को रस प्रकरण में लिया जाता है और उन की रसायन संज्ञा होती है। रसायन के तीन विभाग हैं। कूपीपक्व रसायन, रस और पर्पटी। पारद घटित औषधियाँ बहुत अधिक समय तक गुण युक्त रहती हैं और थोड़ी मात्रा में ही शीघ्र लाभ पहुंचाती हैं।

## कूपीपक्व–रसायन

**स्वर्ण घटित चन्द्रोदय मकरध्वज (षड् गुण बलिजारित)**—यह आयुर्वेद की ख्याति प्राप्त रसायन है। रोगी की नाड़ी शिथिल होने पर तत्काल लाभ दिखाती है। धातुक्षय, दुर्बलता, हृदय रोग, यक्ष्मा आदि अनेक कठिन रोगों में पूरा लाभ करती है। मात्रा—रोगी के बलाबल के अनुसार ½ से १ र० तक।

**ताम्र सिन्दूर**—कफ के प्रकोप से उत्पन्न कास, हृदय रोग, रक्ताल्पता और पाण्डु में लाभदायक है। मात्रा—½ से २ र० तक।

**ताल सिन्दूर (र० सा० सं०)**—यह विशेष रूपसे रक्तशोधक है, कीटाणुओं का नाश करता है। कफ रोग और दुर्बलता को दूर करता है। मात्रा—½ से २ र० तक।

**नाग सिन्दूर**—वीर्य की कमी, धातु का पतलापन, प्रमेह और नपुंसकता में अत्यन्त लाभदायक रसायन है। मात्रा—१ र०।

**वंग सिन्दूर**—प्रमेह में लाभदायक है।

**पूर्ण चन्द्रोदय**—यह रसायन अत्यन्त पौष्टिक और वाजीकर है। हृदय को बल देने वाली और योगवाही है। राजयक्ष्मा, शरीरिक दुर्बलता, नपुंसकता, धातुक्षय, जीर्ण ज्वर आदि अनेक रोगों में लाभ करती है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**सिद्ध मकरध्वज (स्वर्ण युक्त पिसा हुआ)**—यह श्रेष्ठ रसायन संयोगवाही है। इसके सेवन से सभी रोगों में लाभ होता है। छूटती हुई नाड़ी को यह तुरन्त बल देता है। निर्बलता, धातुक्षय, नपुंसकता, हृदय की कमजोरी, दिमागी कमज़ोरी, वात संस्थान की अशक्ति में खूब अच्छा लाभ करता है। मात्रा—१/२ से २ र० तक।

**मल्ल सिन्दूर (र० सा० सं०)**—श्वास, खांसी, सन्निपात, उन्माद, अपस्मार में लाभदायक है। आमवात तथा अन्यवात रोगों विसूचिका, प्रमेह और कफ़ रोगों को नाश करता है। मात्रा—१/८ से १/२ र० तक।

**रजत सिन्दूर**—धातु दौर्बल्य, मस्तिष्क और हृदय की दुर्बलता, ग्रहणी, प्रमेह और स्त्री रोगों में लाभदायक है। मात्रा—१/२ से २ र० तक।

**रस सिन्दूर द्विगुण (र० क०)**—नपुंसकता, धातुक्षय, हृदय के रोग, यक्ष्मा कास, श्वास, वात रोग, उदररोग, जीर्ण ज्वर आदि अनेक रोगों में लाभकारी है। यह स्वर्ण रहित मकरध्वज है। मकरध्वज के समान ही संयोग वाही है। मात्रा—१/२ से २ र० तक।

**रस सिन्दूर (र० क०) (षड्गुण बलिजारत)**—साधारण रस सिन्दूर से यह अधिक प्रभावकारी है। मात्रा—१/२ से १ र० तक।

**व्याधिहरण रसायन**—यह पुराने उपदंश की उत्तम औषधि है, तथा रक्तदोष, वातरक्त, कुष्ठ, नासाव्रण, अस्थिशोष आदि समस्त उपद्रवों को हरता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**शिला सिन्दूर (र० रा० सु०)**—यह रसायन श्वास, कास, विषम ज्वर, रक्त विकार, चर्म रोग, कण्ठमाला आदि में अत्यन्त लाभ करता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**समीर पन्नग रस (र. च.)**—यह त्रिदोषहर रसायन है। इसमें संखिया हरताल और मनः शिला तीनों मिलते हैं अतः यह किञ्चित उग्र है। कठिन और प्राण हारी रोगों में आशातीत लाभ दिखाता है। अधरंग, लकवा, सन्निपात, नासूर, भगंदर, श्वास, रक्त विकार में लाभदायक है। मात्रा—१/२ से २ र० तक।

**स्वर्ण बंग (र. रा. सु.)**—पुराने सुजाक (पूयमेह) में इस रसायन का अच्छा असर होता है और साथ ही प्रमेह, धातुक्षय, स्वप्न दोष, मूत्रकृच्छ्र में खूब लाभ करती है। मात्रा—२ से ४ र० तक।
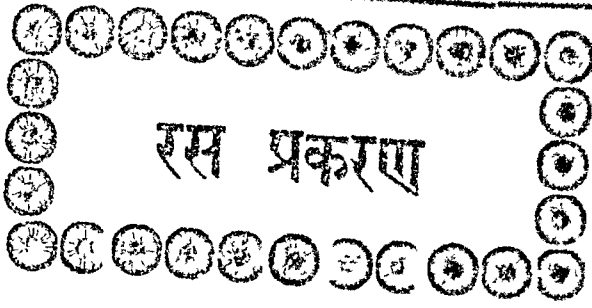
रसों को खरलीय रसायन भी कहा जाता है क्योंकि इन्हें खरल में घोटा जाता है। पारद युक्त औषधि को जितने अधिक परिमाण में खरल किया जाता है उतने ही पारद के परमाणु सूक्ष्म होते हैं फलतः लाभ भी उतनी शीघ्रता से होता है। यन्त्रों द्वारा खरल की घुटाई होने के कारण जितनी अधिक परिमाण में घुटाई होती है उतनी घुटाई कदाचित् हाथ से नहीं होती। काष्ठौषधियां यथा सम्भव ताजी उत्तम डालनी चाहियें। इन विशेषताओं के कारण रस शीघ्र और उत्तम प्रभाव दिखाते हैं।

**अगस्ति सूतराज रस (वृ. यो.)**—यह रस विशेष रूप से शमक और वेदना नाशक है। साथ ही आमातिसार, पक्वातिसार, ग्रहणी और उदर शूल में लाभदायक हैं। मात्रा—१ से २ गोली।

**अग्नि रस (र. र. स.**—खांसी, श्वास, उरःक्षत, यक्ष्मा में अच्छा लाभ करता है। खांसी के साथ रक्त आने की दशा में अत्यन्त उपयोगी है। मात्रा ४ से ६ र०।

**अग्नि सुतू रस (यो. र.)**—इसके सेवन से अग्निमान्ध का शीघ्र ही नाश हो जाता है। उचित अनुपान के साथ देने से यह शोथ ज्वर, अरुचि गुल्म और अर्श बवासीर में लाभदायक है। मात्रा—४ र०।

**अग्नि तुण्डी रस (भै. र.)**—इस रसायन में वत्सनाभ और कुचला पड़ता है। यह रस मन्दाग्नि, उदरशूल, अतिसार, अजीर्ण, वातरोगों में अत्यन्त लाभदायक है। मात्रा—१-१ गोली।

**अग्नि कुमार रस बृहत् (र. से. स.)**—इसमें मीठा तेलिया विष मिलाया जाता है। वात और कफ़ प्रधान अजीर्ण, विसूचिका, पेट का दर्द, मन्दाग्नि में यह रस अत्यन्त सफलता पूर्वक प्रयोग किया जाता है। मात्रा—१—३ गोली तक।

**अग्नि मुख रस (वि. र.)**—इस रस में मीठा तेलिया मिलाया जाता है। अजीर्ण, उदर शूल, अजीर्ण से उत्पन्न ज्वर, वमन में इसका अच्छा उपयोग होता है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**अजीर्ण कण्टक रस (भै. र.)**—इस रस में भी मीठा तेलिया पड़ता है। गुण अग्नि मुख रस के समान ही हैं। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**अमीर रस (वै. जी.)**—यह रस उपदंश में विशेष रूप से उपयोगी है। उपदंश की किसी भी अवस्था में एवं उपदंश जन्य वातरक्त, गठिया में लाभदायक है। मात्रा ½ से १ र० तक।

**अश्वकंचुकी रस (वै. सा. सं.)**—इस रस में विशेष रूप से मीठा तेलिया और जमाल गोटा मिलाया जाता है अतः अजीर्ण, गुल्म, बद्धकोष्ट, ज्वर में लाभ करता है। मात्रा—१ से ४ र० तक।

**अर्श कुठार रस (र. रा. सु.)**—इस रसायन के सेवन से अर्श में अच्छा लाभ होता है। दस्त साफ होता है। मस्सों की पीड़ा जाती रहती है। मात्रा—२ र० से १ माशा तक।

**अश्विनी कुमार रस (अनु. त.)**—पित्त प्रधान ज्वर, मैलेरिया, विषम ज्वर, उदरवायु, मूत्रकृच्छ, उदर शूल, और अतिसार में अत्यन्त उपयोगी है। मात्रा—१ र० से २ र० तक।

**अम्लपित्तान्तक रस (र. रा. सु.)**—अम्लपित्त, वमन, हृदय दाह में बहुत लाभ करता है। मात्रा—१ मा०।

**आनन्द भैरव रस (लाल) (रसेन्द्र)** (ज्वरातिसारे)-इसके सेवन से अतिसार मरोड़, पेचिश, ज्वर युक्त अतिसार, उदर शूल और अजीर्ण सम्पूर्ण रूप से दूर होते हैं। मात्रा—१ से २ र० तक।

**आनन्द भैरव रस (काला) (र. रा. सु.)** (कास अधिकार)—खांसी, श्वास, जुकाम, नजला तथा कास युक्त ज्वर में इस रसायन का अच्छा उपयोग होता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**आमवातारि रस (वटी)(भै. र.)**—जोड़ों का दर्द, ज्वर, गठिया, आदि वायु रोगों में इसके सेवन से अच्छा लाभ होता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**आरोग्य वर्धिनी (वटी) (र. र. स.)**—अजीर्ण, पुराना व नया कब्ज, मालावरोध से होने वाला ज्वर, उपद्रव स्वरूप अन्य उदर विकारों में लाभ

करती है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

अमृतार्णव रस (र. र.) (आमाशय रोगे) मीठा तेलिया युक्त—इसके प्रयोग से विषमज्वर तथा आमशयोत्थ रोग नष्ट होते हैं। मात्रा— १ र०।

इच्छा भेदी रस (रसेन्द्र)—इस रस में जयपाल मिलाया जाता है। मलावरोध कब्ज से उत्पन्न ज्वर मे लाभदायक है। यह तीव्र विरेचक औषधि है। मात्रा—१ से २ र० तक।

उन्माद गज केसरी (यो. र.)—यह रस उन्माद, अपस्मार, भूतोन्माद और ज्वर आदि की दूर करता है। मात्रा—१ से ४ रत्ती तक दिन में दो बार मक्खन, मिश्री के साथ दें।

उन्मत्त रस (र. सं. क.)—सन्निपात ज्वर, उन्माद आदि में बेहोशी की अवस्था में इसका नस्य देने से फायदा होता है।

उपदंश सूर्य (र.चं.) (संखिया युक्त) यह रस उपदंश रोग को जलाने में सूर्य के समान तेजस्वी है। मात्रा—१ से २ दो गोली प्रातः घी के साथ निगल जाये। मिर्च, तेल व खटाई का परहेज रखें। घी अधिक लें।

उन्माद गजांकुश रस—त्रिदोष जन्य उन्माद (पागलपन) अपस्मार में विशेष रूप से लाभदायक है। मात्रा—१ से २ र० तक।

एकांग वीर रस (र. रा. सु.)—आधे अंग की वात, पक्षाघात आर्दित वायु, गृध्रसी वात आदि वात विकारों में श्रेष्ठ लाभ करता है। मात्रा—१ से ४ र० तक।

कफ कुठार रस (र. रा. सु.)—अद्रक रस के साथ देने से दारुण सन्निपात, नाना तरह की खांसी और शिरोरोग में लाभदायक है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

कलातरु रस (भा.प्र.) मीठा तेलिया युक्त-कफ, वातज्वर में उपयोगी है। इसकी नस्य से शिरपीड़ा, ज्वरातिसार, ग्रहणी में फायदा होता है। मात्रा—१ गोली से ३ गोली तक।

काञ्चनाभ्र रस (र. र.) (राजयक्ष्मा)—स्वर्ण मुक्ता युक्त—उपद्रव युक्त क्षय, खाँसी, कफ में लाभदायक है। कांचन के समान कांति और कामदेव के समान कमनीय शरीर हो जाता है। मात्रा—२ र०।

कास केसरी रस (वृ. नि. र.) मीठा तेलिया युक्त—अभ्रक के

रस के साथ सेवन करने से खांसी और श्वास में लाभदायक है। मात्रा—१ र०।

**कनक सुन्दर रस (रसेन्द्र)**—इस रस में वत्सनाभ मिलाया जाता है। अतिसार, संग्रहणी, ज्वरातिसार, तथा उदर शूल में इसका अच्छा उपयोग होता है। मात्रा—½ से १ र० तक।

**कफ केतु रस (रसेन्द्र)**—इस रस में भी वत्सनाभ पड़ता है। खांसी, श्वास, कफ़ के विकार, कब्ज, सन्निपात, और न्यूमोनिया में अच्छा लाभ करता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**कफ चिंतामणि रस (रसेन्द्र)**—इसके सेवन से समस्त वात और कफ़के रोग तथा द्वन्दज़ सन्निपात में अच्छा लाभ होता है। मात्रा—१ से ३ र० तक

**कपूर रस (भै. र.)**—इसे कपूर वटी भी कहते हैं। अतिसार, ग्रहणी, पेचिश, प्रवाहिका, में इसका अच्छा उपयोग होता है। इस रस में आफू मिलाई जाती है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**कस्तूरी भैरव रस बृहत् (भै. र.)**—यह रसायन कस्तूरी तथा मीठा तेलिया युक्त है। तीव्र वायु वेग, सन्निपात प्रलाप, अनिन्द्रा और नाड़ी शैथिल्य में तुरन्त लाभ करता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**कस्तूरी भूषण रस (भै. र.)** श्वास, कास, यक्ष्मा, निर्बलता और नाड़ी की शिथिलता में इस रसायन का अच्छा उपयोग होता है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**कामिनी विद्रावण रस (भै. र.)**—अत्यन्त स्तम्भक तथा वाजीकर है। मात्रा—१ से २ र० तक

**काम दुधा रस (मोती रहित) (र. सा. स.)** रक्तपित्त, उरः क्षत अम्लपित्त हृदय दाह आदि पित्त विकारों में इस रसायन से पूर्ण लाभ होता है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**काम दुधा रस—(मुक्ता युक्त)**—यह मोती रहित रस से अधिक गुणकारी है तथा इसका प्रभाव सन्निपात आदि में विशेष शामक होता है। मात्रा—१ से ३ र० तक

**कुमार कल्याण रस (भै. र.)**—यह रसायन स्वर्ण युक्त है और बालकों के ज्वर, अतिसार, कास और निर्बलता में पूर्ण लाभदायक है। मात्रा—½ से ¼ र०

कृमि कुठार रस (यो. र.)—उदर कृमियों का नाश करने की श्रेष्ठ औषधि है। मात्रा १ से ३ र० तक।

काम धेनु रस (भै. र.)—प्रमेह, शुक्रमेह, नपुंसकता, शीघ्रपतन, कामशैथिल्य को दूर कर कामशक्ति बढ़ाता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

कास श्वास विधूनन रस (बृ. नि. र.)—कास, श्वास तथा कफ रोगों में लाभदायक है। मात्रा—४ के ८ र० तक।

कासहर योग (फा. वि.)—यह औषधि विशेष योग से हमारी फार्मेसी में तैयार की गई है और बच्चों की काली खांसी में विशेष लाभदायक है। मात्रा—२ र०।

कालारि रस (यो. र.)—इस रसायन में मीठा तेलिया मिलाया जाता है। सन्निपात, प्रलाप, श्वास, कास और हिक्का में लाभदायक है। वात कफ नाशक है। मात्रा—१ से २ र० तक।

कालकूट रस (वै. चि.)—मीठा तेलिया और हरताल मिलाई जाती है। यह सब प्रकार के सन्निपात, प्रलाप और मूर्च्छा में लाभ करता है। मात्रा—$\frac{1}{4}$ से $\frac{1}{2}$ र०।

कीट मर्द रस (र. र. स.)—इसमें कुचला मिलाया जाता है। यह उत्तम कृमिनाशक है। मात्रा—१ से ३ मा० तक।

कुष्ठ भैरव (कुष्ठ दलन) रस (र. र. स.)—इसके सेवन से कुष्ठ और वातरक्त नाश होता है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

कुष्ठ कुठार रस (र. र. स.)—कुष्ठ की प्रारम्भिक अवस्था में प्रयोग कराने से रोग को रोकता है। मात्रा—२ र० से १ मा० तक।

कृमि मुद्गर रस—यह रस कुचला युक्त है उदर कृमियों का नाश का आंतों को शक्ति देता है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

क्रव्याद् रस बृहत (र. रा. सु.)—अजीर्ण, गुल्म, प्लीहा का नाश कर क्षुधा दीप्त करता है। मात्रा २ से ६ र० तक।

केशरादि वटी (फा. वि.)—यह फार्मेसी का विशिष्ट योग है। उपदंश, वातरक्त तथा अन्य रक्त दोषों को दूर करता है। मात्रा—$\frac{1}{2}$ से १ तक।

गोरोचन मिश्रण (फा. वि.) चेचक बड़ी या छोटी माता, बच्चों के न्यमोनिया में लाभदायक। मात्रा—$\frac{1}{2}$ र० तुलसी स्वरस या मधु के साथ दें।

**गंगाधर रस (र. रा. सु.)**—(अहिफेनयुक्त) पतले दस्त, ग्रहणी, प्रवाहिका में इसके सेवन से खूब लाभ होता है। मात्रा—½ से १ र० तक।

**गण्डमाला कण्डु रस (यो. र.)**—यह रसायन ग्रंथियों के क्षय (कण्ठमाला) गल गण्ड और अपची में श्रेष्ठ फल दिखाती है। मात्रा—२ से ८ र० तक।

**गन्धक रसायन (र. से. स.)**—अशुद्ध पारद के विकार, दाद, खाज, एग्जिमा, खुजली तथा अन्य अनेक चर्म रोगों की श्रेष्ठ औषधि है। मात्रा—२ से ६ र० तक।

**गर्भ पाल रस (र. चं.)**—गर्भपात तथा गर्भावस्था की अरुचि, वमन में लाभकारी हैं। मात्रा—१ से २ र० तक।

**गर्भ विनोद रस (र. से. सं.)**—गर्भकाल में गर्भिणी की पुष्टि के लिये श्रेष्ठ रसायन है। मात्रा—½ से १ र० तक

**गर्भ चिन्तामणि रस (भै. र.)**—गर्भ कालीन ज्वर, अजीर्ण आदि में लाभदायक है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**गुल्म कालानल रस (भै. र.)**—विद्रधी, वायु गुल्म तथा अन्य गुल्मों में पूर्ण लाभदायक है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**ग्रहणी कपाट रस (र. रा. सु.)**—इस रसायन में मीठा तेलिया और अफीम मिलती है। शूल, अतिसार, संग्रहणी, पुरानी पेचिश और मरोड़ तथा हैज़े में अच्छा लाभ होता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**ग्रहणी गज केसरी (र. चं.)**—(अहिफेन युक्त) उदर शूल, संग्रहणी, अतिसार, आमातिसार, रक्तातिसार और मरोड़ में इसका सेवन श्रेष्ठ फल देता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**गुल्म कुठार रस (भां. भै. र. १५७१) मीठा तेलिया युक्त**—अद्रक के साथ सेवन करने से सर्व प्रकार के गुल्म रोग नष्ट होते हैं। मात्रा—१ र०।

**चन्द्र प्रभा वटी (शा. ध.)**—(लौह, शिलाजीत युक्त) प्रमेह, धातुक्षय मूत्रकृच्छ्र, निर्बलता बहुमूत्र, स्वप्नदोष, आदि अनेक रोगों में लाभदायक है। मात्रा—२ गोली से ४ गोली तक।

**चन्द्र कला रस (भै. र.)**—रक्तपित्त, दाह, वमन, प्रमेह व जीर्ण ज्वर में उपयोगी है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**चन्द्रामृत रस (भै. र.)**—श्वास तथा सब प्रकार की खांसी में खूब लाभ करता है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**चिन्तामणि रस (भै. र.)**—(सस्वर्ण) हृदय रोग, प्रमेह एवं कास श्वास में विशेष उपयोगी है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**चिन्तामणि चतुर्मुख रस (स्वर्ण युक्त) (भै. र.)**—न्यूमोनिया, सन्निपात, अपस्मार, मूर्च्छा, यक्ष्मा एवं प्रसूत ज्वर में इस के उपयोग में विशेष लाभ होता है। मात्रा - १ से २ र० तक।

**चौंसठ प्रहरी पीपल**—यह औषधी पारद युक्त न होते हुये भी रस के समान ही उपयोगी कार्य करती है। जीर्ण ज्वर और कफ की खांसी में श्रेष्ठ है। मात्रा—१ से ४ र० तक।

**चन्द्र शेखर रस (भै. र.)**—बालकों के सब प्रकार के रोग ज्वर, सन्निपात, खांसी, अतिसार, बच्चों को न्यूमोनिया में लाभकारी है। मात्रा—½ से १ गोली तक पानी या माता के दूध के साथ।

**श्री जय मंगल रस (भै. र.)**—(स्वर्ण घटित) जीर्ण ज्वर तथा अनेक प्रकार के हठीले ज्वरों की श्रेष्ठ औषधि है। मात्रा—½ से १ र० तक।

**जलोदरारि रस (वृ. यो. त.)**—इस रस में जयपाल (जमाल गोटा) मिलाया जाता है। जलोदर तथा उदर शोथ में लाभदायक है।

मात्रा—१ से २ र० तक।

**ज्वरघ्नी वटी (र. र. सु. स.)**—सब प्रकार के नवीन ज्वरों में अच्छा लाभ करती है। मात्रा—१ से २ वटी तक।

**ज्वर मुरारि रस (भै. र.)**—इस रस मे मीठा तेलिया सम्मिलित होता है। अजीर्ण से उत्पन्न हुआ ज्वर, विषम ज्वर व बद्ध कोष्ठ मे लाभदायक है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**जीर्ण ज्वरारि रस**—(फार्मेसी विधि)—पुराने मलेरिया ज्वर में अति

लाभदायक है। मात्रा—३ र०।

**ज्वरारि अभ्र (भै. र.)**—इस रस में मीठा तेलिया भी शामिल किया जाता है। जीर्ण ज्वर, धातु गत ज्वर, यकृत्, प्लीहा विकार और यक्ष्मा में अत्यन्त लाभदायक प्रमाणित होता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**ज्वरांकुश रस (स्वर्ण क्षीरी वाला) (शा. ध.)**—इस में भी मीठा तेलिया मिलाया जाता है। मलेरिया, विषम ज्वर, फ़सली बुखार, एकतरा, तिजारी और चौथिया की श्रेष्ठ औषधि है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**जयमंगल रस (सादा) स्वर्ण रहित**—श्री जय मंगल रस से गुणों में न्यून है।

**ज्वर धूम केतु रस (र. सा. सं.)**—१ गोली अद्रक के रस के साथ देने से नवीन ज्वर नष्ट होता है।

**ज्वर केसरी रस (भै. र.) मीठा तेलिया युक्त**—पित्त ज्वर, सन्निपात ज्वर, दाह युक्त ज्वर में अनुपान भेद से दिया जाता है। मात्रा—१ रत्ती।

**जातिफलादि ग्रहणी कपाट रस (र. सा. सं.)**—शूल सहित ग्रहणी तथा अतिसारादि रोगों में प्रयुक्त करना चाहिये। मात्रा—२ रत्ती।

**जीर्ण ज्वरांकुश रस (यो. र.) मीठा तेलिया युक्त**—जीर्ण ज्वर, क्षय, अग्नि मांद्य, खांसी, पाण्डू, गुल्म, उदर रोग, लकवा में लाभदायक है।

मात्रा—२ से ३ र० तक।

**दुर्जल जेता रस (र. चं.) मीठा तेलिया युक्त**—यह रस दुष्ट जलवायु जनित ज्वर, जुकाम सहित ज्वर, शीत ज्वर, अजीर्ण, आमवृद्धि, शूल, कास आदि के लिये अति हितकर है। मात्रा - १-२ गोली दिन में २ बार पानी के साथ दें।

**दन्तोद्भेदगदान्तक रस (भै. र.)**—यह रस विशेष रूप से बच्चों के दांत निकलने के समय के कष्टों में लाभ करता है। खिलाने के अतिरिक्त मसूढ़ों पर मालिश भी किया जाता है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**नारायण ज्वरांकुश रस (यो. र.)**—इस रस में संखिया, मीठा

तेलिया और हरताल मिलाये जाते हैं। अनेक प्रकार के कठिन ज्वरों में इसके सेवन से विशेष लाभ होता है।। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**नागार्जुनाभ्र रस (र. चं.)**—हृदय के अनेक रोगों में इसके सेवन से विशेष लाभ होता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**नाराच रस (र. से. सं.) (जमाल गोटा युक्त)**—पुराने और कठिन कब्ज़ को दूर करता है। मात्रा— १ से २ र० तक।

**नित्यानन्द रस (हरताल युक्त) (भै. र.)**—यह फील पांव (श्लीपद), अण्डकोष वृद्धि, अर्बुद एवं कण्ठ माला में अच्छा लाभ करता है।
मात्रा - १ से २ र० तक।

**नित्योदित रस (मीठा तेलिया युक्त) (र. से. सं.)**—रक्तार्श एवं वातार्श दोनों में अति उपयोगी है। मात्रा - १ से २ र० तक।

**नृपति वल्लभ रस (र. रा. सु.)**—अनुपान भेद से त्रिदोषों से उत्पन्न रोगों का नाश करता है। मात्रा - २ से ४ र० तक।

**नष्टपुष्पांतक रस (र. चं.) (स्त्री रोगे) चांदी भस्म युक्त**—यह गोलियां नष्ट पुष्पता (रजोलोप) योनिदाह, योनिक्लेद इत्यादि विकारों में उपयोगी हैं। मात्रा—१ से २ गोली गरम पानी के साथ।

**पञ्चवक्त्र रस (र. से. सं.)**—इस में मीठा तेलिया भी सम्मिलित किया जाता है। वायु और कफ़ से उत्पन्न ज्वर, सन्निपात, सर्वांग वेदना में लाभकारी है। मात्रा - १ से २ र० तक।

**पाशुपत रस (यो. र.)**—शूल, अतिसार, मन्दाग्नि, अर्श, अजीर्ण में अति उपयोगी है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**पीयूषवल्ली रस (भै. र.)**—संग्रहणी, अतिसार, उदर शूल, अजीर्ण में लाभकारी है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**प्लीहारी रस (मीठा तेलिया मिश्रित) (फा. वि.)**—प्लीहावृद्धि प्लीहा युक्त विषम ज्वर, पाण्डु और शोथ में लाभकारी हैं।
मात्रा—१ से २ र० तक।

शुद्ध शास्त्रीय औषधियों के लिये

**पुष्प धन्वा रस (भै. र.)**—शुक्र विकार, स्वप्नदोष, नपुंसकता, निर्बलता को दूर कर के शरीर के बल, वर्ण को बढ़ाता है।

मात्रा—१ से २ रत्ती तक।

**पूर्ण चन्द्र रस बृहत् (र. से. सं.)**—यह रस अत्यन्त वीर्य-वर्धक और कामोद्दीपक है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**प्रताप लंकेश्वर रस (बृ. यो.)**—यह वत्सनाभ युक्त रस है। प्रसूता के ज्वर, गुल्म, सन्निपात आदि अनेक प्रसूति रोगों में लाभ करता है।

मात्रा—३ से ६ र० तक।

**प्रदरान्तक रस (र. से. सं.)**—लाल, पीला, नीला या सफैद प्रदर, गर्भाशय की सूजन में अच्छा लाभ दिखाता है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**प्रदर रिपु रस (र. से. सं.)**—यह भी उपरोक्त रस के समान ही गुणकारी है किन्तु सौम्य होने के कारण कोमल स्त्रियों को माफ़िक आता है।

मात्रा—२ से ४ र० तक।

**प्रवाल पञ्चामृत नं० १ (यो. र.) (मुक्तायुक्त)**—यह रस अजीर्ण, अम्लपित्त, छाती की जलन, श्वास, कास, प्रमेह और हृदय दौर्बल्य एवं अशक्ति में लाभ करता है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**प्रवाल पञ्चामृत नं० २ (यो. र.) (मोती रहित)**—इस के गुण मोती न होने के कारण कुछ न्यून हो जाते हैं। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**बंगेश्वर रस (सादा) (भै. र.)**—यह रसायन सब प्रकार के प्रमेहों का नाश कर वीर्य को बढ़ाता है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**बंगेश्वर रस बृहत् (भै. र.) (स्वर्ण, मोती और रजत युक्त)**—इस का प्रभाव बंगेश्वर से कई गुणा अधिक होता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**बाल रस (र. रा. सु.)**—छोटे बच्चों की खांसी और पसली चलने में अत्यन्त लाभ करता है। मात्रा—½ र० से १ र० तक।

**बोल बद्ध रस (बृ. यो. त.)**—रक्तपित्त, खूनी अर्श, रक्त प्रदर में विशेष लाभकारी है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**बाल ज्वरहर चन्द्रशेखर रस**—चन्द्रशेखर रस में देखें।

**भुवनेश्वर रस (र. चं.)**—उदर शूल, मरोड़, आंव, खून के दस्त, संग्रहणी और अतिसार में लाभदायक है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**भूत भैरव रस (भा. प्र.)**—शीत ज्वर और विषम ज्वर में लाभदायक है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**मन्मथाभ्र रस (र. से. सं.)**—यह रसायन वीर्य वर्धक, कामोद्दीपक और स्तम्भक है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**महा ज्वरांकुश रस (मीठा तेलिया और जमालगोटा मिश्रित) (र. से. सं.)**—नवीन ज्वर, अजीर्ण, बद्धकोष्ठ तथा अन्य उदर विकारों में लाभकारी है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**मधुमालिनी बसन्त (र. तं. सा.)**—यह रस बच्चों तथा स्त्रियों के लिये बृहत् बल्य, ओजोवृद्धिकर है। इस के सेवन से शरीर बलवान् कान्तिमान होता है। बच्चों के अस्थि वक्रता में विशेष लाभदायक है।

मात्रा—१–२ गोली मिश्री, घृत या दूध के साथ दें। बालकों के अस्थि रोग में मण्डूर भस्म और शृंग भस्म के साथ दें।

**मृत्युञ्जय रस (भै. र.)**—इस रस में मीठा तेलिया मिलाया जाता है। यह ज्वर की प्रसिद्ध औषधि है। विषम ज्वर (मैलेरिया), कफ़ ज्वर इसके सेवन से नष्ट होते हैं। मात्रा—१ से २ र० तक

**मृगांक रस (स्वर्ण युक्त) (शा. ध.)**—यह रसायन राजयक्ष्मा की अपूर्व औषधि है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**महागन्धकम (भै. र.)**—इसके सेवन से ज्वर नष्ट होता है। अग्निदीप्त होती है। संग्रहणी, प्रवाहिका, सूतिका रोग, अतिसार, बच्चों के हरे, पतले दस्त आदि रोग अच्छे होते है। मात्रा—४ रत्ती।

**महामृत्युञ्जय रस (र. रा. सं.)**—मैलेरिया और चढ़े ज्वर में इसका प्रयोग किया जाता है। मात्रा—१ गोली।

**महाराजनृपतिवल्लभ रस (स्वर्ण युक्त) (भै. र.) (भा. भै. र. ५५६५)**—इसके सेवन से अफ़ारा, संग्रहणी, कृमिरोग, पाण्डु, अमलपित्त, आदि में विशेष लाभ होता है।

**महावातविध्वांसन रस (मीठा तेलिया युक्त) (र. चं.)**—वातरोग, यक्ष्मा, लकवा, अपस्मार, गर्भाशय दोष, आमवात की सफल औषधि है।

मात्रा—१–२ गोली अद्रक रस के साथ दें।

**मृत संजीवनी रस (मीठा तेलिया युक्त) (भै. र.)**—आंत्रिक सन्निपात शीत पूर्वक ज्वर, दाहयुक्त ज्वर, विषम ज्वर, संतत ज्वर में विशेष लाभदायक है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**योगेन्द्र रस (स्वर्ण युक्त) (र. चि.)**—यह रसायन राजयक्ष्मा और हृदय की दुर्बलता, अपस्मार, उन्माद और शारीरिक अशक्ति में लाभदायक है।

मात्रा—१ से २ र० तक।

**रक्तपित्तान्तक रस (भै. र.)**—यह रस भयंकर रक्त-पित्त में अपूर्व लाभ करता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**रस माणिक्य (हरताल वाला) (र. रा. सु.)**—कुष्ठ, उपदंश से उत्पन्न रक्त विकार और वातरक्त में लाभकारी है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**रस राज रस (स्वर्ण युक्त) (भै. र.)**—पक्षाघात, लकवा, अपतंत्रक आदि कठिन वात विकारों की उत्तम औषधि है। मात्रा—½ से २ र० तक।

**राजवल्लभ रस (भै. र.)**—गुल्म, शूल, आमवात, हृदय शूल, कटिशूल वातरक्त, भगंदर, अतिसार, संग्रहणी, अर्श, प्रवाहिका में लाभदायक है।

मात्रा—१ से २ र० तक।

**राजमृगांक (स्वर्ण युक्त) (शा. ध.)**—फेफड़ों तथा आंतों के क्षय में इसके सेवन से विशेष लाभ होता है। मात्रा—१ से ४ र० तक।

**रामबाण रस (मीठा तेलिया युक्त) (भै. र.)**—अजीर्ण एवं नवीन ज्वर में लाभदायक है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**राजचण्डेश्वर रस (चण्डेश्वर रस) (मीठा तेलिया युक्त)**

(भै. र.)—१ रत्ती की मात्रा में अद्रक के रस के साथ देने से ज्वर नष्ट होता है।
मात्रा—१ रत्ती।

**लघुमालिनी बसन्त**—यह रस स्वर्ण मालती वसन्त से गुणों में थोड़ा न्यून है। मात्रा—१ से ४ र० तक।

**लक्ष्मी नारायण रस (मीठा तेलिया युक्त) (र. चं.)**—ज्वर, न्यूमोनिया, हैज़ा, प्रमेह, सूतिका रोगों में उत्तम लाभ करता है।
मात्रा—१ से २ र० तक।

**लक्ष्मी विलास रस वृहत् (स्वर्ण युक्त) (र. रा. सु.)**—यह स्वर्ण युक्त रसायन कफ़ दोष, फेफड़ों के विकार, पुराने जुकाम और अन्य शिर रोगों के लिये अति उत्तम है। मात्रा—½ से २ र० तक।

**लक्ष्मी विलास रस (वृहत्) नारदीय (र. से. सं.)**—सर्दी और खांसी युक्त ज्वर, जुकाम में यह खूब लाभ करता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**लोक नाथ रस (वृहत्) (शा. ध.)**—अतिसार, ग्रहणी मन्दाग्नि, अरुचि और गुल्म को नाश करने की उत्तम औषधि है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**लीला विलास रस (भा. भै. र ६३६९)**—यह रस अमलपित्त, हृद्दाह (हृदयस्थल पर जलन) शूल को नाश करता है। मात्रा—१ रत्ती गोली।

**विद्याधराभ्र रस वृहत् (भा. भै. र. ७०४७)**—इसकी एक गोली गो दूध या नारियल के पानी के साथ सेवन करने से वातज, पित्तज, कफज, शूल, मंदाग्नि आदि आराम होते हैं।

**वैताल रस (भै. र.)—(मीठा तेलिया हरताल वर्की युक्त)** इसके सेवन से हर प्रकार का सन्निपात ज्वर नष्ट होता है। मात्रा—१ र० तक।

**वसंत तिलक रस (भा. भै. र. ६९७०)**—स्वर्ण मुक्ता, रजत मुक्त—वात व्याधि अपस्मार, विसूचिका, क्षय, उन्माद और प्रमेह में लाभ दायक है।
मात्रा—३ र०।

**वात रक्तांतक रस (भा. भै. र. ६९९०)**—वात रक्त की सभी अवस्थाओं में लाभ दायक है। मात्र—४ र०।

**वातारि रस (भा. भै. र. ७००२)–[मीठा तेलिया युक्त है]** काली मिर्च के चूर्ण, के साथ सेवन करने से समस्त वातंज रोग नष्ट होते हैं। मात्रा—३ र० ।

**वसन्त कुसुमाकर रस (शा. ध.)—[स्वर्ण, मुक्ता, रजत युक्त]** यह अति उत्तम प्रसिद्ध रसायन बहुमूत्र, मधुमेह, राजयक्ष्मा, जीर्ण ज्वर, एवं श्वास कास में श्रेष्ठ लाभकारी है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**वसन्त मालती**—(सस्वर्ण) स्वर्ण वसन्त मालती में देखें।

**वात कुलान्तक रस (भै. र.)—[कस्तूरी युक्त]** इसके सेवन से अपस्मार, मूर्छा, हिस्टीरिया, आक्षेपक, वात व्याधि आदि रोग नष्ट होते हैं।

मात्रा—½ र० से १ र०, मधु के साथ।

**वातविध्वंस रस (वृ. यो. त.)—[मीठा तेलिया युक्त]** सन्निपातिक वायु, प्रलाप, सर्दी से होने वाले विकार, कास श्वास में अति उपयोगी है।

मात्रा—१ से २ र० तक।

**वातराक्षस रस (वृ. यो. त.)—[मीठा तेलिया युक्त]** पक्षाघात, गृध्रसी वायु सन्धिवात आदि में लाभकारी है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**वात गजांकुश रस (र. से. सं.)—[मीठा तेलिया युक्त]** वात रोगों और मेदवृद्धि की श्रेष्ठ औषधि है। मात्रा १ से २ र० तक।

**वात चिन्तामणि रस वृहत् (भै. र.)–[स्वर्ण मुक्ता रजत् युक्त]** विविध प्रकार के वायु रोगों तथा उन्माद, अपस्मार में यह रसायन निश्चित लाभकारी है। वृद्ध तरुण समान हो जाता है। मात्रा—२ र०।

**विश्वतापहरण रस (र. रा. सु.)**—इस रस में कुचला और जमाल गोटा सम्मिलित हैं। विषम ज्वर, सन्निपात ज्वर, कफ़ और वात विकारों में खूब लाभ करता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**विसूचिका विध्वंस रस (भै. र.)–[अफीम और मीठा तेलिया युक्त]** हैजा तथा भयंकर अतिसार की श्रेष्ठ औषधि है। मात्रा—½ से २ र० तक।

**बृहत् श्वास चिन्तामणि रस (र. चं.)– [स्वर्ण मुक्ता युक्त]** कास, श्वास में श्रेष्ठ है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**शूल कुठार रस (भा. भै. र. ७६५२) – (मीठा तेलिया हरताल वर्की युक्त)** इसे अद्रक के रस के साथ सेवन करने से समस्त प्रकार के शूल नष्ट होते हैं। मात्रा—२ र० तक।

**श्वास कुठार रस (र.रा.सु.)—(मीठा तेलिया युक्त)** श्वास, मूर्छा और प्रतिश्याय में लाभ करता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**शिरः शूलाद्रिवज्र रस (भै. र.)**—भयंकर शिरपीड़ा एवं आधा शीश में लाभकारी है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**शीत भंजी रस (भै. र.)**—(जमाल गोटा युक्त) इस के सेवन से जाड़ा लग कर आने वाला मलेरिया बुखार शीघ्र नष्ट होता है। यह दस्तावर है। मात्रा—१ र०, अनुपान–अद्रक रस।

**शीतारि रस (भै. र.)**—( इस रस में जमाल गोटा पड़ता है ) मलावरोध, विषम ज्वर और बारी से आने वाले बुखारों में इस के सेवन से अच्छा लाभ होता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**शूलगज केसरी ताम्र (शा. ध.)**—भयंकर उदर शूल (रीनल कीलिक) गुल्म सौर आध्मान में लाभदायक है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**शोथकालानल रस (भै. र.)**—वृक्क अथवा जिगर से उत्पन्न हुआ शोथ, प्लीहा शोथ, ज्वर युक्त शोथ में लाभकारी है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**शंखोदर रस (यो. र.)**—अतिसार, आमातिसार तथा कालरा, संग्रहणी, प्रवाहिका, पेट में मरोड़, उदर शूल आदि विकार नष्ट होते हैं।
मात्रा—१ से १½ र० तक।

**श्लेष्मकालानल रस (यह रस मीठा तेलिया युक्त है) (र. से. सा. सं.)**—बलग़मी खांसी और दमें में चमत्कार पूर्ण लाभ करता है।
मात्रा—½ से ३ र० तक।

**श्रृङ्गाराभ्र रस (र. से. सं.)**—जीर्ण ज्वर, यक्ष्मा की प्रथमावस्था,

खांसी और निर्बलता में पूरा लाभ दिखाता है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**श्री जयमंगल रस (स्वर्ण घटित रसायन) (भै. र.)**—चाहे किसी भी प्रकार का कठिन ज्वर हो इस के देने से अवश्य लाभ होता है।
मात्रा—१ से २ र० तक।

**सन्निपात भैरव रस (भै. र.)**—सन्निपात अवस्था का प्रलाप, उठकर भागना आदि विकृत चेष्टाओं में लाभ करता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**सर्वांग सुन्दर रस [स्वर्ण घटित रसायन] [र. सं.]**—राजयक्ष्मा, जीर्ण ज्वर, कास, अनिद्रा, निर्बलता में लाभकारी है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**स्मृति सागर रस [हरताल युक्त] [यो. र.]**—उन्माद, अपस्मार, मृगी, निद्रानाश और क्षीण स्मृति में लाभदायक है। मात्रा—½ से १ र० तक।

**सर्वांग सुन्दर रस [अतिसारे]**—अतिसार में विशेष लाभदायक है।
मात्रा—४ रत्ती।

**सर्व ज्वरांकुश रस [भै. र.]**—जमालगोटा युक्त है। इसके सेवन से सन्निपातिक, अन्तर्गत, वहिःस्थ, निराम, साम, आदि समस्त ज्वरों का नाश होता है। मात्रा—२ रत्ती।

**सोमनाथ रस [भै. र.]**—सोम रोग, कष्ट साध्य प्रदर, योनिशूल, बहुमूत्र में लाभदायक है। मात्रा—५ र० से १० र० तक।

**स्वच्छन्द भैरव रस [भै. र.]**—शीत ज्वर, विषम ज्वर, वातकफ ज्वर और अजीर्ण में लाभदायक है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**स्वर्ण वसन्त मालती [स्वर्ण मुक्ता तथा खर्पर युक्त] [भै. र.]**—जीर्ण ज्वर, यक्ष्मा, फुफ्फुस प्रदाह, जीर्ण कास तथा शारीरिक अशक्ति में इस के सेवन से अपूर्व लाभ होता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**स्वर्ण सूतशेखर नं० १ [स्वर्ण तथा मीठा तेलिया युक्त] [नि. र.]**—इस रस के सेवन से अम्लपित्त, वमन, शूल, गुल्म, श्वास, कास, अतिसार, संग्रहणी, सूतिका ज्वर, सन्निपात ज्वर में शीघ्र लाभ होता है।
मात्रा—१ र०। दूध, घी, मधु के अनुपान से रोगानुसार दें।

**सूतशेखर सादा नं० २ [स्वर्ण रहित] [नि. र.]**—स्वर्ण सूतशेखर की अपेक्षा गुणों में अल्प है। मात्रा तथा अनुपान उपरोक्तानुसार।

**सिद्ध प्राणेश्वर रस [र. से. सं.]**—ज्वर युक्त अतिसार, उदर शूल और रक्तातिसार में लाभदायक है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**सुधानिधि रस [यो. र.]**—रक्तपित्त, नकसीर, रक्त प्रदर और रक्तार्श में लाभदायक है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**सूतिकाविनोद रस [भै. र.]**—इस के सेवन से सूतिका ज्वर तथा अन्य प्रसूत रोग दूर हो जाते हैं। मात्रा—१ र०।

**सूतिकाभरण रस (यो. र.)**—यह रस सब प्रकार के सूतिका रोग, विशेषतः धनुर्वात और त्रिदोषज व्याधियों का नाश करता है।

मात्रा—$\frac{१}{४}$ से $\frac{१}{२}$ र० रोगानुसार अनुपान के साथ दें।

**सोमनाथ रस (भै. र.)**—बहुमूत्र तथा स्त्रियों के सोमरोग की प्रसिद्ध दवा है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**हृदयार्णव रस (यो. र.)**—हृदय की धड़कन, हृदय पीड़ा, हृदय की निर्बलता को दूर कर बल बढ़ाता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**हिंगुलेश्वर रस [मीठा तेलिया युक्त] [भै. र.]**—वात ज्वर, नवीन ज्वर और प्रतिश्याय युक्त ज्वर में लाभदायक है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**हुताशन रस [यो. र.]**—श्लेष्मावृद्धि, श्वास, कास, नाना प्रकार के अजीर्ण विकार, अरुचि और उदर शूल में अत्यन्त लाभकारी रसायन है।

मात्रा—२ से ४ र० तक।

**हिरण्य गर्भ पोटली रस [स्वर्ण मोती युक्त] [भा. भै. र. ८६३५]**—अग्निमान्ध्य, ग्रहणी रोग, विषम ज्वर, अर्श, यकृत, प्लीहा विकार में लाभकर है। मात्रा—२ रत्ती।

**हेम गर्भ पोटली रस [स्वर्ण युक्त] [भा. भै. र. ८६५६]**—क्षयरोग की विशिष्ट औषध है। मात्रा—४ रत्ती।

**हेमनाथ रस (स्वर्ण रजत युक्त) (भै. र.)**—उचित अनुपान के

साथ सेवन करने से प्रमेह, मूत्र रोग, सोम रोग, क्षय, श्वास, कास और उरः क्षत में लाभदायक है। मात्रा— ३ रत्ती।

त्रिभुवन कीर्ति रस (मीठा तेलिया युक्त) (यो. र.)—मूर्छा, प्रलाप आदि सन्निपातिक स्थिति में तथा वात कफ ज्वर में लाभ करता है।

मात्रा—१-२ रत्ती।

रसायन कल्प में पर्पटी अपना विशेष महत्व पूर्ण स्थान रखती है। पारद और गन्धक की कज्जली से और उस के साथ अन्य औषधियों को मिलाकर अग्नि संस्कार द्वारा पर्पटी बनाई जाती है। पर्पटी आँतों के विकारों को दूर करने में अत्यन्त उपयोगी है। इसके सेवन से आँतों की दुर्गन्ध और कीटाणुओं का नाश होता है। आँतों का बल और रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है। आँतों के विकारो को दूर करने में पर्पटी अन्य औषधि की अपेक्षा सौम्य, विशेष हितकर और शीघ्र लाभदायक है।

पारद युक्त सब प्रकार की पर्पटी जन्तुनाशक, पाचक, व्रणशोधक, व्रणरोपक तथा शक्ति वर्धक है। पर्पटी के साथ जो अन्य औषधियाँ मिलाई जाती हैं, उनके गुण भी इसमें शामिल हो जाते हैं। अतएव पूर्ण लाभकारी प्रमाणित होती है।

**ताम्र पर्पटी (र. से. सं.)**—यह पर्पटी ग्रहणी, प्लीहावृद्धि, यकृतवृद्धि, वातश्लेष्मिक ज्वर, सन्निपात, वृक्क शूल, वातरक्त, कुष्ठ, शोथ, मन्दाग्नि, अतिसार तथा पाण्डु रोगों में अत्यन्त हितकर है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**पञ्चामृत पर्पटी (र. से. सं.)**—यह रसायन संग्रहणी में अत्यन्त लाभदायक है। यह आम और रक्तयुक्त पेचिश, अतिसार, अग्निमान्द्य, वमन, बवासीर, शोथ, आन्त्रक्षय, पाण्डु, अम्लपित्त आदि में पूर्ण लाभ करती है।

मात्रा—१ से ३ र० तक।

**विजय पर्पटी (स्वर्ण युक्त) (भै. र.)**—कष्ट साध्य ग्रहणी, ग्रहणी शूल, उदर वात, प्रमेह, अतिसार, पुरानी पेचिस की उत्तम औषधि है।

मात्रा—१ से २ र० तक।

**बोल पर्पटी (र. सा. सं.)**—यह पर्पटी बोल बद्ध रस की अपेक्षा

रक्तातिसार, रक्तपित्त, रक्तार्श, रक्त प्रदर, अति आर्तवस्राव आदि रक्त प्रवाह होने वाले रोगों में शीघ्र लाभ पहुंचाती है। मात्रा—१ से ६ र० तक।

**रस पर्पटी (र. रा. सु.)**—संग्रहणी, आँतों के ज़ख्म, आन्त्र शोथ युक्त अतिसार, अपचन, वात रक्त, अर्श आदि रोगों में अच्छा लाभ करती है।

मात्रा—१ से ३ र० तक।

**लौह पर्पटी (र. से. सं.)**—आम खून की पेचिश, अम्ल पित्त, मन्दाग्नि, कमजोरी यकृत और प्लीहा के विकार आदि में अचूक लाभ करती है।

मात्रा—१ से ३ र० तक।

**श्वेत पर्पटी (र. से. सं.)**—यह पर्पटी पारद और गन्धक से रहित है। इस का उपयोग मूत्र रोगों पर होता है। मूत्र में जलन, पूयमेह, पेशाब रुकने पर लाभकारी है। मात्रा—२ से ६ र० तक।

**स्वर्ण पर्पटी (र. रा. सु.)**—यह पर्पटी विशेष रूप से बलवर्धक है। संग्रहनी, अतिसार, आन्त्रिक क्षय, रक्ताल्पता, अपस्मार तथा शारीरिक निर्बलता में शीघ्र लाभकारी है। पर्पटी कल्प में स्वर्ण पर्पटी अत्यन्त महत्व पूर्ण और अग्रगण्य औषधि है। बिल्कुल अस्थिपंजर और मरणोन्मुख रोगियों को भी स्वस्थ बनाती है।

मात्रा—१ से ३ र० तक।

लौह और मण्डूर घटित औषधियां अपना विशेष महत्व रखती हैं। जिन रोगों का उद्गम स्थान जिगर होता है अथवा पित्त की न्यूनता और जिगर की कमजोरी से पैदा होने वाले रोगों में स्वभावतया रक्त कमज़ोर पड़ जाता है। रक्त में रक्त कणों की कमी हो जाती है। रक्त पतला और निष्क्रियता को प्राप्त हो जाता है। अनेक रोगों में बिना जिगर की खराबी के ही रोग के विष का आक्रमण विशेष रूप से रक्त पर होता है और रक्त कणों का ह्रास होकर खून कमज़ोर और मात्रा में न्यून पड़ जाता है जैसे मलेरिया, कालाज़ार, कामला, पाण्डु आदि ऐसे रोगों में लौह मण्डूर घटित औषधियाँ विशेष रूप से उपयोगी होती हैं। लौह खून को ताक़त देता है रक्ताणुओं की वृद्धि करता है और धातुओं को बल देकर शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाता है। मण्डूर, लौह किट्ट है और लौह की अपेक्षा लघुपाच्य है। कोमल प्रकृति के रोगियों को लौह की अपेक्षा मण्डूर अधिक माफ़िक आता है। मण्डूर जितना अधिक पुराना होता है उतना ही अधिक उत्तम माना जाता है। सरहिन्द शहर के आस पास अनेक पुराने ऐतिहासिक स्थान, टीले, खण्डहर और गढ़ हैं जिन में सैंकड़ों मन मण्डूर पड़ा हुआ है। निश्चय ही यह मण्डूर २०० वर्ष से कम पुराना नहीं है; पटियाला फार्मेसी में यहीं से लिया जाता है और औषधियों में प्रयुक्त होता है अतः यह औषधियां सर्वोत्तम हैं।

**अग्निमुख लौह (भै. र.)**—प्लीहा वृद्धि, पित्त की न्यूनता, पाण्डु, सूजन, वादी बवासीर और अग्निमान्द्य में इस से उत्कृष्ट लाभ प्राप्त होता है।

मात्रा—२ से ४ र० तक।

**अम्लपित्तान्तक लौह (र. रा. सु.)**—अम्लपित्त, छाती की जलन,

पित्त शूल और उदर शूल में खूब अच्छा लाभ करता है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**गुडूच्यादि लौह (भै. र.)**—हाथ पैरों की दाह, मन्द ज्वर, रक्ताल्पता, निर्बलता और मौसमी फोड़े फुंसियों में लाभदायक है।

मात्रा—२ से ४ र० तक।

**चन्दनादि लौह (भै. र.)**—पित्त ज्वर, विषम ज्वर, वमन, स्त्रियों का लाल पीला प्रदर तथा शारीरिक उष्णता में लाभ करता है।

मात्रा—२ से ४ र० तक।

**चन्द्रामृत लौह (भै. र.)**—पैत्तिक कास, श्वास, रक्ताल्पता, प्रमेह, प्रदर तथा पैत्तिक शिरः शूल में उम्दा औषधि है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**ताप्यादि लौह (र. तं. सा.)**—ज्वर के बाद की दुर्बलता, पाण्डु, हृदय की कमजोरी, मन्दाग्नि, प्रदर और प्रमेह में उत्तम औषधि है।

मात्रा—२ र० से १ मा० तक।

**तारा मण्डूर (यो. र.)**—पक्वाशय के व्रण, अम्ल पित्त, परिणाम शूल कामला, शोथ, ग्रहणी और गुल्म में अत्यन्त लाभकारक है।

मात्रा—२ से ४ र० तक।

**धात्री लौह (र. से. सं.)**—अम्लपित्त, आमाशय व्रण शूल की यह खास दवा है। मात्रा—४ र० से १ मा० तक।

**नवायस लौह (र. रा. सु.)**—रक्ताल्पता और कमजोरी की यह अद्भुत औषधि है। तथा अर्श, प्रमेह, मन्दाग्नि और लम्बी बीमारियों के बाद की कमजोरी में भी लाभदायक है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**प्रदरारि लौहम् (भै. र.)**—इसके सेवन से सब प्रकार के प्रदर कुक्षिशूल, कटिशूल और शरीर की पीड़ा का नाश होता है। आयु, बल वर्ण की वृद्धि होती है। मात्रा—१ मा० से २ मा० तक।

**प्रदरान्तक लौह (र. तं. सार.)**—हर प्रकार के प्रदर रोग में यह निश्चय लाभकारी औषधि है। साथ ही गर्भाशय दोष और बीजकोषों के विकार में इस के सेवन से अच्छा लाभ प्राप्त होता है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**पुनर्नवादि मण्डूर (भै. र.)** शोथ (सूजन) को दूर करने के लिये यह एक प्रख्यात और सर्व श्रेष्ठ औषधि है। मात्रा—४ र० से १ मा० तक।

**यकृदरि लौह (भै. र.)**—जिगर के समस्त विकारों एवं रक्ताल्पता में विशेष लाभदायक है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**यकृत्प्लीह लौह (भा. भै. र.)**—जिगर और तिल्ली के भिन्न भिन्न विकार उदर वृद्धि और शोथ में बहुत लाभदायक है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**रक्तपित्तान्तक लौह (भै. र.)**— रक्त में मिले पित्त की उष्णता को शान्त कर रक्त पित्त को दूर करता है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**वरुणाद्य लौह (भै. र.)**—पुराना पूयमेह, मूत्राश्मरी, मूत्र कृच्छ्र तथा मूत्राशय की कमज़ोरी में विशेष उपयोगी है। मात्रा २ से ४ र० तक।

**विडंगादि लौह (र. से. सा. सं.)**—उदर कृमि, प्लीहा वृद्धि, अर्श, अरुचि और मन्दाग्नि में अच्छा लाभ करता है। मात्रा २ से ४ र० तक।

**विषम ज्वरान्तक लौह (भै. र.)**—विषम ज्वर, जीर्ण ज्वर, मन्थर ज्वर, तथा गम्भीर धातु गत ज्वर में लाभदायक है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**विषम ज्वरान्तक लौह पुट पक्व (स्वर्ण घटित) (भै. र.)**—अन्य ज्वरों के अलावा यदि समय रहते राज्यक्ष्मा में प्रयोग कराया जाय तो निश्चय लाभ करता है। मात्रा—½ से २ र० तक।

**शोथारि लौह (भै. र.)**—शरीर के किसी एक भाग के सूजन अथवा सर्वाङ्ग शोथ में भी अच्छा लाभ करता है। मात्रा—२ से ४ र० तक।

**सप्तामृत लौह (वृ. यो. त.)**—अनेक प्रकार के नेत्र रोगो में अच्छा लाभ करता है। मात्रा—१ से ३ र० तक।

**सर्वज्वरहर लौह (र. सं.)**—यह प्रायः दुःसाध्य ज्वरों को ठीक करता है। मात्रा—½ से २ र० तक।

**त्र्यूषणाद्य मण्डूर [र. सा. सं.]**—मेद वृद्धि, कफ रोग, मन्दाग्नि और निर्बलता को दूर करता है। मात्रा—४ र० से १ माशे तक।

**त्रिफला मण्डूर [र. का. धे.]**—नेत्र रोग, रक्त चाप वृद्धि, कामला, पाण्डू, कब्ज़ और मन्दाग्नि में विशेष फायदा करता है।

मात्रा—४ र० से १ माशे तक।

**त्रिफलादि लोहम् [भै. र.]**—आमवात, पाण्डू, हलीपक, शोथ और विषम ज्वर नष्ट होता है। मात्रा—१ मा० से १½ माशे तक।

इस प्रकरण में काष्ठादि औषधियों से बनी वटी–गुटिका तथा रस भस्मों से बनी वटी–गुटिकाएँ भी शामिल हैं। भस्म और रसायन की अपेक्षा काष्ठादि औषधियों से बनी हुई वटी तथा गुटिकाएं अधिक सौम्य होती हैं। इसलिए अशक्त, नाजुक और उष्ण प्रकृति वाले रोगियों को तथा पुराने रोगों में लाभदायक है। यद्यपि चूर्ण आदि भी सौम्य होते हैं तथापि उन की मात्रा ज्यादा होती है। वटी की मात्रा अपेक्षाकृत बहुत कम है, साथ ही वटी और गुटिका द्वारा औषधि के बुरे स्वाद की समस्या भी हल हो जाती है। बालक, स्त्रियां और कोमल प्रकृति वाले लोग सहज ही इन का सेवन कर सकते हैं। किन्तु जो गोलियां अधिक कठोर हों वह पीस कर लेनी चाहियें अन्यथा वे मल के साथ ज्यों की त्यों निकल जाती हैं। पीस कर लेने से लाभ शीघ्र होता है।

**अमृतवटी (भै. र.)**—सब प्रकार के अतिसार में लाभदायक है अधिक परिमाण में स्तम्भक तथा अल्प प्रमाण में पाचक है। आमातिसार में प्रयोग न करें।

मात्रा—½ से १ र० तक।

**आमवात प्रमथनी (र. यो. सा.)**—तीव्र आमवात एवं आमवात की जीर्ण अवस्था में विशेष लाभकारी है। मात्रा— १–२ गोली।

**इन्द्रयवादि गुटी**—रक्तार्श (खूनी बवासीर) गुदा द्वार की जलन, अपचन आदि में लाभदायक है। मात्रा—१ से २ र० तक।

**एलादि वटी (भै र.)**—इस वटी के सेवन से खांसी, श्वास, वमन, अरुचि और मन्दाग्नि दूर होती है। मात्रा—२ से ३ गोली तक। एक गोली मुंह में रख कर चूसने से गले की जलन, खराश, स्वरभंग और जुकाम में भी खूब लाभ

होता है।

**कस्तूरी वटी (कस्तुरी, मीठा तेलिया युक्त) (फा. वि.)**—यह वटी बच्चों के न्यूमोनिया रोग में विशेष लाभप्रद है। मात्रा—१ गोली मधु के साथ।

**कुंकुमादि वटी (फा. वि.)**—नया पुराना उपदंश, रक्त विकार, उपदंश जन्य सन्धिवात, पक्षाघात, नाड़ीव्रण आदि नष्ट होते हैं।

मात्रा—२ से ४ गोली। दिन में दो बार घी में लपेट कर निगल जावें। दांतों में न लगे।

**करञ्जादि वटी (रस. त. सा.)**—यह वटी सब प्रकार के नवीन ज्वरों को दूर करती है। मलावरोध, प्लीहावृद्धि, जीर्ण ज्वर में हितकर है।

मात्रा—२–२ गोली दिन में ३ बार पानी के साथ दें।

**कर्पूरादि वटी**—इसके सेवन से वात प्रकोप जन्य सूखी खांसी दूर होती है। मात्रा—१–१ गोली। दिन में १०, १५ बार मुख में रख कर मिश्री के साथ चूसें।

**कांकायन गुटिका (यो. र.)**—पुराने नजला जुकाम में विशेष लाभदायक है। मात्रा २ र०।

**खदिरादि वटी (भै. र.)**—यह वटी मुंह के छाले, जीभ, दांत, मसूढ़े और गले के रोग, खांसी तथा स्वर भंग को दूर करती है। मात्रा—आवश्यकतानुसार १–१ गोली मुंह में रख कर चूसें।

**गन्धक वटी (र. रा. सु.)**—पेट का दर्द, अजीर्ण, मन्दाग्नि, पतले दस्त होना, आमवृद्धि आदि को दूर कर अग्नि प्रदीप्त करती है।

मात्रा—१ से ४ गोली।

**चन्दनादि वटी**—मूत्र की जलन तथा सूजाक में लाभप्रद है।

मात्रा—२ गोली।

**चन्द्रप्रभा वटी (लौह शिलाजीत युक्त)**—रस प्रकरण में देखें।

**चित्रकादि वटी (भै. र.)**—पाचन की कमज़ोरी, उदरशूल, अफारा, आमशूल आदि में उत्तम प्रभाव करती है। मात्रा—२ से ३ गोली तक।

**दुग्ध वटी नं० १ (भै. र.)**—इस वटी में अफीम और वत्सनाभ मिलाया जाता है। हाथ, पैर, मुंह अथवा सर्वांग शोथ, संग्रहणी, ग्रहणी युक्त ज्वर में लाभ करती है। मात्रा—१ से २ र०।

**दुग्ध वटी नं० २ (धतूरे बीज तथा मीठा तेलिया युक्त) (भै. र.)**—शोथ, पाण्डू, प्लीहा में लाभदायक है। मात्रा—१ र०।

**नाग गुटी (मीठा तेलिया युक्त)**—यह गुटिका, जुकाम ज्वर, गला तथा छाती दर्द अरुचि, जुकाम से होने वाले अतिसार आदि में लाभदायक है।
मात्रा—½ र० दिन में २ वार पान या मधु के साथ दें।

**प्राणदा गुटिका (भै. र.)**—प्रत्येक प्रकार की बवासीर में इसके सेवन से निश्चय लाभ होता है। मन्दाग्नि, कृमि, पाण्डु और हृदय रोग तथा गुल्म में भी लाभदायक हैं। मात्रा—१ से २ गोली तक।

**भल्लातक वटी (कुचला और वत्सनाभ युक्त) (फा. वि.)**—आमवात, गठिया और जोड़ दर्द में लाभ करती है। मात्रा—१ से २ वटी तक।

**मधुरान्तक वटी नं० १ (मोती, कस्तूरी युक्त) (र. तं. सा.)**—आन्त्र ज्वर (Typhoid fever) में दाने जल्दी निकल कर मर तथा ढल जाते हैं। आन्त्र ज्वर, मियादी बुखार में उपयोगी, विष शामक, दाह नाशक है।
मात्रा—½ र० से २ र० दिन में ३–४ वार अद्रक रस या पानी के साथ दें।

**मधुरान्तक वटी नं० २ (मोती कस्तूरी रहित) (र. तं. सा.)**—मन्थर ज्वर या मियादी बुखार के विष को बाहिर निकालने के लिये उपयोगी है। स्त्रियों तथा बच्चों का ताप उतारने में निर्भयता पूर्वक दे सकते हैं।
मात्रा—२–४ गोली दिन में २–३ वार पानी के साथ दें।

**मकरध्वज वटी (फा. वि.)**—नपुंसकता में विशेष उपकारी है। हृदय रोग, शारीरिक-निर्बलता में भी लाभ करती है। मात्रा—१ से ३ वटी।

**माणिक रसादि गुटिका (र. तं. सा.)**—बालकों के श्वास, हृदयावरोध, अफारा, कास, अतिसार, ज्वर, शूल आदि रोग दूर होते हैं। बच्चों के उका रोग में इसका प्रभाव तुरन्त होता है। मात्रा—१ गोली। अवस्थानुसार दें।

**मण्डूर वटी (भै. र.)**—जिगर, तिल्ली बढ़ना, पाण्डु, कामला, शोथ तथा स्त्रियों के प्रदर और रक्तालना में लाभदायक है। मात्रा—२ से ४ वटी तक।

**मरिचादि वटी (शा. ध.)**—असाध्य बलग़मी खांसी में इस के सेवन से लाभ होता है। मात्रा—२ गोली।

**महाशंख वटी (भै. र.)**—हर तरह के पेट के रोगों में फायदा करती है इसमें मीठा तेलिया भी मिलाया जाता है। मात्रा २ गोली।

**रजः प्रवर्तनी वटी (भै. र.)**—स्त्रियों के मासिक धर्म को खोल कर लाती है। मात्रा—२ गोली से ४ गोली तक।

**रसचन्द्रिका वटी (र. से. सं.)**—आधे सिर का दर्द, कनपटी का दर्द प्रतिश्याय और पीनस में लाभ करती है। मात्रा—१ से २ गोली तक।

**लवंगादि वटी (वै. जी.)**—सब प्रकार की खांसी को दूर करती है, श्वास रोग में भी हितकर है। मात्रा—१-१ गोली दिन में ५-६ बार चूसें।

**वज्र वटी (कुचला तथा मीठा तेलिया युक्त)**—यह वटी दीपन, पाचन, कृमिघ्न, वातहर है। मात्रा—१-२ गोली।

**लशुनादि वटी (शा. ध.)**—८४ प्रकार के वायु रोग, उन्माद, अपस्मार और हिस्टीरिया में लाभ करती है। मात्रा—२ से ३ गोली तक।

**व्योषादि वटी (यो. चि.)**—जुकाम, खांसी, नज़ला, पीनस और स्वर भंग को ठीक करती है। मात्रा—१ से २ गोली तक।

**विजयादि वटी (फा. त्रि.)**—पाचक, दीपक, वीर्य स्तम्भक, जननेन्द्रिय शिथिलता नाशक तथा शुक्रवर्धक है। मात्रा—२ र०।

**विषमुष्टि (कुचला) वटी (फा. त्रि.)**—सन्धिवात, गृध्रसीवात, अजीर्ण मन्दाग्नि और अशक्ति में लाभकारी है। मात्रा—१ से २ गोली तक।

**शंख वटी (भै. र.)**—यह एक उत्तम पाचक औषधि है, उदर शूल, अम्लपित्त, अजीर्ण, मन्दाग्नि, अफारा, गुल्म अतिसार और संग्रहणी मे लाभ करती है। मात्रा—१ से ४ गोली तक।

**शुक्र मातृका वटी (भै. र.)**—इस के सेवन से प्रमेह औररत्तज, मूत्र

रुक कर आना, अश्मरी, जीर्ण ज्वर में लाभ होता है। मात्रा— १–२ गोली पानी के साथ दें।

**शूल वज्रणी वटी (र. से. सं.)**—उदर शूल, यकृत शूल, पार्श्व शूल तथा वायु शूल, गुल्म, आमवात तथा अम्लपित्त में अतीव लाभ करती है।

मात्रा—१ से ३ गोली तक।

**शूलगज केसरी वटी (मीठा तेलिया युक्त) (फा. वि.)**—पार्श्व शूल और उदर शूल में लाभ करती है। मात्रा—१ से २ गोली तक।

**स्तम्भन वटी (फा. वि.)**—स्तम्भन की बेजोड़ दवा है। यह औषधि अफीम युक्त है। मात्रा—१ गोली।

**सुदर्शन चूर्ण (महा) टिकिया (शा. ध.)**—महा सुदर्शन चूर्ण की टिकिया हैं। विषम ज्वर, जीर्ण ज्वर, अग्निमांद्य, पाण्डु, प्लीहा, कास तथा शूल में लाभकारी। मात्रा—४ र०।

**सोम कल्प (लता) टिकिया (फा. वि.)**—श्वास के दौरे को रोकने में काम आती है। मात्रा—१–२ टिकिया मधु के साथ।

**समीर गज केसरी वटी (र. रा. सु.)**—इस में कुचला और अफीम मिलाई जाती है। जलोदर, शोथ, ग्रहणी, गृध्रसी वात, आमवात और गठिया में लाभ करती है। मात्रा— १ से २ गोली तक।

**संजीवनी वटी (भिलावा और मीठा तेलिया युक्त) (शा. ध.)**—विसूचिका, सन्निपात, गुल्म और सर्प विष में लाभदायक है।

मात्रा—१ से ४ गोली तक।

**सर्पगन्धा (चन्द्रभागा) टिकिया (फा. वि.)**—अनिद्रा, उन्माद, रक्त चाप वृद्धि तथा हिस्टीरिया में लाभ करती है। मात्रा—१–२ टिकिया।

**सुखविरेचनी वटी (फा. वि.)**—बिना तकलीफ के कब्ज को दूर कर के दस्त साफ़ लाती है। मात्रा—१ से २ टिकिया तक।

**सूरणवटक (लघु) (शा. ध.)**— बवासीर में अत्यन्त लाभदायक है।

मात्रा—१ से २ वटक तक।

**सौभाग्य वटी (मीठा तेलिया युक्त) (भै. र.)**—कास, श्वास, मूर्छा, अरुचि और प्यास में लाभ करती है। मात्रा—१ से २ वटी तक।

गुग्गुल—घटित औषधियां रस रसायन और भस्मों की अपेक्षा देर
से लाभ करती हैं। किन्तु पुराने रोगों और गहरी धातुओं में बैठे हुए दोषों
को नाश करने में अधिक समर्थ हैं। साधारण गुग्गुल की अपेक्षा लक्ष चोट
का गुग्गुल अधिक और आशुलाभकारी होता है। पटियाला फार्मेसी में यन्त्रों
की सुविधा के कारण १६ लाख चोट से कम का कोई गुग्गुल तैयार नहीं
किया जाता। अतएव पटियाला फार्मेसी के गुग्गुल निश्चित रूप से पूर्ण और
आशु लाभकारी हैं।

मात्रा निर्देश—शास्त्रीय विधान के अनुसार गुग्गुल की गोलियां
बनाई जाती हैं अतएव मात्रा निर्देश गोलियों की संख्या में ही किया
गया है।

**काँचनार गुग्गुल (शा. ध.)**—कण्ठमाला, अपची, गले की गाठों का
फूलना, गले की सूजन (Goitre) में इसके सेवन से खूब लाभ होता है।

मात्रा—२ से ३ गोली तक।

**कैशोर गुग्गुल (भै. र.)**—पुराना, रक्त विकार, वातरक्त, कुष्ठ, त्वचा
के घटने में इस के सेवन से उत्तम लाभ प्राप्त होता है। मात्रा—१ से २ गोली तक।

**गोक्षुरादि गुग्गुल (यो. र.)**—प्रमेह, मूत्र कृच्छ्र, मूत्राघात और पुराने
सुजाक में इसके सेवन कराने से खूब फायदा होता है। मात्रा—१ से ३ गोली तक।

**पुनर्नवादि गुग्गुल (भै. र.)**—यह हर प्रकार के शोथ में विशेष गुण-
कारी है। तथा यकृत विकार गृध्रसी वात और वात रक्त में भी लाभ करता है।

मात्रा—१ से ३ गोली तक।

**महा योगराज गुग्गुल (शा. ध.)**—१¼ लाख चोट का सप्तधातु मिश्रित (रजत युक्त) यह योग राज गुग्गुल से अधिक गुणकारी है। जहाँ योगराज से लाभ न होता हो वहां इस का सेवन कराना चाहिए। वंग भस्म, चांदी भस्म, नाग भस्म, लौह भस्म, अभ्रक भस्म और रस सिन्दूर के मिश्रण से यह अत्यन्त गुणकारी और स्थायी प्रभावकारी वन जाता हैं। अनेक वैद्य विद्वान इसकी गणना उसके गुणों के कारण रसायनों में करते हैं। वास्तव में यह उत्तम औषधि त्रिदोष जन्य विकारों को दूर करने की क्षमता रखती है। मात्रा—१ से २ गोली तक।

**लघु योगराज गुग्गुल (शा. ध.)**—यह अस्सी प्रकार के वायुरोग आमवात, मृगी, वातरक्त, मृगी दुः साध्य व्रण, अर्श, उदर रोग, प्रमेह, भगन्दर, आदि अनेक रोगों में लाभ करता है। पुराने रोगों में मात्रा बढ़ाकर आठवें दिन ६ माशे तक पहुंचा देनी चाहिए। २-३ मास तक निरन्तर इस गुग्गुल के सेवन से सब ही पुराने रोग दूर होते हैं।

**सावधानी**—जिसके मुंह में छाले हों, नेत्रों में दाह और मलावरोध रहता हो उसे योगराज गुग्गुल नहीं देना चाहिए। मात्रा—२ से ४ गोली।

**रास्नादि गुग्गुल (यो. र.)**— आमवात, गंटिया, गृध्रसी वात में खूब अच्छा लाभ करता है। मलावरोध को दूर करता है। मात्रा—१ से २ गोली।

**लाक्षादि गुग्गुल (यो. र.)**—टूटी हुई हड्डी को जोड़ने में, गुम चोट में रक्त जमा हो जाने पर, यह गुग्गुल वहुत अच्छा असर करता है।
मात्रा—२ से ३ गोली।

**सप्तविंशति गुग्गुल (भै. र.)**—यह गुग्गुल २७ औषधियों से तैय्यार होता है। अर्श, भगन्दर, खांसी, श्वास, वृक्क शूल और कृमि रोग नाशक है।
मात्रा—१ से २ गोली तक।

**सिंहनाद गुग्गुल (यो. चि.)**—आमवात, वातरक्त, उदर गुल्म, तथा कुष्ठ और अन्य जीर्ण त्वचा रोग दूर होते हैं। मात्रा— १ से २ गोली तक।

**त्रयोदशांग गुग्गुल (भै. र.)**—सन्धिवात, पक्षाघात, अर्दित, अपतानक और प्रमेह में लाभकारी है। मात्रा—१ से २ गोली तक।

**त्रिफला गुग्गुल (शा. ध.)**—बद्ध कोष्ठ, नेत्र रोग, खलित्य, पालित्य,

यकृत विकार, आमवात प्रमेह, तथा दाह में खूब फायदा करता है।

मात्रा—१ से ४ गोली।

गुग्गुल त्रिदोष नाशक होता है। यह उत्तम रसायन है। इस के सेवन से वात व्याधि, प्रमेह, पथरी गण्डमाला, ग्रन्थिरोग आदि विविध रोग नष्ट होते हैं। नया गुग्गुल वीर्यवर्धक और बल कारक होता है। पुराना गुग्गुल हानिप्रद होता है। नवीन गुग्गुल के संयोग से ही पूर्ण प्रमाणानुसार परीक्षण और शोधन के अनन्तर ही, इस प्रकरण के योग प्रस्तुत किये जाने चाहियें।

काष्ठादि औषधियाँ पुरानी होने पर न्यून गुण वाली हो कर नष्ट हो जाया करती हैं। एवं वनौषधियों के रस और क्वाथ भी थोड़े ही समय में बिगड़ जाते हैं। इसलिए इन के गुणों को दीर्घ काल तक सुरक्षित रखने के लिये आसव अरिष्ट बनाये जाते हैं। ये आसव अरिष्ट वर्षों तक खराब नहीं होते अपितु इनके गुणों में वृद्धि होती है। औषधियों के गुण संरक्षणार्थ ही आसव अरिष्ट विधि व्यवहार में लाई जाती है।

आसवारिष्ट सन्धान के लिए आयुर्वेदीय ग्रन्थों में घी से रमा हुआ पात्र प्रयोग करने का विधान है। किन्तु ऐसे पात्रों को यदि धूप में रख कर उनका घी न पूंछ लिया जाय तो आसव में घी का अंश आजाता है। और यदि घी से रमा हुआ पात्र न लिया जाय तो आसव बाहर निकलते रहने से कम हो जाता है। इसके अतिरिक्त मिट्टी बर्तन उत्तापवाहक होने के कारण भीतर की उष्णता को बाहर फैंकता रहता है। तथा शीत काल में बाहर की शीतल वायु का सम्बन्ध होता रहता है जिससे आसव का यथोचित परिपाक नहीं हो पाता। इस दोष के निवारण के लिये ग्रन्थों में आसव पात्र को जमीन में अथवा धान्यराशि में दबाने का विधान है। परन्तु वर्तमान समय में मृत्पात्र के स्थान पर चीनी के बड़े अमृतबान, लकड़ी के ढोल, अथवा सीमेंट के हौज का उपयोग किया जाने लगा है जो अधिक वैज्ञानिक है। पटियाला फार्मेसी में आसवारिष्टों के लिये विशेष रूप से लकड़ी के ढोल १००-१०० गैलन के सागवान की लकड़ी के तैय्यार कराए गये हैं जिन में आसव बहुत अच्छे उठते हैं और फलतः अधिक गुणकारी होते हैं।

अमृतारिष्ट (आ. वे. सं.)—अनेक प्रकार के ज्वर, इसके सेवन से नष्ट

होते हैं। विषमज्वर, जीर्ण, पित्तज्वर, आमज्वर, आदि ज्वरों की निश्चित अचूक औषधि है। मात्रा—१। तो० से २॥ तो० तक।

**अभयारिष्ट (भै. र.)**—अर्श विकार में यह आसव अत्यन्त उपयोगी है। मन्दाग्नि, मलावरोध और उदर शूल में भी बहुत अच्छा लाभ करता है।

मात्रा—१। तो० से २॥ तो० तक।

**अर्जुनारिष्ट (भै. र.)**—यह हृदय रोग की प्रसिद्ध दवा है। दिल की कमजोरी को दूर कर उसे बल देता है। मात्रा—१। तो० से २॥ तो० तक।

**अशोकारिष्ट (आ. वे. सं.)**—महिलाओं के लिये यह परम हितकारी है। श्वेत-अथवा रक्त प्रदर, मन्द ज्वर, मासिक धर्म के नाना विकार और गर्भाशय रोगों को दूर करता है। इसका कार्य गर्भाशय को बल देना है। स्त्रियों का बाँझपन गर्भाशय की सूजन, गर्भाशय की कमजोरी से गर्भपात होना, हाथ पैरों की हड़कल, कमर का दर्द, मासिक धर्म कष्ट से होना आदि अनेक स्त्री रोगों की शतशः अनुभूत औषधि है। मात्रा—१। तो० से २॥ तो० तक।

**अश्वगन्धारिष्ट (वे. से.)**—यह अरिष्ट दीपक, पाचक, वृष्य और वातनाशक है। बीस प्रकार के प्रमेह, ध्वज भंग, नपुंसकता, बवासीर, मूर्छा, मस्तिष्क की निर्बलता, वात व्याधि, हृदय के रोग आदि को दूर कर शरीर में स्फूर्ति और शुद्ध वीर्य की वृद्धि करता है। यह हिस्टीरिया और उन्माद के लिये भी अत्युत्तम औषधि है। मात्रा—१। तो० से २॥ तो० तक।

**अरविन्दासव (भै. र.)**—यह आसव बालकों के सब रोगों का नाश करता है। अतिसार, वमन, सूखा रोग आदि को दूर कर बच्चों को स्वस्थ व बलवान् बनाता है। मात्रा—बच्चों के लिए ३ माशे से ६ माशे तक। बड़ों को सवा तोले से अढ़ाई तोले तक।

**अहिफेनासव (भै. र.)**—अतिसार, शूल व हैजा, संग्रहणी में अत्यन्त हितकर है। मात्रा—५–१० बूंद।

**उशीरासव (शा. ध.)**—रक्त पित्त, तथा समस्त पित्तविकारों में लाभदायक है। मुंह से खून आने में फायदा करता है।

मात्रा—१। तोले से २॥ तोले तक।

**कनकासव** (भै. र.)—नये अथवा पुराने श्वास रोग में फ़ौरन फायदा दिखाता है। मात्रा—१¼ तोले से २½ तोले तक।

**कर्पूरासव** (भै. र.)—अतिसार और हैज़े की अचूक दवा है। मात्रा—१० से २० बूंद तक।

**कुमार्यासव** (शा. ध.)—यकृत्प्लीहा वृद्धि, गुल्म अजीर्ण, मन्दाग्नि, पाण्डु, कामला में अत्यन्त हितकारी आसव है। मात्रा—१। तोले से २।। तोले तक।

**कुटजारिष्ट** (भै. र.)—हर प्रकार की संग्रहणी, अतिसार, रक्तातिसार, पेचिश, मन्दाग्नि, ज्वर तथा यकृत् शोथ में अत्यन्त लाभ करता है। बच्चों के लिये भी हितकर है। मात्रा—१। तोले से २।। तोले तक।

**खदिरारिष्ट** (भै. र.)—यह उत्तम रक्तशोधक है। दाद, खाज, फुन्सी, एग्ज़िमा, और कुष्ठ में भी लाभ करता है। मात्रा—१। तोले से २।। तोले तक।

**चन्दनासव** (भै. र.)—पुराने सुज़ाक, मूत्र कृच्छ्र तथा प्रमेह और पित्त विकारों के लिये उत्तम है। मात्रा—१। तोले से २।। तोले तक।

**जीरकाद्यरिष्ट** (भै. र.)—प्रसूतिका रोग, हाथ पैरों की दाह, अतिसार अजीर्ण और मन्दाग्नि में लाभदायक है। मात्रा—१। तोले से २।। तोले तक।

**दशमूलारिष्ट** (शा. ध.)—प्रसूता के रोग, प्रमेह, ज्वर, उदर विकार, वातरोग, अरुचि, गुल्म, कास, संग्रहणी, अतिसार, आदि को नष्ट कर शारीरिक बल बढ़ाता है। मात्रा—१। तोले से २।। तोले तक।

**दशमूलारिष्ट (कस्तूरी युक्त)** (शा. ध.)—विशेष रूप से शक्ति वर्धक और नपुंसकता तथा अनेक रोग नाशक है। मात्रा—१। तोले से २।। तोले तक।

**द्राक्षासव** (शा. ध.)—किसी भी रोग में शक्ति संरक्षणार्थ और निर्बलता को दूर करने के लिये यह अत्यन्त उपयोगी है। यह ताक़त और ताज़गी से भरी हुई टानिक है। कास, श्वास, अजीर्ण, मन्दाग्नि, उरः क्षत, कब्जियत, को दूर करता है। खुलासा भूख लगती है, खाया हुआ हजम होता है। शरीर का वर्ण लाल बनाता है। हमारी फार्मेसी में उत्तम काली द्राक्षाओं से ही द्राक्षासव तैय्यार किया जाता है। मात्रा—१। तोले से २।। तोले तक।

**द्राक्षारिष्ट (शा. ध.)**—गुण और मात्रा द्राक्षासव के समान ही है।

**पत्रांगासव (भै. र.)**—स्त्रियों के गर्भाशय सम्बन्धी विकार में उपयुक्त है। प्रदर, रक्त प्रदर में विशेष लाभदायक है। मात्रा—½ औंस से १ औंस।

**पिप्पल्यासव (शा. ध.)**—जीर्ण ज्वर, अजीर्ण, मन्दाग्नि, में अत्यन्त लाभदायक है। मात्रा—१। तोले से २॥ तोले तक।

**पुनर्नवासव (भै. र.)**—शोथ की बेजोड़ दवा है। साथ ही यकृत् वृद्धि, मूत्रकृच्छ्र, शोथ युक्त ग्रहणी और पाण्डु रोगों का नाश करता है।

मात्रा—१। तोले से २॥ तोले तक।

**बब्बूलारिष्ट (शा. ध.)**—यह राज यक्ष्मा, कास, श्वास, प्रमेह, अतिसार तथा कुष्ठ में हितकर है। मात्रा—१। तोला।

**मध्वासव (चरक)**—अग्नि को प्रदीप्त कर विविध ग्रहणी विकारों को दूर करता है। मात्रा—१½ तोला।

**मृगमदासव (भै. र.)**—हृदयावरोध, सर्दी लगना, न्यूमोनिया और अशक्ति में अपूर्व लाभ दिखाता है। मात्रा—५ से १० बूंद तक।

**महा मंजिष्ठाद्यरिष्ट**—यह उत्तम रक्त शोधक है। उपदंश विकार, फोड़े, फुन्सी तथा त्वचा-रोगों में निश्चित लाभकारी है।

मात्रा—१। तोले से २॥ तोले तक।

**रोहितकारिष्ट (भै. र.)**—प्लीहा, यकृत् वृद्धि, गुल्म, कामला, कुष्ठ, उदर शोथ संग्रहणी में लाभकारी है। मात्रा—½ औंस से १ औंस तक।

**लोहासव (शा. ध.)**—पाण्डु, कामला, शोथ, मलावरोध, अर्श तथा रक्ताल्पता को दूर करने की अत्युत्तम औषधि है। मात्रा—१। तोले से २॥ तोले तक।

**लोध्रासव (ग. नि.)**—पेशाब की जलन और मूत्र नालिका के सूजन को दूर करता है। स्त्रियों के प्रदर, योनिदोष और गर्भाशय विकारों में भी उत्तम लाभ करता है। मात्रा—१। तोले से २॥ तक।

**बलारिष्ट (भै. र.)**—यह अरिष्ट वात संस्थान की निर्बलता से होने वाले शिरः शूल, कम्प, आक्षेप, अपस्मार आदि विविध रोगों को दूर कर धातुओं की वृद्धि

करने के लिये प्रशस्त है। मात्रा—२ से ४ तोला।

**वासकासव (शा. नि.)**—शोथनाशक, कफरोग नाशक है।

मात्रा—१। तोला।

**विडंगारिष्ट (शा. ध.)**—यह अरिष्ट विद्रधि उरुस्तम्भ, पथरी, प्रमेह, भगन्दर, गण्डमाला आदि रोगों में उपयोगी है। मात्रा—१। तोला।

**सारस्वतारिष्ट (भै. र.)**—दिमागी ताक़त के लिये अद्वितीय औषधि है। स्मृति नाश, अनिद्रा, अपस्मार, उन्माद में अत्यन्त लाभ करता है।

मात्रा—१। तोले से २॥ तोले तक।

**सारिवाद्यासव (भै. र.)**—चाहे कैसा भी रक्त विकार हो इस के सेवन से अवश्य लाभ होता है। यह विशेष रूप से खून की गर्मी को शान्त करता है।

मात्रा—१। तोले से २॥ तोले तक।

आसव अरिष्ट की मात्रा ½ औंस से १ औंस तक है। भोजन के १५-२० मिनट पश्चात् समान भाग जल मिला कर दोनों समय में लेने चाहिएं। कर्पूरासव, अहिफेनासव, मृगमदासव की मात्रा रोगी की अवस्थानुसार सावधानी से दें।

# चूर्ण

चूर्ण अति सौम्य गुण युक्त होते हैं इस लिए इनका सेवन अधिक मात्रा में करना पड़ता है। चूर्णों से प्रायः कोई हानि होने की सम्भावना नहीं होती।

## चूर्णों की विशेषता

चूर्ण कई वनस्पतियों को मिला कर तैयार किए जाते हैं। पटियाला आयुर्वेदिक फार्मेसी में कुटाई पिसाई के उत्तम यन्त्र होने के कारण हरेक वनस्पति को अलग अलग कूट और कपड़छान करके रखा जाता है और फिर शास्त्रीय परिमाण के अनुसार उन्हें तोल कर मिलाया जाता है। हमारे यहां सब औषधियां एक साथ मिला कर नहीं कूटी पीसी जातीं। सब औषधियों को एक साथ कूटने से कोई औषधि मोटी, कोई पतली कोई सख्त और कोई मुलायम होती है इस लिये कोई कम कुट पाती है और कोई अधिक कुट कर बारीक हो जाती है। इस लिये एक साथ कुटे हुए चूर्णों में पूर्ण गुणों का प्रसाद नहीं हो पाता। चूर्ण इसी लिये अधिक गुणकारी होते हैं क्योंकि उनकी सारी औषधियां अलग अलग कूटने पिसने के कारण एक समान बारीक होती हैं।

**अजमोदादि चूर्ण (शा. ध.)**—आमवात, सन्धिवात, गृध्रसीवात, कटि शूल और उदरवात में इसके सेवन से अपूर्व लाभ होता है।

मात्रा ३ से ४ माशे तक।

**अग्नि मुख चूर्ण (वं. से.)**—अरुचि, अग्निमान्द्य अफ़ारा और उदर-शूल में लाभ करता है। मात्रा—२ से ४ माशे तक।

**अश्वगन्धादि चूर्ण (शा. ध.)**—यह चूर्ण वृष्य है। दूध के साथ

सेवन करना चाहिए चार महीने तक उपयोग करने से शरीर तेजस्वी होकर तारुण्य की प्राप्ति होती है। मात्रा—३ से ६ माशा।

**अविपत्तिकर चूर्ण (वं. से.)**—यह अम्ल पित्त की खास दवा है। खट्टी डकार, पेट का भारीपन, मलावरोध और अरुचि को दूर करता है।

मात्रा—३ से ६ माशे तक।

**अष्टांग लवण (च. द.)**—अरुचि, अजीर्ण, मन्दाग्नि मे लाभकारी है।

मात्रा—१ माशा।

**उलट कम्बल चूर्ण (फा. नि.)**—स्त्रियों के योनि कष्ट तथा गर्भाशय दोषों में लाभदायक है। मात्रा—३ माशे।

**एलादि चूर्ण**—पित्त वमन, हाथ पैरों की दाह, अरुचि और मन्दाग्नि में लाभदायक है। मात्रा—२ से ४ माशे तक।

**कामदेव चूर्ण (यो. र.)**—नपुंसकता, शुक्र दोष, अशक्ति को दूर कर शरीर को सुन्दर बनाता है। मात्रा—१॥ से ३ माशे तक।

**गंगाधर चूर्ण बृहत् (शा. ध)**—अतिसार, प्रवाहिका, संग्रहणी, तथा पेचिश में लाभ करता है। मात्रा—६ मा० से १ तो० तक।

**गोक्षुरादि चूर्ण (वा. भ.)**—मूत्र कृच्छ्र, पथरी तथा शुक्र निर्बलता और प्रमेह में लाभ करता है। मात्रा—६ मा० से १ तो० तक।

**चन्दनादि चूर्ण यो. त.)**—प्रदर, रक्तविकार, रक्तपित्त और नक्सीर बहने में अच्छा लाभ करता है। मात्रा—३ से ६ मा० तक।

**चोपचीन्यादि चूर्ण**—उपदंश विकार, वातरक्त तथा रक्तदुष्टि में लाभ करता है। मात्रा—६ मा० से १ तो० तक।

**जातिफलादि चूर्ण**—पतले दस्त, मरोड़, पेचिश. अग्निमान्द्य, और अजीर्ण में लाभ करता है। मात्रा—२ से ४ मा० तक।

**तालीसादिचूर्ण (शा. ध.)**—अरुचि, मन्दाग्नि, खाँसी, जुकाम, श्वास वमन तथा गले के शोथ में अच्छा फायदा दिखाता है। मात्रा—२ से ४ मा० तक।

**दाड़िमाष्टक चूर्ण (शा. ध.)**—यह चूर्ण अति स्वादिष्ट और उत्तम पाचक है। अरुचि, मन्दाग्नि और अजीर्ण को दूर करता है।

मात्रा—३ से ६ मा० तक।

**नरसिंह चूर्ण (च. द.)**—इस चूर्ण में भिलावा मिलाया जाता है। पित्त के रोगियों को नहीं देना चाहिए। वात और कफ़ के रोग, प्रमेह, नपुंसकता, रक्तविकार तथा हृदय की दुर्बलता में अपूर्व लाभदायक है।

मात्रा—१ से ३ मा० तक।

**नारायण चूर्ण (शा. ध.)**—अजीर्ण, जलोदर, अर्श, प्रमेह, गुल्म और आध्मान में लाभदायक है। मात्रा—१ से २ माशे तक।

**निम्बादि चूर्ण**—इसके सेवन से दैनिक, तिजारी, चौथिया, सन्तत और धातुगत ज्वर नष्ट होते हैं। मात्रा—२ से ३ माशा गरम पानी के साथ दें।

**पञ्चसकार चूर्ण**—पुराने तथा नये कब्ज़ को तोड़ कर दस्त साफ लाता है। मात्रा—३ से ६ माशे तक।

**प्रदरान्तक चूर्ण (फा. वि.)**—यह फार्मेसी द्वारा निर्मित एक विशिष्ट और उत्तम योग है। प्रत्येक प्रकार के पुराने से पुराने प्रदर में निश्चित लाभ करता है। मात्रा—३ माशे।

**पुष्यानुग चूर्ण (केसर युक्त) (भै. र.)**—प्रदर, योनिदोष, ऋतु और गर्भाशय के विकारों की उत्तम औषधि है। मात्रा—१॥ से ३ माशे तक।

**महाखाण्डव चूर्ण (शा. ध.)**— मुख रोग, कण्ठ रोग, हृदय के रोग अरुचि अतिसार और वमन में अच्छा लाभ करता है।

मात्रा—१॥ से ३ माशा तक।

**मधुयष्ट्यादि चूर्ण**—खांसी, रक्तपित्त, नज़ला, ज़ुकाम के उत्तम लाभ करता है। मात्रा—४ से ६ माशे तक।

**लवण भास्कर चूर्ण (शा. ध.)**—अग्नि मान्द्य, अरुचि, अतिसार, पेचिश, गुल्म और उदर शूल के विकारों की उत्तम दवा है।

मात्रा—३ से ६ माशे तक।

**लाई (नायिका) चूर्ण लघु (भै. र.)**—इस चूर्ण में भांग मिलाई जाती है। अतिसार, संग्रहणी, पतले दस्त और मन्दाग्नि की प्रसिद्ध औषधि है।

मात्रा—१ से ३ माशे तक।

**लवंगादि चूर्ण बृहत् (शा. ध.)**—श्वास, खांसी, हिचकी, गले की खराबी अतिसार और ग्रहणी में अपूर्व लाभ करता है। मात्रा—४ से ८ र० तक।

**शिवाक्षार पाचक चूर्ण [र. तं. सा.]**—हिंग्वष्टक चूर्ण में हरड़ का चूर्ण और सज्जीक्षार मिला कर बनाया जाता है। पेट दर्द, गुल्म और उदर वायु में लाभदायक है। मात्रा – २ से ३ माशे तक।

**स्वादिष्ट विरेचन चूर्ण [फा. त्रि.]**—रात्रि को सोते समय खाने से सुबह दस्त साफ़ आता है। मात्रा – ६ माशा।

**सर्पगन्धा चूर्ण [फा. वि.]**—अनिद्रा, उन्माद, हिस्टीरिया और रक्त चाप वृद्धि की मशहूर दवा है। मात्रा—४ से ८ र० तक।

**सारस्वत चूर्ण [भै. र.]** – याद्दाश्त की कमी, बुद्धिक्षीणता, दिमाग़ी कमज़ोरी में लाभ करता है। मात्रा—२ से ६ माशे तक।

**सितोपलादिचूर्ण (शा. ध.)**—हर प्रकार की खांसी, जुकाम, नज़ला, अरुचि और शारीरिक दाह में लाभ करता है। मात्रा—१ से ३ माशे तक।

**सुदर्शन चूर्ण (महा) बृहत् (शा. ध.)**—विषम ज्वर मैलेरिया, जीर्ण ज्वर, पित्त ज्वर, प्लीहा वृद्धि और दाह में लाभ करता है।

मात्रा—३ से ६ माशे तक।

(सुदर्शन चूर्ण टिकिया का वर्णन वटी गुटिका प्रकरण में देखें)

**सोमलता चूर्ण (फा. त्रि.)**—श्वास में अतीव लाभकारी है।

मात्रा—४ से ६ र० तक।

**हिंग्वष्टक चूर्ण (शा. ध.)**—अग्नि मान्द्य, गुल्म, अफ़ारा, उदरशूल में शर्तिया फायदा करता है। मात्रा—३ से ४ माशे तक।

**हिंग्वादि चूर्ण (शा. ध.)**—वायु गुल्म, आध्मान, पेट का दर्द और अरुचि में लाभदायक है। मात्रा—२ से ३ माशे तक।

---

**त्रिफला चूर्ण**—नेत्रों के रोग, वद्ध कोष्ठ, कामला जिगर के अन्य विकारों में लाभदायक है। मात्रा—२ से ३ माशे तक।

**नोट:**—चूर्णों की मात्रा प्राय: १½ माशा, ३ माशा कभी कभी ½ तोला भी होती है। अवस्थानुसार मात्रा कम या ज्यादा कर सकते हैं। अनुपान के लिये गरम पानी, तक्र, दूध, अर्क सौंफ या मधु तथा घी के साथ दे सकते हैं। जहां घी तथा मधु मिलाना हो समान भाग में नहीं मिलाना चाहिये।

---
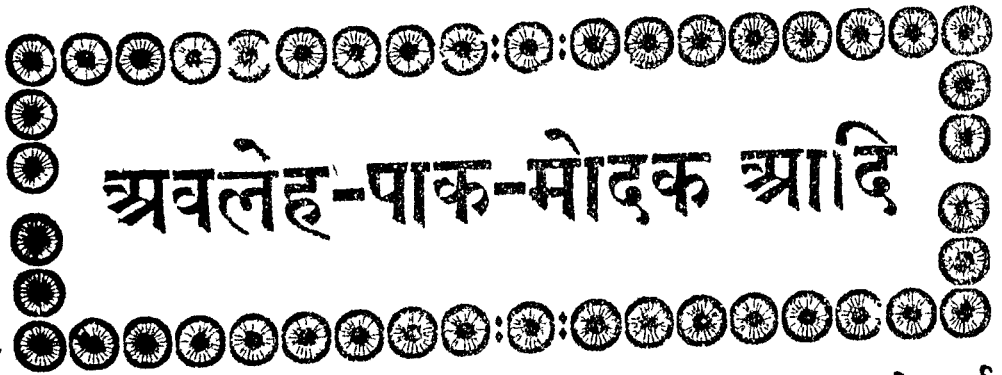
# अवलेह-पाक-मोदक आदि

नाजुक प्रकृति वाले, बालक, स्त्री, वृद्ध, पुराने रोगी एवं कड़वे चूर्ण आदि सेवन न कर सकने वाले, तथा शास्त्रीय दृष्टि से रस भस्मादि औषधियों के अनधिकारी रोगियों के लिये पाक, अवलेह आदि औषधियाँ विशेष अनुकूल रहती हैं। चूंकि ये स्वादिष्ट होती हैं अत: सब कोई आसानी से इनका सेवन कर लेते हैं। ये औषधियां शीघ्र ही पच कर रस में मिल जाती हैं; और शीघ्र रोगों पर अपना प्रभाव दिखाती हैं। भस्में जिनको लाभ नहीं पहुंचाती, उन्हें जब पाक अथवा अवलेह में मिला कर भस्में दी जाती हैं तो अवश्य लाभ दिखाती हैं।

**कुटजावलेह (शा. ध.)**—अतिसार, संग्रहणी पेचिश तथा पेचिश से पैदा हुये यकृत् शोथ में लाभकारी है। मात्रा—१ से २ तोले तक।

**कूष्माण्ड अवलेह (शा. ध.)**—रक्तपित्त, कास श्वास, दाह युक्त मन्द ज्वर में लाभकारी है। मात्रा—१ से २ तोले तक।

**च्यवन प्राश अवलेह (चरक)**—हमारी फार्मेसी के च्यवनप्राश में

गारण्टी के साथ "अष्टवर्ग", मिलाया जाता है। "च्यवन प्राश" एक उत्तम शक्तिप्रद अवलेह है। यह पाचन संस्थान, श्वास प्रश्वास संस्थान, हृदय, मस्तिष्क, रक्तवाहिनियों, मूत्र संस्थान, और जननेन्द्रिय संस्थान को खूब वल प्रदान करता है। साथ ही यह उत्सर्ग करने वाली इन्द्रियों को वल देकर आवश्यक शोधन कार्य भी करता है। राजयक्ष्मा, उरःक्षत, शोप, हृदयरोग, स्वर भंग, निर्वलता, कास, श्वास नेत्र रोग, मूत्र दोष तथा प्रमेह में हितकर है। किसी भी रोग में होने वाली निर्वलता को दूर कर, जीवनीय शक्ति को बहुत बढ़ाता है। च्यवनप्राश, वालक, वृद्ध, सगर्भा स्त्री, युवा सभी के लिये समान रूप से हितकारी है। अधिक जानकारी के लिये हमारी "च्यवन प्राश" नामक पुस्तिका मंगा कर पढ़ें।

मात्रा— १। तोले से २॥ तोले तक।

**बादाम पाक (फा. वि.)**—दिल, दिमाग़ की कमज़ोरी को दूर कर शरीर को ताक़त देता है, प्रमेह का नाश करता है और काम शक्ति को बढ़ाता है।

मात्रा—६ माशे से १ तोला तक।

**मदनानन्द मोदक (र. रा. सु.)**—प्रवल स्तम्भक, कामोद्दीपक, प्रमेह नाशक और भूख बढ़ाने वाला है। मात्रा—१ से ३ माशे तक।

**मूसली पाक (यो. चि.)**—वीर्य की कमी, वीर्य की कमज़ोरी, नपुंसकता और प्रमेह का नाश करके वल और कान्ति की वृद्धि करता है।

मात्रा—१। तोले से २॥ तोले तक।

**वासावलेह (भै. र.)**—रक्त पित्त, यक्ष्मा, खांसी, श्वास, कास युक्त ज्वर तथा पार्श्वशूल में अच्छा लाभ करता है। मात्रा—६ माशे से १ तोले तक।

**सुपारी पाक (लिवंग भस्म, लोह भस्म तथा कैलसियम युक्त) (यो. चि.)**—प्रत्येक प्रकार का प्रदर, गर्भाशय दोष, योनि दोष, वीर्य वाहिनियों के दोषों को ठीक करता है। मासिक स्राव को नियमित बनाता है और स्त्रियों के स्वास्थ्य, सौन्दर्य और लावण्य को बढ़ाता है। विशेष विवरण के लिये हमारी "सुपारी पाक" नामक पुस्तिका पढ़ें। मात्रा—६ माशे से १ तोले तक।

**सौभाग्य शुण्ठीपाक (यो. चि.)**—प्रसूत रोग, स्तनों में दूध की कमी, दुग्ध दोष आदि को दूर कर, सन्तानवती स्त्री के स्वास्थ्य की रक्षा करता है।

मात्रा—६ माशे से १ तोले तक।

अनुपान—रोगानुसार दूध, मधु या गरम पानी के साथ दें।

# औषधि-साधित तैल

**अर्क तैल (शा. ध.)**—खारिश, दाद, चम्बल, साधारण फुन्सियों तथा अन्य चर्म रोगों में लाभकारी है।

**अपामार्ग क्षार तैल (भै. र.)**—कर्ण शूल, कर्णवधिरता में लाभदायक है।

**आमला तैल (फा. वि.)**—सिर की खुश्की को दूर कर बालों को लम्बा, चिकना और मुलायम बनाता है। सिर में तरावट रखता है।

**इरिमेदादि तैल (श. ध.)**—पायोरिया, दांतों का हिलना, विद्रधि इत्यादि में दांतों पर रगड़ें।

**कासीसादि तैल (शा. ध.)**—इस के लगाने से बवासीर के मस्से नष्ट होते हैं।

**चन्दनादि तैल (भै. र.)**—जीर्णज्वर, दाह, खांसी, श्वास और उरःक्षत में लाभकारी है।

**दशमूल तैल (भै. र.)**—वात रोग, सिर दर्द, सन्निपात अवस्था एवं कर्ण रोगों में लाभ करता है।

**प्रसारणी तैल**—लकवा, रींगनवाय, अधरंग, कुबजता, अस्थि शूल में मालिश करें।

**मरिचादि तैल (च. द.)**—प्रत्येक प्रकार के चर्म रोगों में लाभ करता है।

**महानारायण तैल (शा. ध.)**—सब प्रकार के वात रोगों की उत्तम

औषधि हैं। जहां नारायण तैल से लाभ न होता हो वहां इसका प्रयोग कराना चाहिए।

**महाभृङ्गराज तैल (भै. र.)**—सिर के बालों को बढ़ाता, मस्तिष्क को ठण्डा रखता तथा गंजापन को मिटाता है।

**महामाष तैल (निरामिष)**—इस अत्यन्त गुणकारी तैल के प्रयोग से ग्रीवा स्तम्भ, अर्धाङ्गवायु, पक्षाघात, वात प्रकोप के कारण होने वाला पंगुता, शिरोग्रह, हाथ पैरों का कम्पन आदि विकार शांत होते हैं।

**महालाक्षादि तैल (शा. ध.)**—मन्द ज्वर, हाथ पैरों की दाह, उरः क्षत रक्तपित्त और यक्ष्मा में लाभ करने वाला प्रसिद्ध तैल है।

**विष गर्भ तैल (यो. र.)**—वेदना शमन करने के लिये यह तैल सर्वोत्तम है। ८० प्रकार के वात रोगों का नाश करता है।

**षड् बिन्दु तैल (च. द.)**—शिरोरोग और नासा रोग में अत्यन्त लाभकारी है।

**क्षार तैल (शा. ध.)** अनेक प्रकार के कर्ण रोग और बधिरता (बहरेपन) में लाभ करता है।

जब कोई तेल, शोथ शूलादि में मलना हो तो उसे तनिक गर्म कर लें, वातिक तेलों में थोड़ा सा कपूर मिलाने से गुण वृद्धि हो जाती है। मालिश के पश्चात् शोथ युक्त अङ्ग पर अर्क या एरण्ड पत्र गरम करके बांध दें या उष्ण वस्त्र या रूई बांध दें।

---

# साधित घृत

घृत पुराना होने पर भी गुण युक्त रहता है। घृत से रोग शीघ्र दूर होकर शरीर स्वस्थ्य बलवान् और कान्तिवान् बनता है। जो रोगी अनेक प्रकार की औषधियां वर्षों तक सेवन करके निराश हो गये हों, जिनकी पाचन शक्ति अतिमन्द हो, मलावरोध, अफारा, बेचैनी, अरुचि, सिर दर्द आदि विकारों से पीड़ित रहते हों उन्हें घृत सेवन करने से थोड़े दिन में ही आशातीत लाभ होता है। बालक, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सब ही के लिये घृत उपयोगी होते हैं।

**अशोक घृत**—प्रदर, योनिदोष आदि अनेक स्त्री रोगों में लाभ करता है।

**अश्वगन्धादि घृत**—प्रमेह, नपुंसकता, ध्वज भंग और शारीरिक अशक्ति में लाभकारी है।

**जात्यादि घृत**—(बाह्य प्रयोग के लिये मरहम) सन्धिव्रण (नासूर) पुराने और हठीले घाव, गहरे व्रण, भगन्दर म लगाने से चमत्कार पूर्ण लाभ करता है।

**फल घृत (च. द.)**—बांझपन, योनिदोष, स्त्री बीज कोषों के रोगों की प्रसिद्ध दवा है।

**ब्राह्मी घृत (च. द.)**—उन्माद, अपस्मार, मन्द बुद्धि और दिमागी कमज़ोरी में लाभ करता है।

**महात्रिफलादि घृत (च. द.)**—नाना प्रकार के नेत्र रोग, शिरः शूल, और बद्ध कोष्ठ में लाभकारी है।

नोट—घृत का प्रयोग मात्रानुसार ६ माशे से १ तोला तक गौ घृत में मिला कर ही करना चाहिये।

आंख के रोगों में लाभप्रद है। वर्ति अर्क गुलाव में घिस कर सलाई से लगानी चाहिये।

**चन्द्रोदयावर्ति (शा. ध.)**—यह वर्ति उत्तम लेपन क्रिया करती है। रतौंधा, नेत्रों में मांस वृद्धि, रोहे और फूले को काटती है। शहद में घिस कर लगानी चाहिये।

**चन्द्रप्रभा वर्ति (यो. र.)**—नाखूना, धुन्ध, अभिष्यन्दि, जाला, मोतिया विन्द को दूर करती है। गुलाव जल में घिस कर लगावें।

**नागार्ज्जुन वर्ति (भै. र.)**—नेत्रों के समस्त रोगों में हितकारी है। ताज़े जल या गुलाव जल में घिस कर लगावें।

**मुक्तादिमहांजन (यो. र.)**—दृष्टिमान्द्य, ग्लूकोमा तिमिर, फूला तथा रोहों को दूर करता है।

**नयनामृत सुरमा (शा. ध.)**—नेत्र ज्योति को वढ़ाने में अद्वितीय है। इसके कुछ दिन नियमित सेवन से चश्मा लगाना छूट जाता है।

**शान्ति सुरमा (फा. वि.)**—(ज्योति वर्धक) इस को नेत्र में लगाने से ज्योति वढ़ती है। नेत्र निर्मल रहते हैं।

# प्रवाही क्वाथ (काढ़े) या तरल सार

काढ़े चूंकि अधिक मात्रा में पीने पड़ते हैं अतः अनेक रोगी पीते हुए घबराते हैं। साथ ही कतिपय रोगियों को मात्राधिक्य और स्वाद के कारण वमन भी हो जाती है। इस लिये प्रसिद्ध और उपयोगी काढ़ों तथा कुछ वनस्पतियों के अधिक समय तक न बिगड़ने वाले तरल सत्व तैय्यार कर दिये गए हैं। जो रोगी आसानी से पी सकते हैं। एक तोला सूखी औषधियों का दो तोले तरल के अनुपान से सत्व तैय्यार किया गया है। ये काढ़े और सत्व अत्यन्त लाभदायक साबित हुए हैं।

**अशोक काढ़ा**—प्रदर गर्भाशय रोग, ऋतु दोष और निर्बलता में अत्यन्त लाभकारी है।

**अर्जुन काढ़ा**—हृदय रोगों में अत्यन्त उपयोगी है।

**कुटज काढ़ा**—पेचिश, अतिसार, संग्रहणी, यकृत, शोथ तथा ज्वरातिसार में निश्चय लाभ करता है।

**दशमूल काढ़ा**—प्रसूत, ज्वर तथा वात श्लेष्म प्रधान रोगों और प्रमेह, पार्श्व शूल, खांसी, श्वास आदि में अतीव लाभकारी है।

**महा मंजिष्ठादि काढ़ा**—रक्त दोष, वात रक्त, कुष्ठ, त्वचा रोग तथा शारीरिक दाह में खूब फायदा करता है।

**महा सुदर्शन काढ़ा**—विषम ज्वर, (मलेरिया) पित्त ज्वर, तथा मन्द ज्वर में अत्यन्त उपयोगी है।

**महारास्नादि काढ़ा**—जोड़ों का दर्द, गंठिया तथा वात रोगों में होने वाले बद्ध कोष्ठ के लिये विशेष लाभदायक है।

**ब्राह्मी काढ़ा**—उन्माद, अपस्मार, अनिद्रा तथा मस्तिष्क दुर्बलता के लिए अद्वितीय है।

इसके अतिरिक्त आर्डर आने पर अन्य क्वाथों के तरल सार भी तैय्यार किये जा सकते हैं। तरल सार मात्रा—

२ साल तक के बच्चे को १० बून्द। ६ साल तक के बच्चे को २० बून्द।
१६ ,, ३० ,,। १६ साल से ऊपर तक को ४० बून्द।
सुबह शाम सम भाग पानी मिला कर दें।

दवाई पीसने की ढोल मैशीनें

भस्में कूटने के ढोल तथा टिकिया मैशीनें

# ★ प्राक्कथन ★

चिकित्सा क्षेत्र में फार्मेसियों का अपना अलग महत्त्व है। आयुर्वेद में औषधि निर्माणशालाओं का स्पष्ट रूप से अलग विधान किया है जिस से साफ़ पता चलता है कि प्राचीन आयुर्वेदोत्कर्ष के समय में औषधि निर्माण का कार्य निर्माण विशेषज्ञों द्वारा किया जाता था। किन्तु मध्य में जो एक अन्धकार पूर्ण समय आया उस में यह फार्मेसियों का क्रम लुप्त हो गया। इस क्रम के लुप्त होने का फल यह हुआ कि चिकित्सक वैद्य को स्वयं औषधि निर्माता भी बनना पड़ा।

किन्तु आज विज्ञान का युग है और हम वैज्ञानिक ढंग पर चल कर ही आगे बढ़ सकते हैं और उन्नति कर सकते हैं। आयुर्वेद भी इस का अपवाद नहीं है। आज भी अधिकांश वैद्य समाज में यह परिपाटी प्रचलित है कि वे स्वयं अपने हाथ से ही औषधियां बना कर प्रयोग में लाते हैं किन्तु सत्य तो यह है कि सिद्धान्त रूप से यह प्रथा ग़लत है। वास्तव में चिकित्सक का काम यह है कि वह अपनी बुद्धि, अपनी शक्ति और प्रतिभा, रोगी के रोग निदान करने तथा औषधियां तजवीज़ करके उसकी चिकित्सा में लगाए तभी वह एक सफल और अनुभवी चिकित्सक बन सकता है। परन्तु इस के विपरीत जब कि उस की बुद्धि, समय और शक्ति औषधियां बनाने में भी खर्च होने लगेंगी तो वह अपने विषय का विशेषज्ञ नहीं बन सकता। वह एक सफल चिकित्सक होने का गौरव प्राप्त नहीं कर सकता; और न वह दूसरी ओर निर्माण में ही पूर्णता प्राप्त कर पाता है। स्वयं हाथ से औषधि बनाने की परिपाटी के आधार पर हम कल्पना करते हैं कि आज एक स्नातक किसी आयुर्वेद विद्यालय से उपाधि प्राप्त करके निकलता है और अपना निजी चिकित्सा व्यवसाय प्रारम्भ करना चाहता है तो उसे यह जरूरी हो जाता है जंगलों में जाकर जड़ी बूटियां लाए, यदि धनी है तो नौकर लगा कर उन्हें कुटवाए पिसवाए और यदि निर्धन है तो स्वयं ही कूटे पीसे, आसवों के धान डाले, रसों में पुटें और भावना लगाए, चन्द्रोदय और मकरध्वज की भट्टी चढ़ाए, पाक और अवलेह बनाए और साथ ही रोगियों को देख कर उनकी चिकित्सा और निदान भी करे। किन्तु इतना सब क्या एक व्यक्ति कर सकता है ? कदापि नहीं। दूसरे अन्य चिकित्सा विज्ञानों के

मुकाबले में आयुर्वेदीय औषधियों की संख्या कहीं अधिक है। इस लिए यदि सच पूछा जाए तो समस्त औषधियां बनाने का सवाल तो दूर रहा, कोई भी वैद्य अपने जीवन में समस्त औषधियां रोगियों पर प्रयोग भी नहीं कर सकता।

वास्तविकता यह है कि वैद्य के पास औषधियों का एक विपुल-भण्डार होना चाहिए, औषधियां ही वैद्य का अस्त्र है। अस्त्र शस्त्रों का जितना बाहुल्य होगा उतना ही वैद्य रोग रूपी शत्रु को परास्त करने में समर्थ हो सकेगा। असलियत में वैद्य की स्थिति ठीक उस सैनिक की सी है जो युद्ध में लड़ने जा रहा है, यदि हम उस ही सैनिक से यह कहें कि तुम ही अस्त्र शस्त्र भी बनाओ तो वह निश्चय ही लड़ नहीं सकेगा। अस्त्र, शस्त्र, गोली बारूद आदि युद्ध सामग्री बनाने का काम दूसरे कारखानों और उन में काम करने वाले विशेषज्ञों का है जो कि उस कार्य में दक्षता और पूर्णता प्राप्त किए हुए हैं। इसी प्रकार औषधि क्षेत्र में औषधियां बनाना फार्मेसियों का कार्य है जो फार्मेसियों और औषधि निर्माण विशेषज्ञों को ही करना चाहिए, चिकित्सक वैद्यों को नहीं। एलोपैथी की उन्नति का यह भी एक कारण है कि उस में निर्माण और चिकित्सा विभाग बिल्कुल पृथक् पृथक् हैं। कोई भी एलोपैथिक डाक्टर कभी हाथ से दवा बना कर प्रयोग में लाने की बात नहीं सोचता।

यहां हम दो शब्द फार्मेसियों के प्रति वैद्यों की शिकायत के सम्बन्ध में भी कहना चाहेंगे। आम तौर पर वैद्यों की यह शिकायत है कि फार्मेसियों से शुद्ध और शास्त्रीय औषधियां नहीं प्राप्त होतीं, इस लिए उन्हें विश्वसनीय औषधियां प्राप्त करने के लिए स्वयं औषधियां निर्माण करनी पड़ती है। हम यह नहीं कहते कि वैद्यों की यह शिकायत निराधार है अथवा झूठी है। सत्य बात तो यह है कि धूर्त और चालबाज़ लोग हरेक ही व्यवसाय और पेशे में हो सकते हैं, फिर आयुर्वेदीय व्यवसाय ही उन से क्यों कर बचेगा। किन्तु हम साथ ही वैद्य बन्धुओं और आयुर्वेद प्रेमी जनता से यह अवश्य कहेंगे कि ऐसा धोके का व्यापार कभी भी ज़्यादा दिन नहीं चलता, इस प्रकार की फार्मेसियां आज बनती हैं और कल खतम हो जाती हैं, क्यों कि काठ की हांडी दुबारा कभी नहीं चढ़ती। हां ऐसे लोग व्यवसाय को बदनाम अवश्य कर देते हैं। किन्तु सभी फार्मेसियों को अविश्वसनीय

समझ लेना युक्ति संगत नहीं है। प्रतिष्ठित फार्मेसियों पर अविश्वास करना उनके प्रति अन्याय करना है।

## आप को कैसी फार्मेसी से औषधियां खरीदनी चाहिएं-

**जो फार्मेसी स्थायी रूप से औषधि व्यवसाय में काम कर रही हों।**

**जिस फार्मेसी में औषधि निर्माण व्यवस्था शिक्षित और विशेषज्ञ वैद्यों के हाथ में हो।**

**जिस फार्मेसी में औषधि निर्माण सम्बन्धी विशाल साधन हों।**

## पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी की कुछ विशेषताएं:—

१. पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी ने थोड़े समय में ही इतनी उन्नति की है कि शीघ्र ही एक औषधि निर्माण और वितरण की ब्रांच जबलपुर सी० पी० में खोलनी पड़ी। निश्चय ही इतने थोड़े समय में फार्मेसी की औषधियों का लोकप्रिय होना औषधियों की उत्तमता और गुणकारिता का का प्रमाण है। आज समस्त भारत में १५०० से अधिक एजण्टों तथा स्टाकिस्टों द्वारा पटियाला अयुर्वैदिक फार्मेसी की शुद्ध और गुणकारी औषधियां बेची जाती हैं।

२. पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी के अध्यक्ष, सांझीदार, इन्चार्ज आदि सभी उत्तर-दायी व्यक्ति गुरुकुल तथा अन्य अयुर्वेदीय विद्यालयों के स्नातक हैं। इस लिए इस फार्मेसी की औषधियां पूर्ण रूप से शास्त्रीय और वैज्ञानिक आधार पर ही तैयार की जाती हैं।

३. औषधि निर्माण सम्बन्धी साधनों का बाहुल्य पटियाला फार्मेसी की विशेषता है। रस औषधियों में भावना देने, चूर्णों को कूटने पीसने तथा गुग्गुल में सवा सवा लाख चोटें लगाने का कार्य विशिष्ट रूप से निर्मित मशीनों से लिया जाता है। फलतः यह कार्य शीघ्रता और उत्तमता से सम्पादित होता है। हमें यह कहते हर्ष होता है कि हमारी फार्मेसी का अब तक अनेक विद्वानों और प्रतिष्ठित वैद्यों ने निरीक्षण किया है और सब ने हमारे औषधि निर्माण सम्बन्धी यन्त्रों को बहुत पसन्द किया, क्योंकि वे खास तौर पर आयुर्वेदीय औषधि निर्माण के हेतु नवीन ढंग से बनाए गए हैं।

साथ ही कई फार्मेसी अध्यक्षों ने हमसे वैसे यन्त्र अपनी फार्मेसियों के
के लिये बनवा देने का अनुरोध किया है।

४. इस तरह के विशाल साधन होने के कारण पटियाला
आयुर्वैदिक फार्मेसी में तकरीबन हर समय सभी तरह की आयुर्वेदीय
औषधियों का एक बड़ा स्टाक तैयार रहता है। साथ ही यदि कोई
सज्जन किसी विशेष नुस्खे के मुताबिक औषधियां बनवाना चाहें तो
उनके लिये खास तौर से वह औषधि तैयार कर के भेज दी जाती है।

## यन्त्रों के सन्बन्ध में भ्रम निवारण

अभी तक अनेक वैद्य बन्धुओं और आयुर्वेद प्रेमी जनता को
यह भ्रम है कि मशीनों द्वारा औषधि निर्माण करने से औषधियां प्रभाव
हीन और निर्वीर्य हो जाती हैं। वास्तव में यह धारणा बहुत गलत
है। यन्त्र निर्मित औषधियों की अब तक अनेक बार परीक्षा हो
चुकी है और वे अपने प्रभाव में पूरी उतरती हैं। और वास्तव में यदि
यन्त्रों से औषधियों का प्रभाव नष्ट हो जाया करता तो अंगरेज़ी औष-
धियां तो सभी यन्त्रों से बनती हैं उनका प्रभाव नष्ट क्यों नहीं होता।
सच तो यह है कि यह कुछ मूर्ख लोगों द्वारा फैलाया हुआ प्रचार है
जिसमें तथ्य का लेश भी नहीं है आज यन्त्रों का वैज्ञानिक युग है।
समय के साथ न चलने पर हम और भी पीछे रह जाएँगे। यन्त्रों द्वारा
किसी भी व्यवसाय की उत्पादन समस्या बड़ी जल्दी हल होती है।
आयुर्वेदीय औषधि निर्माण में भी हमें यन्त्रों द्वारा जो सहायता मिलती
है उस से औषधियां शीघ्र और उत्तम तैयार होती हैं। उदाहरण के
तौर पर मशीनों द्वारा चूर्णों की कुटाई, पिसाई इतनी बारीक होती है
और जल्दी होती है कि हम चौगुना समय लगा कर भी हाथ से वैसी
चीज तैयार नहीं कर सकते। इसी प्रकार भस्मों और रसों में भावना
देने और गुग्गुल में चोट लगाने की बात है।

## बिजली से भस्में नहीं बनतीं

अनेक लोग अभी ऐसा भी समझ बैठे हैं कि यन्त्रों से औषधियां
बनाने वाले लोग बिजली से भस्में तैयार करते हैं। हम उन लोगों की
इस भ्रम मूलक धारणा को दूर कर देना चाहते हैं कि बिजली से भस्में
तैयार करने का कोई तरीका नहीं है और किसी भी फार्मेसी में बिजली

से भस्में तैय्यार नहीं होतीं। धातुओं और रसों को पुट देने का काम कण्डों (उपलों) की अग्नि से ही लिया जाता है।

हमारे पैकिंग—हमारी फार्मेसी की समस्त औषधियों के पैकिंग सुन्दर और मजबूत हैं जिनमें औषधियां पूर्ण सुरक्षित रहती हैं। मूल्यवान औषधियों के पैकिं खास तौर पर मजबूत बनाये गये हैं। जनता की सुविधा के लिये तकरीबन हमने तमाम औषधियों का यथा सम्भव छोटे से छोटा पैकिंग तैयार कराया है।

मूल्य—आज कल बाजार में मूल्य सस्ता करने की होड़ सी लगी हुई है। किन्तु मूल्य कम करके हम कभी जनता को अच्छी क्वालिटी का माल नही दे सकते। किन्तु हमारा उद्देश्य सस्ते पन की होड़ में पड़ना नहीं है; अपितु उचित मूल्य पर उच्च कोटि की औषधियां प्रस्तुत करना है। फिर भी हमारी औषधियों का मूल्य किसी प्रतिष्ठित फार्मेसी से अधिक नहीं है।

## अस्तु

उपरोक्त तथ्यों के प्रकाश में आप पटियाला आयुर्वेदिक फार्मेसी से अत्यन्त उचित मूल्य पर शुद्ध, शास्त्रोक्त, ऊँची क्वालिटी की समस्त आयुर्वेदीय और पेटेण्ट औषधियां हर समय प्राप्त कर सकते हैं। हमें उन लोगों से कुछ नहीं कहना है जो एक बार भी हमारी औषधियां प्रयोग कर चुके हैं; किन्तु जिन लोगों ने अभी हमारी औषधियां व्यवहार नहीं की हैं उनसे हम अवश्य ही अनुरोध करेंगे कि वे एक बार जरूर ही हमारी कोई सी एक औषधि प्रयोग करें, फिर हमारा दावा है कि उन्हें दूसरे फार्मेसियों की औषधियां पसन्द नहीं आएंगी।

## व्यापारियों तथा जनता से

हम हर शहर-कस्बे और ग्राम में अपने एजेण्ट और स्टाकिस्ट बना रहे हैं ताकि सब जगह हमारी औषधियां आसानी से प्राप्त हो सकें, किन्तु यदि आपके शहर, कस्बे या गांव में हमारा कोई एजेण्ट नहीं है तो आप आज ही एजेन्सी के लिये पत्र व्यवहार कीजिये।

निवेदक—व्यवस्थापक—

**पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी, सरहिन्द**

# मुख्य मुख्य रोगों पर औषधियां

१. अम्लपित्त—खट्टे डकार आने पर सुबह और शाम को अविपत्तिकर चूर्ण और रात को हरीतकी खण्ड गरम पानी या दूध के साथ लें।

२. उष्णवात (सूजाक)—२ माशा भर चन्दनादि चूर्ण सुबह त्रिफले के पानी या कच्चे दूध की लस्सी के साथ लें, और भोजन के बाद दोनों समय चन्दनासव पिएँ।

३. कष्टार्तव—माहवारी न होने या कष्ट से होने की दशा में माहवारी के एक सप्ताह पहले से रजःप्रवर्तनी की एक गोली सुबह और शाम गरम पानी से लें।

४. कब्ज—रात को हरीतकी खण्ड दूध या गरम पानी के साथ खायें और दोनों समय भोजन के बाद द्राक्षासव पिएं।

५. खूनी बवासीर—रात को चन्द्रप्रभा लें, सुबह मट्ठे के साथ कुटजावलेह।

६. खून की कमी—नवायस लोह १ माशा शहद और दो माशा घी के साथ सुबह शाम चाटा करें, अथवा च्यवनप्राश दूध के साथ लिया करें।

७. खाज—हरिद्रा खण्ड दूध के साथ सुबह शाम लेनी चाहिये और मरिचादि तेल की मालिश करनी चाहिये।

८. गठिया—महारास्नादि क्वाथ के साथ सुबह और शाम दिन में दो बार महायोगराजगुग्गुल लें।

९. ज्वर—हरीतकी खण्ड या इच्छाभेदी से पेट साफ करके दिन में तीन चार गोली मृत्युञ्जय की खाएं।

१०. जुकाम—सुबह शाम कफकेतु शहद से और व्योषादि चूर्ण गरम पानी के साथ दिन में दो बार।

११. तर खांसी—श्री चन्द्रामृत रस शहद से लें। लक्ष्मीविलास पान के साथ खाएं।

१२. दमा—सुबह भारंगी गुड़ गरम पानी से, शाम को शृंग्यादि चूर्ण गरम पानी के साथ और भोजन के बाद कनकासव पिया करें।

१३. दस्त—रामबाण या आनन्द भैरव दिन में दो तीन बार शहद से लें। इनसे लाभ न हो तो चावल के मांड के साथ कर्पूर रस दिन में एक बार लें।

१४. निर्बलता—मकरध्वज वटी एक गोली प्रातः सायं, पान मलाई या

रबड़ी के साथ लिया करें।

१५. पुराना बुखार—सुबह सुदर्शन चूर्ण, सायंकाल स्वर्ण वसन्त मालती लें और लाक्षादि तैल की मालिश करें।

१६. प्रसूत ज्वर—बच्चा होने के बाद माता को ज्वर हो तो सुबह दशमूल क्वाथ और दिन में दो बार दशमूलारिष्ट देना चाहिये।

१७. पेट दर्द—हिंग्वाष्टक चूर्ण या महाशंख वटी गरम जल से लें।

१८. पुरानी खांसी—सवेरे च्यवनप्राश शहद के साथ चाटा करें। भोजनोपरांत दोनों समय द्राक्षासव पिया करें।

१९. प्रमेह—सुबह सत शिलाजीत दूध के साथ या स्वर्ण वंग शहद के साथ रात को चन्द्रप्रभा दूध के साथ लेनी चाहिये।

२०. पथरी—चन्द्रप्रभा या शिलाजीत प्रातः सायं दूध से लें। भोजन के बाद दोनों समय अशोकारिष्ट पियें तथा प्रदरनाशकवटी का सेवन कराएँ।

२२. बवासीर—सुबह और रात को सोते समय दूध के साथ चन्द्रप्रभा; भोजन के बाद अभयारिष्ट लेना चाहिये।

२३. बदहज़मी—खाना खाने के बाद थोड़ा २ लवण भास्कर या हिंग्वाष्टक चूर्ण लें अथवा महाशंखवटी चूसें।

१४. भगन्दर—प्रातःकाल ३ माशा भर योगराज गुग्गुल गरम पानी या दूध के साथ लें और रात को चन्द्प्रभा या शिलाजीत।

२५. मलेरिया—पेट साफ़ करके चढ़े बुखार में मृत्युञ्जय लें। ज्वर उतरने पर सुदर्शन चूर्ण और अमृतारिष्ट।

२६. मधुमेह—(डायबेटीज़) सुबह चन्द्रप्रभा या शिलाजीत दूध के साथ लें, और बसन्त कुसुमाकर घी तथा शहद के साथ।

२७. रक्तविकार—सुबह महामञ्जिष्ठाद्यारिष्ट पिएँ। भोजन के बाद दोनों समय सारिवाद्यासव पियें।

२८. स्वप्नदोष—रात को ६ माशा हरीतकी खण्ड लेकर कब्ज न होने दें। सुबह शाम दूध के साथ संजीवन चूर्ण लें।

२९. सिर दर्द—रात को हरीतकी खण्ड लेकर पेट साफ़ रखें और प्रातः सायं लक्ष्मीविलास दूध के साथ लें।

३०. सूखी खांसी तालिसादि चूर्ण शहद के साथ लें।

३१. हिस्टीरिया—सुबह १ गोली लक्ष्मीविलास दूध के साथ, शाम को ६ माशा ब्राह्मी घृत दूध के साथ खाना चाहिये। ब्राह्मी तेल की सिर पर मालिश करें। हिस्टिरिया रसायन का सेवन करें।

## औषधि प्रयोग सम्बन्धी कुछ आवश्यक निर्देश—

१. वत्सनाभ (मीठा तेलिया) घटित औषधियां शीतांग ज्वर, पुराना बुखार, हैजा और हृदय के रोगों में नहीं देनी चाहिए. क्योंकि वत्सनाभ शीघ्र ही मूत्र और पसीना लाकर शरीर की गर्मी को कम करता है और हृदय को कुछ अंशों तक शिथिल बनाता है। उपरोक्त अवस्थाओं में यदि वत्सनाभ वाली औषधि देना अनिवार्य ही हो जाये तो बहुत सावधानी से और कम मात्रा में देनी चाहिये।

२. नवीन और तीक्ष्ण वातप्रकोप में कुचला हानि पहुँचाता है, किन्तु पुरानी वातव्याधि में अत्यन्त हितकर है।

३. पारद मिश्रित औषधियां सगर्भा स्त्री, दुर्बल, वृक्कशोथ युक्त पांडु, एवं कण्ठमाला के रोगी को कम अनुकूल पड़ती हैं। किन्तु स्त्रियोंके गर्भाशय और योनि के रोगों में हितकर हैं। साथ ही बालकों को भी दी जा सकती हैं।

४. सोमल (संखिए) वाली औषधियां घी, दूध, पिला कर ही देना चाहिएं। सन्निपात में यदि पित्त प्रकोप से प्रलाप होता हो, नेत्र लाल हों और मूर्छा आदि उपद्रव हों तो संखिये वाली औषधियां नहीं देनी चाहिएँ। शीतांग सन्निपात में संखिए वाली औषधियां शीघ्र ही लाभ दिखाती हैं। जो बुखार बार बार पसीना आकर उतर जाता है वहां रोगी की शारीरिक उष्णता के घटने का भय बना रहता है अतएव संखिया घटित औषधियां लाभ करती हैं।

५. हरताल भस्म और हरताल मिश्रित औषधि उग्र होती है, अतः पित्त प्रकोप में पित्त प्रधान वातरक्त में पैत्तिक कुष्ठ में हानिकारक हैं।

६. ताम्र भस्म, वृक्क शोथ से उत्पन्न हुये उदर रोग में हानिकारक है, इससे उदर में जल संचय का भय रहता है।

स्वर्ण माक्षिक भस्म क्विनीन के विष को अति शीघ्र दूर करती है किन्तु नवीन और तीव्र ज्वर में नहीं देनी चाहिये।

८. मृगशृङ्ग भस्म, कफ प्रधान कास श्वास और न्यूमोनिया में हितकर है किन्तु वातजन्य सूखी खांसी में नहीं देनी चाहिये।

९. अफीम घटित औषधियां बालकों को बहुत सावधानी से और कम मात्रा में देनी चाहिए। रक्तार्श और रक्तातिसार में जब तक दूषित और कच्चा आम गिरता हो तब तक अफीम वाली औषधियां न दें। सगर्भा स्त्री और हृदय के रोगी को अफीम घटित औषधियां कदापि नहीं देनी चाहिएं।

# प्रसिद्ध शास्त्रीय आयुर्वैदिक औषधियां

## पटियाला च्यवनप्राश अवलेह (अष्टवर्ग युक्त)

बल बढ़ाने तथा फ़ेफड़े सम्बन्धी विकारों को दूर करने के लिये च्यवनप्राश आयुर्वेद की एक ख्याति प्राप्त औषधि है। इसके निर्माण में आमला एक मुख्य वस्तु है। आधुनिक विज्ञान यह बताता है कि आमले के बराबर विटामिन 'सी' अन्य किसी वस्तु में नहीं होता। विटामिन 'सी' शरीर में प्रबल रोगप्रतिरोधक शक्ति पैदा करता है अनेक प्रकार के आंतों, फेफ़ड़ों, दांतों, हृदय और अस्थियों के रोग शरीर में विटामिन 'सी' के अभाव से उत्पन्न होते हैं।

च्यवनप्राश के सेवन से शरीर में निहित विटामिन 'सी' पर्याप्त मात्रा में पहुँचता है। जिससे शरीर में प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है और अनेक रोगों के होने की सम्भावना नहीं रहती। कफ; खांसी, दमा, बार बार जुकाम, नजला होना, हृदय दौर्बल्य आदि विकार दूर होते हैं। इसके अतिरिक्त अष्टवर्ग, वंशलोचन, आदि अनेक रसायन गुण युक्त औषधियों का सम्मिश्रण होने के कारण शरीर की धातुओं तथा शरीर के हर एक कण को नवजीवन और बल मिलता है। च्यवनप्राश बच्चे, बूढ़े जवान स्त्रियों सब के लिये समान हितकारी है। किन्तु च्यवनप्राश से शास्त्रों में कथित गुण तब ही हासिल हो सकते हैं जबकि शास्त्रोक्त विधि से इसका निर्माण किया जावे। हम इस बात को गर्व से घोषित करते हैं कि हमारा **च्यवनप्राश** हमेशा शास्त्रीय विधि विधान से बनाया जाता है अतएव पूर्ण लाभदायक सिद्ध होता है।

**सेवन विधि**—एक तोला च्यवनप्राश सुबह शाम दूध के साथ अथवा वैद्य के आदेशानुसार सेवन करें।

**नोट**—च्यवनप्राश की मात्रा क्रमशः बढ़ाकर तीन तोले तक की जा सकती है। च्यवनप्राश खाकर दूध पीने की अपेक्षा च्यवनप्राश को थोड़े दूध में घोल कर पीने से इसका शरीर में अधिक असर होता है। जो व्यक्ति अधिक दूध पीना चाहें वे बाद को और दूध पीवें। बहुत से रोगियों को दूध से कफ अथवा वायु की वृद्धि हो जाया करती है, और वे

दुग्ध जैसी पूर्णाहार वस्तु के गुणों से वंचित रह जाते हैं, ऐसे रोगियों को दुग्ध में च्यवनप्राश मिला कर लेने से कोई विकार नहीं होता, और दूध के गुणों का पूर्ण लाभ उठा सकते हैं।

कीमत—१० तोला पैकिंग १), २० तो० पैकिंग शीशी २), २० तो० डिब्बा १॥), ४० तो० डिब्बा ३।), १ सेर डिब्बा ६)।

## द्राक्षासव

द्राक्षासव आयुर्वेद की ख्याति प्राप्त औषधि है। इसके सेवन से शारीरिक दुर्बलता, खून की कमी, पाचन दोष, खांसी, फेफड़ों और हृदय की कमजोरी, कब्ज, सुस्ती, नाड़ी दौर्बल्य आदि रोग दूर होकर शरीर में शक्ति स्फूर्ति और उत्साह की वृद्धि होती है।

**मात्रा**—१ तोले से २ तोले तक समान भाग जल मिला कर दिन में दो बार भोजन के बाद पीना चाहिये।

पथ्यापथ्य—रोग के अनुसार करें।

कीमत— चार औंस पैकिंग ॥=), आठ औंस पैकिंग १=), पौंड पैकिंग २)

## वसन्त कुसुमाकर रस

मधुमेह, प्रमेह, नपुंसकता, शारीरिक दौर्बल्य, ज्वर, कास हृदय की कमज़ोरी, पांडु, रक्ताल्पता एवं अन्य क्षीणकारी रोगों में वसन्त कुसुमाकर का सेवन पूर्ण लाभदायक सिद्ध होता है। इसके सेवन से विशेषतया शारीरिक बल वृद्धि होती है। जिससे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता दृढ़ होती है।

**मात्रा व अनुपान**—½ रत्ती से २ रत्ती तक मधु अथवा दुग्ध के साथ रोग की दशा के अनुसार।

पथ्यापथ्य—रोग की दशा एवं वैद्य के आदेशानुसार करना चाहिए। कीमत—=) भर (१॥ माशा) ४।), ३ माशा पैकिंग ८॥), ६ माशा पैकिंग १६॥), १ तोला पैकिंग ३२)।

## महानारायण तैल

नाना प्रकार के वात विकारों के लिये महानारायण तैल आयुर्वेद की ख्याति प्राप्त औषधि है। कटि वेदना, गृध्रसीवात, पक्षाघात, अर्दित लकवा कम्पवायु आदि समस्त वाय रोगों में महानारायण तैल की मालिश से पूर्ण लाभ होता है।

**प्रयोगविधि**—पूर्ण गुण लाभ के लिये रात को सोते समय तैल की मालिश करनी चाहिये, ताकि रात भर में पूरा असर हो सके। सुबह साबुन और गरम पानी से स्नान करें या रुग्ण स्थान को धोवें।

विशेष लाभ के लिये महायोगराज गुग्गुल का भी साथ साथ सेवन करना चाहिये।

**पैकिंग तथा मूल्य**—२ औंस शीशी १), ४ औंस २)

## पटियाला महायोगराज गुग्गुल

(सवा लाख चोट का सप्तधातु युक्त)

अनेक व्याधियों में महायोगराज गुग्गुल सफलता पूर्वक कार्य करता है। जिन रोगियों को कब्ज रहती हो उन्हें पहिले एरण्ड तेल के विरेचन द्वारा कोष्ठ शुद्धि करके महायोगराज गुग्गुल का इस्तेमाल कराना चाहिये। सात तरह की भस्मादि मिश्रण के कारण वात व्याधियों के अतिरिक्त महायोगराज गुग्गुल अन्य अनेक रोगों में पूर्ण लाभकारी सिद्ध होता है।

**मात्रा**—१ से ४ वटी तक रोग की तीव्रता एवं रोगी के बलाबल

अथवा चिकित्सक के आदेशानुसार।

**अनुपान**—वात व्याधि में महारास्नादि क्वाथ के साथ। तीव्र वात विकारों में १ छटांक एरण्ड तेल में महा योगराज गुग्गुल घोल कर और आध सेर गर्म दूध और एक छटांक मिश्री मिलाकर पीने से एक सप्ताह में बहुत आराम होता है।

यकृत् में पित्त जमा हो जाने पर तथा अन्य पित्त विकारों में—काकोल्यादि गण के क्वाथ से।

कफ दोषों में—आरग्वधादि गण के क्वाथ से।

पांडु तथा जीर्ण रोग में—बिना व्याई गौ के मूत्र से।

भेद वृद्धि और स्थौल्य में—शहद के साथ।

कुष्ठ रोग में— नीम के पंचांग के क्वाथ से।

उदर रोग तथा शोथ में—पुनर्नवा क्वाथ से।

वात रक्त में – गिलोय के स्वरस अथवा क्वाथ से।

चूहे काटे के विष में—पाठा के क्वाथ से।

पक्षाघात अर्दित आदि में—अश्वगन्धादि क्वाथ के साथ।

पथ्यापथ्य—रोग की दशा के अनुसार करना चाहिये।

पैकिंग—३ माशा ।=), ६ मा. ॥≈), १ तो. १।), ५ तो. ५॥), १० तो. १०)
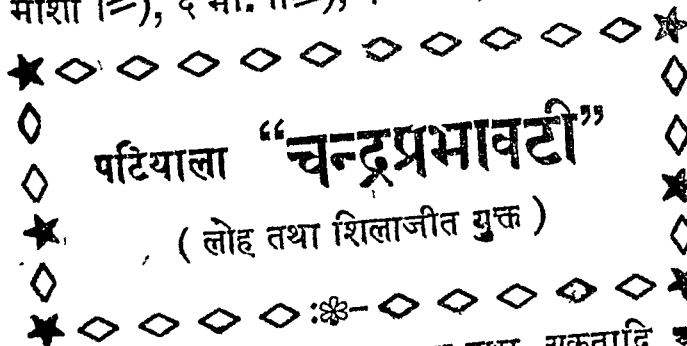
'चन्द्रप्रभावटी' प्रमेह, मूत्र रोग, दुर्बलता, रक्ताल्पता तथा यकृतादि अनेक रोगों में सतत लाभदायक प्रमाणित होती है। 'चन्द्रप्रभावटी' का प्रयोग क्षेत्र बहुत व्यापक है। अनुपान भेद से अनेक रोगों में इसके द्वारा पूर्ण लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

स्वप्नदोष शीघ्रस्खलन आदि दशाओं में कामेन्द्रियों और ग्रन्थियों में उत्तेजना और प्रदाह उत्पन्न हो जाया करता है। ऐसी दशा में चन्द्रप्रभा के

सेवन से पूर्ण लाभ होता है।

वृक्कों के प्रदाह अथवा वायु और कफ दोष से जब वृक्क क्षुब्ध हो जाते हैं, तो मूत्र बहुत कम मात्रा में बनता है, तथा यदि वृक्क ठीक हों किन्तु मूत्राशय का मूत्र मार्ग के विकार से मूत्र त्याग कमी से होता हो, मूत्र त्यागने में जलन अथवा कष्ट हो, मूत्र नाली में ज़ख्म हो गये हों तो इन सब दशाओं में चन्द्रप्रभा उत्तम कार्य करती है।

लोह और शिलाजीत युक्त होने के कारण यह यकृत् की कार्य शीलता को बढ़ाती है, यकृत के विकारों को दूर कर उसे बल देती है चन्द्रप्रभा में लोह की उपस्थिति रक्त के लाल कणों को बढ़ाती है और रक्ताल्पता को दूर करती है।

स्त्रियों का प्रदर; दुर्बलता और गर्भाशय रोगों में भी चन्द्रप्रभा के सेवन से खूब लाभ होता है।

मात्रा—१ से ४ वटी तक रोगी के बलाबल एवं रोग की दशा के अनुसार।

अनुपान—स्वप्नदोष तथा अन्य प्रकार के प्रमेहों में दूध के साथ।
पैकिंग—१० तो. ५॥, ५ तो. ३), १ तो. ॥।), ६ मा. ।≡), ३ मा. ।)

## पटियाला "सुपारी पाक"

(लोह भस्म, त्रिवंग भस्म तथा कैलशियम युक्त)

### महिला रोगों की एकमात्र औषधि

स्त्री रोगों को दूर करने के लिये 'सुपारी पाक' आयुर्वेद की एक ख्याति प्राप्त औषधि है। महिलाओं का श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर, वातज कफज, पित्तज और द्वन्द्वज प्रदर गर्भाशय विकार, मासिक धर्म के विकार आदि स्त्री रोग इसके सेवन से दूर होते हैं। स्त्रियों के इन रोगों के कारण उनका स्वास्थ्य भी गिर जाया करता है तथा शरीर दुर्बल हो जाता है। सुपारी पाक की यह विशेषता है कि जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोगों को दूर करने

के साथ-साथ अपने रसायन गुणों द्वारा महिलाओं के स्वास्थ्य और सौन्दर्य की वृद्धि करता है।

जिन महिलाओं का रोग पुराना हो गया हो उन्हें अधिक दिन तक सुपारी पाक का सेवन करना चाहिये। अपितु प्रत्येक महिला रोगिणी को स्वास्थ्य लाभ होने के कुछ दिन बाद तक इसका सेवन करते रहना चाहिये।

मात्रा और अनुपान—६ मा. १ तोला तक, सुबह शाम दूध के साथ।

पथ्यापथ्य—लाल मिर्च, खटाई अधिक मिठाई का प्रयोग नहीं करना चाहिये। बासी, गरिष्ठ भोजन तथा पक्वान्न आदि न खाए। ताजा हल्का भोजन, दूध, घी, ताजा फल और हरे शाक हितकारी हैं।

नोट—जिन महिलाओं के हथेली और तलुओं में दाह रहती हो, उन्हें सुपारी पाक का सेवन बकरी के दूध के साथ करना चाहिये। सुपारी पाक का सेवन जाड़ा, गरमी बरसात सभी ऋतुओं में समान लाभकारी है।

पैकिंग—१० तोला सुन्दर शीशी १॥)

## ※ लवण भास्कर चूर्ण ※

(भूख को तेज करने वाला तथा पचाने वाला)

हाज़मे के लिए प्रसिद्ध चूर्ण है। इसका सेवन करने से भूख लगने लगती है। अरुचि दूर होती है, दस्त साफ होता है। वायु गोला, प्लीहा वृद्धि संग्रहणी, उदर शूल, अच्छे होते हैं।

मात्रा—१½—३ माशा भोजन के उपरांत दोपहर या रात्री को पानी लें। संग्रहणी में दही की लस्सी के साथ भी दे सकते हैं।

पैकिंग—१० तोला शीशी १) ५ तोला शीशी ॥)
२॥ तोला शीशी ।=)

## सितोपलादि चूर्ण

(खांसी तथा राजयक्ष्मा नाशक)

यह प्रसिद्ध योग दमा, खांसी, हाथ पैर की जलन, मन्दाग्नि, अरुचि, पसलियों का दर्द जीर्ण ज्वर और रक्तपित्त को तुरन्त शान्त कर देता है। बलगमी खांसी में विशेष लाभदायक है। वंशलोचन इसका विशेष अंश है।

मात्रा तथा अनुपान—१½-२ माशा तक दिन में ३ बार मधु मिला कर चटाना चाहिये ।

पैकिंग—१० तोला शीशी १।।।), ५ तो० शीशी ।।।≈), २½ तो० शीशी ।।)

## हिंग्वाष्टक चूर्ण

अरुचि, अपचन, पेट का दर्द, अफारा, वायुगोला की शिकायत को दूर करता है । हींग का विशिष्ट योग है । असली हींग हीरा इसमें प्रयोग में लाई जाती है ।

मात्रा तथा अनुपान—१ से ३ माशा तक भोजन के प्रथम ग्रास में घी के साथ लेना चाहिये । पेट दर्द की तीव्रता में गरम पानी से दिन में २-३ बार दे सकते हैं ।

पैकिंग—१० तो० शीशी १।।), ५ तोला शीशी ।।।−), २।। तो. शीशी ।≡)

## महासुदर्शन चूर्ण

(ज्वर नाशक)
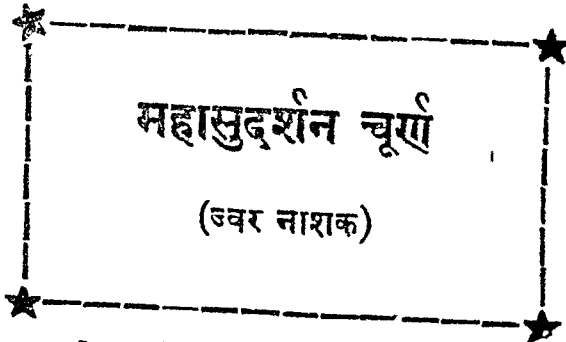
आयुर्वेद का प्रसिद्ध योग विषम ज्वर (मलेरिया) नाशक है । इकतरा, तया, चौथय्या, पुराना ज्वर, जाड़ा बुखार आदि में विशेष लाभदायक है । कई बार कुनैन भी असफल हो जाती है । उस अवस्था में अद्भुत चमत्कार प्रदर्शन करता है । पांडु हृदय रोग, कामला और कमरदर्द में लाभदायक है ।

मात्रा तथा अनुपान—३ से ६ माशा गर्म पानी, ताजा पानी अथवा सिकंजवीन के साथ दें ।

पैकिंग—१० तोला शीशी १), ५ तोला ।।−), २½ तोला ।−) ।

## त्रिफला चूर्ण

त्रिफला चूर्ण एक घरेलू दवाई है जिस की उपयोगिता से सभी परिचित हैं। यह चूर्ण पेट को नियमित रखता है। इसलिये मन्दाग्नि, पुराने दस्त, हिचकी और उदरशूल में बहुत व्यवहार में आता है। आंखों के रोग में खाने के लिये यह चूर्ण उत्तम औषध है। त्रिफला को भिगोकर अथवा उबाल कर छान कर उसका पानी आंखों को और घाव धोने के लिये और मुख के छालों में कुल्ला करने में भी काम आता है।

मात्रा तथा अनुपान—३-६ माशा तक दूध या पानी के साथ लें। आंख के रोगों में महात्रिफला घृत भी सेवन करना चाहिये।

पैकिंग—१० तोला शीशी ।।।), ५ तोला शीशी ।≡) २½ तोला ।)।
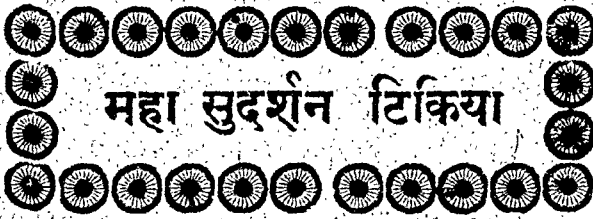
## महा सुदर्शन टिकिया

उपयोग—सुदर्शन चूर्ण समान।

वृहत् सुदर्शन चूर्ण कड़वा होने के कारण कई व्यक्ति खा नहीं सकते। उनके लिये सुदर्शन टिकिया व्यवहार में आती है।

मात्रा तथा अनुपान—दो दो टिकिया दिन में ३ बार गरम पानी या शिकंजवीन से दें।

पैकिंग—१० तोला १।≈), ५ तो. ।।।), २½ तो. ।≡)।
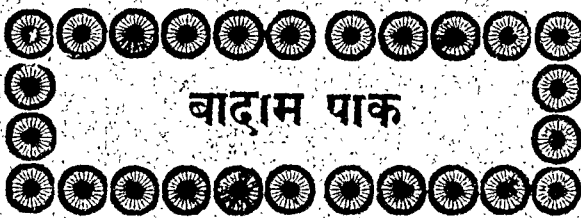
## बादाम पाक

मस्तिष्क एवं हृदय की कमजोरी तथा शुक्रनाशक, नेत्र एवं शिरोरोग में लाभदायक है। सर्दियों में सेवन करने योग्य रसायन है।

मात्रा—आधा तोला। गरम दूध के साथ।

पैकिंग—१० तोला शीशी २), ५ तोला १)।

## श्री मदनानन्द मोदक

(भांग मिश्रित योग है)

नपुंसकता, वीर्यक्षीणता, शीघ्रपतन आदि दोषों को दूर करता है। वीर्य-वर्द्धक, स्तंभककामोद्दीपक व बलवर्द्धक है। वैद्य के आदेशानुसार सेवन करें।

मात्रा—१½ से ३ मा० गरम दूध के साथ।

पैकिंग—५ तो. शी. १) २½ तो. ॥—)

## शिवाक्षार पाचन चूर्ण

अपचन, शूल, हैजा, अजीर्ण, दस्त, वमन में विशेष लाभदायक है।

मात्रा—३ मा० से ६ मा० तक दिन में २–३ बार पानी तक आदि के साथ अवस्थानुसार लें।

पैकिंग—५ तोला शीशी ॥=)

२½ तोला ।=)

## वासावलेह

राजयक्ष्मा, खांसी, भयंकर श्वास, पार्श्वशूल, हृदय रोग, रक्त पित्त और ज्वर में लाभदायक है।

मात्रा—६ माशा मधु के साथ मिला कर दें। अथवा पानी के साथ दें।

पैकिंग—१० तोला शीशी १)

२० तोला शीशी १॥।)

## मूसली पाक

अत्यन्त बल वीर्य वर्धक है। धातुक्षीणता, नामर्दी एवं वीर्य के पतलेपन को दूर कर शरीर को स्वस्थ बनाने में सर्व श्रेष्ठ है। सर्दियों में इसका सेवन जरूर करना चाहिये।

मात्रा—६ मा० से १ तोला गरम दूध के साथ।

पैकिंग—१० तोला शीशी १।)

## स्वादिष्ट विरेचन चूर्ण

प्रातः या रात को सोते समय खाने से दस्त साफ आता है। बवासीर, मरोड़ आदि में लाभदायक है।

मात्रा—३ से ६ माशा। पानी या दूध के साथ लें।

पैकिंग—५ तोला शीशी ॥=) २½ तोला ।=)।

## स्वर्ण वंग राजवंगेश्वर

प्रमेह, दुर्बलता, स्वप्नदोष, मूत्र रोग, काम शैथिल्य आदि रोगों में स्वर्णवंग का सेवन पूर्ण लाभकारी सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त

अनुपान भेद से अन्य अनेक रोगों में पूर्ण लाभदायक है। स्वर्ण वंग वृष्य होने के साथ साथ मूत्रल भी है और वृक्कों को क्रियाशील बनाती है। मूत्रांगों और काम ग्रन्थियों के प्रदाह और भारीपन को दूर करती है।

मात्रा—एक रत्ती से ४ रत्ती तक, रोगी के बलाबल एवं रोग की दशा के अनुसार।

अनुपान—प्रमेह तथा स्वप्नदोष में—एक माशा दारुहल्दी के चूर्ण एवं मधु के साथ।

मूत्राल्पता सुजाक तथा मूत्राघात में—गोक्षुरू आदि क्वाथ के साथ।

मूत्र की अधिकता और मसाने की कमजोरी में-शिलाजीत के साथ।

काम शैथिल्य अथवा नपुंसकता में—अश्वगन्धादि चूर्ण के साथ।

बलवर्धन अथवा रसायन गुण प्राप्ति के लिये शतावरी चूर्ण के साथ।

पथ्यापथ्य—लाल मिर्च, अधिक खट्टे, तेज, चरपरे, मसालेदार भोजन नहीं करने चाहिएं।

पैकिंग—१ तोला २।), ६ माशा १।), ३ माशा ।।≈)।

## कर्पूर वटी [कर्पूर रस] अतिसारे

आंतों की धारक शक्ति कम हो जाने पर तथा पाचन क्रिया के बिगड़ जाने से अतिसार आमातिसार आना, आंव के साथ खून आना, शौच जाते समय ऐंठनी होना, टांगों में दर्द रहना आदि विकार पैदा हो जाते हैं। इन रोगों में कर्पूरवटी के सेवन से पूर्ण लाभ होता है। कर्पूरवटी से आंतों की धारक शक्ति बढ़ती है। बिगड़ी हुई पाचन क्रिया में पूरा सुधार हो जाता है। कर्पूर वटी मल को बांधती है और विष पैदा करने वाले कीटाणुओं और उनके विष का नाश करती है।
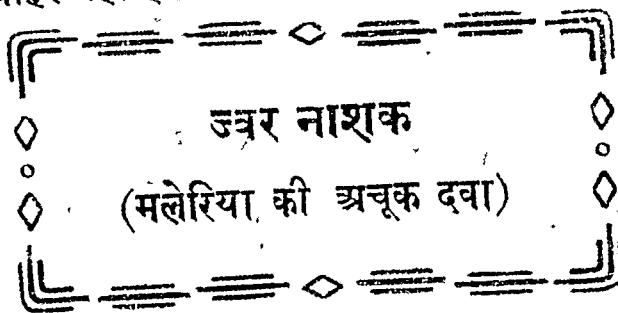
मात्रा एवं अनुपान—१ से २ वटी तक दिन में दो या तीन बार रोग की दशा के अनुसार जल अथवा सौंफ के अर्क से वैद्य परामर्श से देनी चाहिये।

पथ्यापथ्य—रोग की तीव्र दशा में मौसम्मी, नींबू, अनार का रस देना चाहिये, अन्न बिल्कुल न दें। जीर्ण रोगियों को दही चावल, या खिचड़ी खानी चाहिये। तेज मिर्च मसाले बिलकुल न खाएँ।

पैकिंग—३ माशा ।।।≈), ६ माशा १।।≈), १ तोला शीशी ३)।

## स्वर्ण वसन्त मालती

जीर्ण ज्वर, जीर्ण कास, यक्ष्मा, दुर्बलता, पांडु, हृदय दौर्बल्य स्नायु दौर्बल्य आदि रोगों में वसन्त मालती के प्रयोग से निश्चित लाभ प्राप्त होता है। वसन्त मालती धातु गत ज्वरों में पूर्ण लाभदायक सिद्ध होती है। क्षयकारी रोगों में धातुओं के क्षीण हो जाने से शारीरिक बल का क्षय होने लगता है। वसन्त मालती के सेवन से धातु गत रोग विष दूर होकर धातुएं पुष्ट होती हैं और जीर्ण ज्वर आदि रोगों में पूर्ण लाभ प्राप्त होता है।

सेवन विधि ½ रत्ती से २ रत्ती तक रोग दशा एवं रोगी के बलाबल के अनुसार मधु अथवा अन्य उपयुक्त अनुपान से सेवन करनी चाहिये।

पथ्यापथ्य—रोग की दशा तथा वैद्य की सम्मति अनुसार करें।

कीमत—३ माशा ६), ६ मा० १५।); १ तोला पैकिंग २४)

## सत शिलाजीत सूर्यतापी

शिलाजीत एक प्रकृतिदत्त योगवाही रसायन है जो अनुपान भेद से अनेक रोगों में लाभ करती है।

मात्रा—१ रत्ती से १ मासे तक रोग की दशा के अनुसार।

अनुपान—मस्तिष्क की कमजोरी में-ब्राह्मी चूर्ण के साथ।

बल वर्धन और कामशक्ति के लिये—दूध के साथ।

मूत्र रोगों में—गोक्षुरादि क्वाथ के साथ।

नेत्र रोगों में त्रिफला हिम के साथ।

पाचन और यकृत सम्बन्धी विकारों में त्रिफला चूर्ण के साथ।

स्नायु दुर्बलता में अश्वगन्धादि चूर्ण के साथ।

वात वेदना में—गरम जल के साथ।

कीमत—१ तोला पैकिंग—।।।), ५ तोला पैकिंग ३)

जिस सावधानी और तत्परता से हमारे यहां शास्त्रीय औषधियां तैयार की जाती हैं उतने ही परिश्रम से हमने पेटेंण्ड औषधियों का निर्माण किया है। इनके फार्मूले (नुस्खे) को सैकड़ों बार परीक्षा करने के बाद हमने पेटेण्ट रूप में जनता के सामने बिक्री के लिये उपस्थित किया है। पूर्ण रूप से अनुभूत होने के कारण ही हमारी पेटेण्ट औषधियां बहुत थोड़े समय में ही जनता में लोकप्रिय हो गई हैं। हमारी इन पेटेण्ट औषधियों में कोई भी विषैली या तेज़ दवा नहीं मिलाई जाती है। इसलिये इनके सेवन से किसी प्रकार का कोई भी अवगुण उत्पन्न नहीं होता। जहां अच्छे चिकि-त्सक नहीं होते वहां इन औषधियों की सहायता से कठिन से कठिन रोगों से छुटकारा पाया जा सकता है। बहुत से रोगियों ने हमारे पास इन पेटेण्ट औषधियों के विषय में स्वयं ही प्रशंसा पत्र लिख कर भेजे हैं। अनेक रोगियों के साथ ऐसा भी हुआ है कि अनेक वैद्य डाक्टरों का इलाज कराने पर भी उनके रोग अच्छे नहीं हुये और हमारी पेटेण्ट औषधियों का सेवन करने से वे रोग मुक्त और स्वस्थ हो गये। साथ ही हमने इन औषधियों के मूल्य इतने उचित रखे हैं जो कि जन साधारण की क्रय शक्ति के बाहर नहीं हैं।

यह औषधि मलेरिया की प्रत्येक अवस्था में अमृत समान गुणकारी है। जहां 'ज्वर नाशक' का प्रयोग होता है वहां मलेरिया नहीं ठहरता !

सरहिंद ❀ जबलपुर ❀ जालन्धर ❀ हैद्राबाद।

एकतरा, तिजारी और चौथिया भी मलेरिया के भेद हैं। ज्वर नाशक इन सब को शर्तिया आराम देता है। मलेरिया पीड़ित रोगियों के अक्सर जिगर और तिल्ली बढ़ जाया करते हैं और शरीर में खून की कमी हो जाती है। ज्वर नाशक इन सभी विकारों को दूर करता और ताकत देता है। भूख और हाजमे की शक्ति को बढ़ाता है। अधिक मलेरिया ग्रस्त क्षेत्रों में रहने वाले स्वस्थ व्यक्ति भी यदि दूसरे तीसरे दिन ज्वर नाशक की एक एक खूराक पीते रहें तो ज्वर आने का भय नहीं रहता। क्विनीन के समान ज्वर नाशक से कोई गर्मी, खुश्की, सिर चकराना, अथवा कानों में गुञ्जार पैदा नहीं होती। ज्वरनाशक मलेरिया को दूर करने की एक निर्दोष दवा है।

मूल्य—दो औंस (१६ मात्रा) की शीशी सुन्दर पैकिंग १)

## मलेरिया वटी

यह भी ज्वर नाशक के समान ही उपकारक है। जो लोग पीने की दवा से परहेज करते हों अथवा औषधि के स्वाद से डरते हों उनके लिये मलेरिया वटी अत्यन्त सुविधाजनक है। बच्चे इसे आसानी से निगल सकते हैं तथा गर्भिणी स्त्रियों को भी निःसंकोच दी जा सकती है। मलेरिया वटी का निर्माण शुद्ध आयुर्वेदीय औषधियों द्वारा किया जाता है। इसे चढ़े हुये ज्वर में भी दिया जा सकता है, इसके प्रभाव से ज्वर आसानी से उतर जाता है। मूल्य—॥० टिकिया सुन्दर पैकिंग १॥)

## पटियाला बाल कढ़ू

(बच्चों के प्रत्येक विकार में अत्यन्त उपयोगी)

अनेक कारणों से छोटे बच्चों को दूध डालना, बदहजमी, दस्त हो जाना, कब्ज पड़ना, उदर कृमि, बार बार खांसी जुकाम होना, प्रायः नाक

बढ़ना, बुखार, पेट का दर्द, पेट का फूलना, कमेड़े तथा यकृत
[illegible] बढ़ना, बुखार, पेट का दर्द, पेट का फूलना, कमेड़े तथा यकृत
के विकार हो जाते हैं। पटियाला का बाल घट्टू इन समस्त विकारों की
एक उत्तम औषधि है। उपरोक्त शिकायतों को दूर करने के साथ ही साथ
ही साथ बालघट्टू के सेवन से बच्चे का हाज्मा दुरुस्त होता है, भूख
लगती है और बच्चा स्वस्थ, प्रसन्न एवं निरोग रहता है। समस्त बाल
रोगों में यह दवा तारीफ के लायक है। यह औषधि एक मास से कम
आयु वाले बच्चे को भी बिना किसी हानि के सुगमता पूर्वक दी जाती है।

मात्रा—एक मास तक के बच्चे को २-२ बूंद सुबह शाम माता के
दूध अथवा जल में मिलाकर देनी चाहिये। मात्रा में हर मास के साथ दो
बूंद बढ़ानी चाहिये।

पथ्य—बच्चे की रुग्ण दशा में माता को हलका भोजन कराना
चाहिये जैसे मूँग की दाल रोटी, हरी तरकारियां फल तथा दूध आदि पथ्य
हैं। गरिष्ट तथा बासी भोजन, अधिक मिर्च मसाले तथा पक्वान्न न खाएं।

मूल्य—१ औंस पैकिंग ।-), २ औंस पैकिंग ।।), ४ औंस १)।

## पटियाला बालन्त काढ़ा नं० १
(प्रसव पश्चात् पहिले दस दिन में देने का)

शिशु प्रसव के बाद वास्तव में प्रसूता (जच्चा) स्त्री की हालत बड़ी
नाजुक हो जाती है—प्रसव पीड़ा तथा रक्त-स्राव के कारण प्रसूता बहुत
कमजोर हो जाती है, इसी कमजोरी के कारण उसके शरीर की रोग प्रति-
रोधक शक्ति भी बहुत कम हो जाती है। ऐसी अवस्था में उसे कोई भी
रोग बड़ी आसानी से दबा लेता है। अनेक स्त्रियों को तो ऐसे समय के
लगे हुये रोग जिन्दगी भर परेशान करते हैं और अनेक स्त्रियां प्रसूतावस्था
में ही भयानक रोगों का शिकार होकर प्राणों से हाथ धो बैठती हैं; उदाहरण
के लिये प्रसूता का जहरबाद (Septicimia) ही एक ऐसा रोग है जो
प्रसूता की जान ले लेता है। इसलिए जच्चा को ऐसी औषधि की अत्यन्त
आवश्यकता रहती है, जो रोगों से उसकी रक्षा करे तथा उसकी प्रतिरोधक
शक्ति को बढ़ाये। टियाला का बालन्त काढ़ा नं० १—प्रसूता को पहले
१० दिन तक सेवन कराने से कोई रोग बढ़ने का खतरा नहीं रहता। इसके

सेवन से प्रसूता का ज्वर, खांसी, कमेड़े, कमजोरी के कारण आने वाली मूर्च्छा, शरीर में कम्प होना, अधिक वायु गुल्म (वाय गोला) पर इसका उपयोग बहुत अच्छा होता है।

मात्रा—१ तोला काढ़े में सेंधा नमक ४ रत्ती तथा हींग १ रत्ती मिला कर देना चाहिये। साधारणतः काढ़ा सुबह शाम दो बार दें। किन्तु यदि गुल्म शूल अधिक हो तो तीन बार देना चाहिये। भोजन लघु और सुपाच्य दें। मूल्य—८ औंस पैकिंग १।)

## पटियाला बालन्त काढ़ा नं० २

(प्रसव के दस दिन के बाद देने का)

प्रसव के पश्चात् वास्तव में १। महीने तक प्रसूता पूर्ण शारीरिक स्वास्थ्य लाभ नहीं कर पाती। पहले दस दिन तक उसके शरीर की हालत अधिक नाजुक रहती है, और तीव्र रोगों के संक्रमण का भय रहता है। किन्तु दस दिन बाद हालत में परिवर्तन हो जाता है। इस बाद की हालत में तीव्र रोगों का भय प्रायः उतना नहीं रह जाता किन्तु कुछ स्थायी और पुराने पड़ जाने वाले (chronic) रोगों का भय बना रहता है; जैसे सूक्ष्म ज्वर हो जाना, खांसी रहने लगना, पाचन के विकार, रक्ताल्पता, अतिसार, संग्रहणी, पेचिश, बवासीर, गर्भाशय के रोग, स्नायविक विकार, जनन अंगों की कमजोरी, क़ब्ज इत्यादि। इन रोगों से रक्षा करने के लिए पटियाला का बालन्त काढ़ा नं० २ अत्युत्तम है। उपरोक्त रोगों का नाश करने के साथ ही साथ यह काढ़ा जच्चा के बल और वर्ण की वृद्धि करता है। तथा पुनः स्वास्थ्य प्राप्ति में पूरी सहायता करता है। इसके सेवन से प्रसूता को अच्छा दूध भी उतरता है और इस निरोग दूध से बच्चा भी स्वस्थ तथा रोग मुक्त रहता है।

मात्रा—½ तोला से १ तोले तक दिन में दो बार भोजन के लगभग १॥ घण्टे पहले सेवन करना चाहिये।

यह काढ़ा चुनी हुई उन उत्तम औषधियों से बनाया जाता है जो आयुर्वेद में प्रसूत के लिये अत्यन्त हितकर मानी गई है। औषधि चयन

में पूरी सावधानी बरती जाती है इसी कारण हमारे काढ़े का असर बहुत अच्छा होता है।

मूल्य—८ औंस पैकिंग १।)

## संजीवनी

### श्वास (दमे) की बेजोड़ दवा

दमा एक मृत्यु समान कष्टदायक रोग है। रोगी को जब इस रोग का दौरा पड़ता है तो प्राणांतक कष्ट होता है किन्तु संजीवनी की दो टिकिया खाते ही उसका दौरा शांत हो जाता है और वह प्राणान्तक कष्ट से छुटकारा पाकर चैन की सांस लेता है। संजीवनी सोमकल्प मिश्रण से तैयार किया हुआ एक योग है जो दमे के रोगियों के लिये वरदान साबित होता है। पुराने अथवा नये दमे में संजीवनी समान रूप से कार्य करती है जिन रोगियों को श्वास में कष्ट से बलगम निकलता है। संजीवनी बलगम को आसानी से निकाल कर रोगी को शान्ति प्रदान करती है। वृद्धावस्था की पुरानी खांसी में संजीवनी के सेवन से पूर्ण लाभ होता है। नियम पूर्वक संजीवनी के सेवन करने से हृदय और फेफड़ों को बल प्राप्त होता है। जिससे रोग में स्थायी लाभ होता है। संजीवनी किसी प्रकार की खुश्की या गर्मी नहीं करती और पूर्ण रूप से हानि रहित है।

मूल्य—५० टिकिया सुन्दर पैकिंग २)

## बाल घुट्टी

### (बच्चों के अनेक रोगों में अकसीर)

यह बाल घुट्टी बच्चों के लिये अमृत समान हितकारी है। बच्चों का दूध डालना, कब्ज, बुखार, खांसी जुकाम, हरे पीले दस्त तथा दांत निकलने के समय होने वाले विकारों में इसके सेवन से पूर्ण लाभ होता है।

मूल्य—½ औंस शीशी ।)

**पटियाला आयुर्वेदिक फार्मेसी**

## प्रदर नाशक वटी

प्रदर को नाश करने वाली अनेक काष्टादि औषधियों तथा भस्मों के मिश्रण से 'प्रदर नाशक वटी' तैयार की गई है। सच तो यह है कि प्रदरनाशक वटी का नुस्खा इतना फिट तैयार हुआ है कि प्रदर में रामबाण की तरह काम करता है। चाहे कितना ही पुराना या नया अथवा लाल, पीला, नीला, सफेद किसी प्रकार का भी प्रदर क्यों न हो इसके सेवन से निश्चित रूप से लाभ होता है। प्रदर स्त्रियों के स्वास्थ्य को खोखला कर देने वाला रोग है, प्रदर से पीड़ित स्त्रियों का स्वास्थ्य छिन्न भिन्न हो जाता है तथा सिर दर्द, कब्ज, बदहजमी, प्यास, हाथ पैरों का दर्द आदि शिकायतें पैदा होती हैं। प्रदर नाशक वटी के सेवन यह विकार जड़ से दूर होते हैं, तथा रोग में स्थायी रूप से लाभ होता है।

मूल्य—५० टिकिया सुन्दर पैकिंग ३)

## ल्यूकोरिया सपोज़ीटरी

### अर्थात् प्रदर नाशक वर्ती

खाने की औषधि के साथ ही प्रदर रोग में स्थानीय उपचार भी अत्यन्त आवश्यक है अनेक बार प्रदर केवल स्थानीय विकारों के कारण ही पैदा हो जाता है और योनि की सफाई करने से ही दूर हो जाता है। यह ल्यूकोरिया सपोज़ीटरी अत्यन्त वैज्ञानिक रूप से योनि की सफाई करती है। इसकी एक वर्ती रात्रि को भिगोकर योनि के अन्दर रखी जाती है। जिससे सुबह को ही लाभ प्रतीत होने लगता है। वास्तव में प्रदर को जड़ से मिटाने के लिये तथा शीघ्र लाभ प्राप्ति के लिये खाने और लगाने दोनों प्रकार की औषधियों का प्रयोग करना लाजमी है।

मूल्य—१२ वर्ती का पैकट १)

## 'छिद्याला सुपारी पाक'

मुँहासों को नाश कर सौंदर्य बढ़ाने वाला

## हिस्टीरिया रसायन

### हिस्टीरिया के दौरे में पूर्ण सफल औषधि

हिस्टीरिया के दौरों की शिकायत पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को ही अधिक होती है, वास्तव में यह पेट की खराबी और मस्तिष्क की कमजोरी से होने वाला रोग है। हिस्टीरिया रसायन से मस्तिष्क के स्नायुओं को पोषण मिलता है, मेदे में तरावट आती है और इस कष्टदायक रोग से हमेशा के लिये छुटकारा मिल जाता है। मूल्य—५ तोला शीशी २)

## अशोकामृत

### स्त्री रोगों के लिये एक और अद्भुत औषधि

प्रदर की तरह ही मासिक धर्म के कष्टों से पीड़ित महिलाओं की संख्या हमारे देश में कम नहीं है। मासिक धर्म के विकार स्त्री शरीर में अन्य अनेक विकारों को भी जन्म देते हैं; जैसे पेड़ू का भारीपन, कमर का दर्द, हड़फूटन, सिर का दर्द, सिर चकराना आदि। इन्हीं विकारों के साथ डिम्ब ग्रन्थियों और डिम्ब प्रणालियों पर सूजन भी आ जाता है और इनके फल स्वरूप, रक्त अथवा श्वेत प्रदर आरम्भ हो जाता है। शरीर में रक्ताल्पता छा जाती है।

यह औषधि स्त्री रोगों की अव्यर्थ वनस्पतियों जैसे अशोक, उलट कम्बल जटामांसी तथा लौह आदि रक्त वर्धक धातुओं के मिश्रण से बनाई जाती है जिससे समस्त मासिक धर्म विकारों में जैसे कष्ट से मासिक धर्म होना, मासिक स्राव अनियमित रूप से होना, अधिक स्राव होना, प्रदर, रक्ताल्पता आदि सभी दोष दूर होते हैं। डिम्ब ग्रन्थियों तथा डिम्ब प्रणालियों का सूजन उतर जाता है तथा सभी गर्भाशय और मासिक धर्म के दोष दूर होकर मासिक स्राव नियमित होता है। मूल्य ४ औंस पैकिंग १॥)

पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी

## पटियाला बालामृत (काका सीरप)
### बच्चों के लिये मधुर शक्तिदायक शर्बत

बचपन के रोग, व्यक्ति भावी स्वास्थ्य की नींव को कमजोर बना देते हैं इसलिये बच्चों के स्वास्थ्य का ध्यान रखना जरूरी है। पटियाला बालामृत के सेवन से बच्चों का स्वास्थ्य संगठित रहता है। सदा रोगी रहने वाले बच्चे भी इसके सेवन से रोग मुक्त होकर हृष्ट-पुष्ट बन जाते हैं। इसका निरन्तर प्रयोग बच्चों को सर्वदा रोगों से दूर रखता है। यह बालामृत बच्चों की रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाता है। मूल्य २ औंस पैकिंग १)

## मदनसुधा
### नपुंसकता को नाश कर शक्ति बढ़ाने की अचूक दवा

"मदनसुधा" के सेवन से एक बार मुर्दे जैसे कमजोर शरीर में भी नई ताक़त भर आती है। नपुंसकता, कामेच्छा की कमी, प्रमेह, सिर चकराना, थोड़ी मेहनत से सांस फूलना आदि विकार दूर होकर शरीर नवयौवन से भर जाता है। 'मदन-सुधा' शरीर में शुद्ध और गाढ़े वीर्य की उत्पत्ति करती है। मूल्य ३२ गोली पैकट ३)
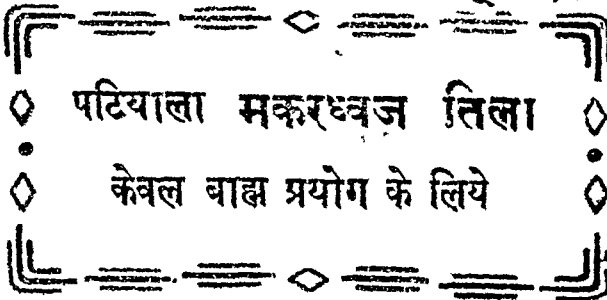
यह मकरध्वज तिला पूर्ण रूप से पटियाला फार्मेसी की ईजाद है। लिंग की कमज़ोरी, उत्थान शक्ति की कमी अथवा नाश हो जाना, इन्द्रियों

का टेढ़ापन तथा अन्य स्थानीय विकार इसके प्रयोग से शर्तिया दूर हो जाते हैं। इसके प्रयोग से न छाले पड़ते हैं और न इन्द्रिय में जलन की ही शिकायत पैदा होती है। यह पूर्ण रूप से हानि रहित है।
मूल्य ६ माशा पैकिंग २)

## आयुर्वैदिक सारसा

### खून साफ करने की बेजोड़ दवा

फोड़े फुन्सी, रक्त विकार, दाद, खाज, चम्बल, उपदंश से उत्पन्न खून की खराबी, चेहरे की झांई मुंहासे आदि समस्त रक्त विकारों को दूर कर खून को शुद्ध करता है।
मूल्य—४ औंस १॥)

## ब्राह्मी-सिका-हेयर आयल

### केश और मस्तिष्क के लिये परम हितकारी तैल

इस गुणकारी तेल के निर्माण में अन्य औषधियों के अतिरिक्त ब्राह्मी और शिकाकाई मुख्य है। ब्राह्मी मस्तिष्क के लिए अत्यन्त गुणकारी औषधि है और शिकाकाई केशों के लिए अति उत्तम है। इस तेल के प्रयोग से मस्तिष्क की कमजोरी स्मरण शक्ति का ह्रास, बाल गिरना, सिर चकराना, सिर की खुशकी, माथा गरम रहना, असमय में बाल सफेद होना आदि सब विकार दूर होते हैं और केशों में वृद्धि होती है। बाल मुलायम और चिकने होते हैं। जिन स्त्रियों के बाल छोटे हों उन्हें इस तैल के प्रयोग से विशेष लाभ होता है।
मूल्य ४ औंस शीशी सुन्दर पैकिंग १) नेट

## भीमसेनी चूर्ण

यह चूर्ण पाचक होने के साथ ही साथ अत्यन्त स्वादिष्ट भी है।

बदहज़मी, खट्टी डकार, क, दस्त, पेट के भारीपन को दूर करने में अद्वितीय है। मूल्य—१० तोला शीशी १।)
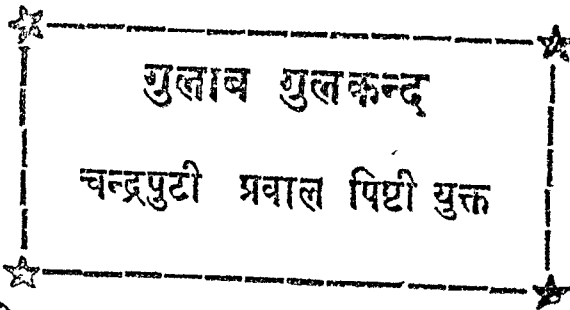
आंतों को तरावट पहुँचाने तथा कब्ज दूर करने वाली यह प्रसिद्ध औषधि है; इसके अतिरिक्त इसके सेवन से अनेक पित्त और गर्मी, के विकार दूर होते हैं। जैसेः—अम्लपित्त, शरीर की बढ़ी हुई गर्मी आंखों से गर्मी निकलना, छाती की जलन, हाथ पैरों की दाह, अधिक प्यास लगना, मेदे की खुश्की आदि शिकायतों में इसके सेवन से पूर्ण लाभ होता है। हमारी फार्मेसी में ताजे असली गुलाब के फूलों से गुलकन्द बनाया जाता है। मूल्य १० तोला शीशी १) २० तोला शीशी २)

दाद, खाज और एग्जीमा को जड़ से आराम करने वाली औषधि है। मूल्य—बड़ी डिब्बी ॥), छोटी डिब्बी ।=)

जो लोग मरहम न लगाना चाहें वह इस तेल का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह मरहम के समान ही गुणकारी है। मूल्य—½ औंस शी० ॥)
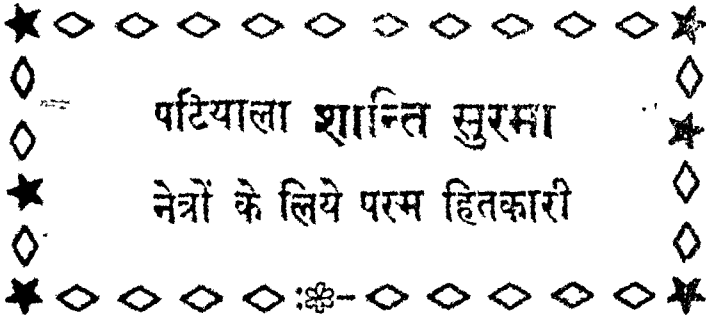
आंखों का गदलापन, कीचड़ आना, पुराने रोहे, दृष्टि मन्दता लाली, आंखों में जलन होना, पानी आना, आदि अनेक रोगों में इस सुरमे के प्रयोग से पूरा लाभ होता है। रोजाना इस्तेमाल करने के लिये ये सुरमा अत्यन्त उपयोगी है। इसके नियमित प्रयोग करने से कोई भी नेत्र रोग होने का भय नहीं रहता। अनेक नेत्र रोगों के कारण मस्तक में पीड़ा रहने लगती है। ऐसी दशा में शान्ति सुरमा लाभदायक सिद्ध होता है।

मूल्य १½ माशा ।) ३ माशा ॥)
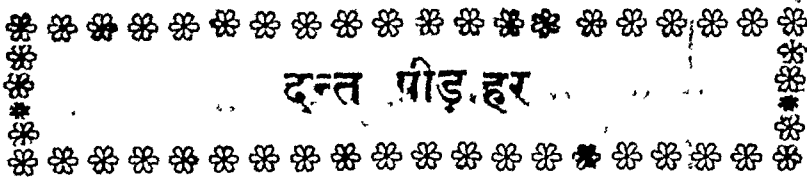
## दन्त पीड़हर

दाढ़ अथवा दांतों में गन्दगी से अथवा भोजन का अंश अटक कर सड़ जाने से कीड़ा लगने से दर्द हो जाता है। दन्त वेदना रोगी को बहुत बेचैन कर देती है ऐसी दशा में दन्त पीड़ाहर के लगाने से तुरन्त लाभ होता है। मूल्य एक पैकिट ।)

## पटियाला बाम

सब प्रकार के दर्दों में अक्सीर मरहम

सिर की दर्द, कमर, छाती या पसली का दर्द, जोड़ों का दर्द, जहरीले जानवर का काटा, चोट लगने से उत्पन्न सूजन तथा दर्द में लगाने से चमत्कारपूर्ण लाभ होता है। मूल्य छोटी शीशी ।), बड़ी शीशी ॥)

सरहिन्द ❀ जबलपुर ❀ जालन्धर ❀ हैद्राबाद
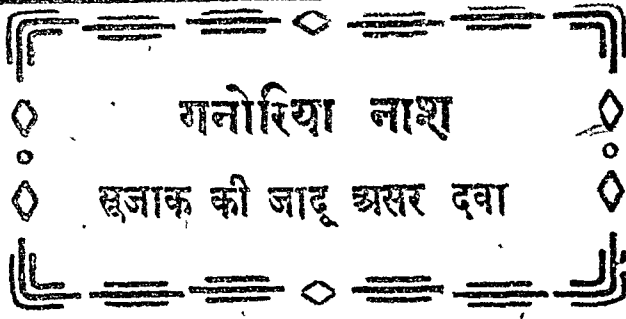
सूजाक के लिये अनेक उत्तम औषधियों के मिश्रण से इसका निर्माण किया गया है। यह वास्तव में सूजाक के कष्ट को दूर करने के लिये अद्भुत औषधि है। पेशाब करते समय मूत्र नलिका में दर्द और जलन होना, पेशाब के साथ मवाद (पीप) जाना, बून्द २ पेशाब आना तथा मूत्र नलिका का शोथ आदि समस्त सूजाक के विकार इसके सेवन से दूर होते हैं।

मूल्य २४ कैसूल २॥)
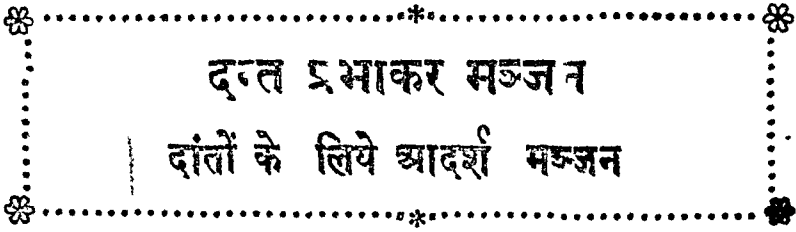
## दन्त प्रभाकर मञ्जन

### दांतों के लिये आदर्श मञ्जन

दांतों से खून आना, पायोरिया, दाढ़ दांतों में कीड़ा लगना, मसूढ़े सूजना, दाढ़ दांत का दर्द आदि विकारों में इसके लगाने से पूरा फायदा होता है। दांतों का मैल और दुर्गन्धि दूर होकर उनमें स्वाभाविक चमक आती है। मूल्य—छोटी शीशी ।=), बड़ी शीशी ॥।)

## सोम सिन्धु

### अनेक रोगों की एक ही सफल औषधि

कै, दस्त, जी मिचलाना, खांसी, जुकाम, नजला, पेट का दर्द, हैजा सिर दर्द, पेचिश, वायुगोला, जहरीले जानवर का काटा, सूजन, चोट, दाढ़ दांत का दर्द, अनेक रोगों में "सोम सिन्धु" के प्रयोग से तत्काल लाभ होता है। मूल्य १ शीशी पैकिंग ।=)

## नेत्र बिन्दु

### दुखती आंखों में शांतिदायक औषधि

आंखों की जलन, कड़क, पानी गिरना, रोहे पड़ जाना, कीचड़ आना, लाली, कोए फटना, खाज, चकाचौंध लगना आदि नेत्र विकारों में परम लाभकारी औषधि है। मूल्य एक पैकट ।)

## सुखविरेचक [मधुरविरेचन]

### आसानी से दस्त लाने वाली दवा

बिना किसी तकलीफ ऐंठनी और दर्द के रात को खाने से सुबह को साफ दस्त लाती है। इसमें कोई तेज दवा नहीं मिलाई जाती, अतः स्त्रियों और वृद्ध पुरुषों को भी आसानी से दी जा सकती है।

मूल्य ½ तोला पैकिंग ॥)

## पटियाला मकरध्वज वटी

### शक्तिवर्धक और नपुंसकता नाशक रसायन

हमारी फार्मेसी की यह एक खास दवा है। मकरध्वज के साथ इसमें अन्य मूल्यवान और बल वर्धक औषधियां मिलाकर इसे तैयार किया जाता है। जैसे जायफल, जावित्री, केसर, कस्तूरी अहिफेन, मल्लसिंदूर आदि इन औषधियों के योग से यह एक उपादेय योग तैयार हुआ है। इसके सेवन से खांसी, श्वास आदि कफ के रोग, शारीरिक दुर्बलता, नपुंसकता, प्रमेह मधुमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन आदि अनेक रोग दूर होते हैं।

मूल्य—१॥ माशा पैकिंग २=), ३ माशा पैकिंग ४)

## एटवन्स

### सब प्रकार के दर्दों की जादू असर दवा

सिर दर्द, कान दर्द, दाढ़ दांत की दर्द, छाती का दर्द, पेट का दर्द,

गृध्रसी वात, गुर्दे का दर्द इत्यादि सब ही दर्द इसके खाते ही जादू की तरह दूर हो जाते हैं। मूल्य ४० टिकिया १।।)

## अर्क कपूर
### हैज़े की मशहूर दवा

यह अर्क कपूर उत्तम देशी कपूर से बनाया गया है। इसलिये बाजार में बिकने वाले अर्क कपूरों से कहीं अच्छा काम करता है। इसके सेवन कराने से कै दस्त बहुत जल्दी बन्द होते हैं। रोगी की घबराहट मिट जाती है, पेट का दर्द और ऐंठन दूर होती है, रोगी के ठण्डे होते हुये हाथ पैरों में गर्मी आती है और वह चैन पाकर सो जाता है यह अर्क कपूर हैज़े की अति उत्तम औषधि है।

मूल्य—½ औंस पैकिंग ।।।), ६ माशा पैकिंग ।≡)

## अर्क पोदीना हरा

यह अर्क पोदीने की ताज़ी हरी पत्तियों से तैयार किया हुआ है। बदहज़मी, जी मिचलाना, गर्मी के कारण कै होना, पेट का दर्द, अफारा, खट्टी डकार आना आदि समस्त विकारों में बहुत अच्छा फायदा करता है। यह विशेष रूप से बच्चों के हरे पीले दस्त, दूध डालना, बदहज़मी आदि में फौरन लाभ दिखाता है। हैज़े की दशा में इसे अर्क कपूर के साथ मिलाकर देने से विशेष लाभ होता है। यह हर समय पास रखने लायक़ एक घरेलू औषधि है। मूल्य ½ औंस पैकिंग ।।) ६ माशे पैकिंग ।)

## कर्णरोग नाशक

कान का दर्द, मैल, सूजन, पानी या पीप निकलना, कान में खुजली होना आदि कान के अनेक रोगों में लाभदायक है। कीमत—।) पैकट।

# शामक टिकिया

## उन्माद, अनिद्रा, अपस्मार, रक्तचाप वृद्धि आदि रोगों की अव्यर्थ औषधि

संगठन—शंखपुष्पी, वच, ब्राह्मी, कुठ, सर्पगन्धा, रस सिंदूर चन्द्र-पुटी प्रवाल आदि सौम्य गुणयुक्त औषधियों का मिश्रित योग।

गुण—इस शामक योग की यह विशेषता है कि बिना किसी हानि-कारक प्रभाव के यह उपरोक्त सब ही रोगों में लाभदायक सिद्ध होता है। मस्तिष्क और स्नायविक रोगों में शामक में मिश्रित रस सिन्दूर और प्रवाल आदि औषधियां सौम्य गुण प्रवर्त्तन के साथ ही साथ मस्तिष्क और स्नायु जाल को बल प्रदान करती है; जिससे इन रोगों में स्थाई लाभ होता है।

सेवन विधि—१-१ टिकिया दिन में तीन चार बार रोग की उग्रता और रोगी के बलाबल के अनुसार देनी चाहिये।

पथ्यापथ्य—साधारणतया इन रोगों में तेल, खटाई और लाल मिर्च तथा तेज मसालेदार भोजन का त्याग करना चाहिये। सुपाच्य ताजा भोजन, हरे शाक सब्जी, दूध और फल हितकारी हैं।

पैकिंग तथा कीमत—५० टिकिया २)

---

# फार्मेसी द्वारा निर्मित कुछ विशिष्ट आयुर्वेदीय औषधियां

१. जौहर रस कपूर—आतशक की प्रत्येक दशा में अत्यन्त लाभदायक है। कीमत—३ माशा ॥=) ६ माशा १=) १ तोला २)

२. जौहर त्रिविष संखिया युक्त—आतशक के भयंकर प्रकोप में लाभदायक है। इसमें संखिया, रस कपूर और दालचिकना शामिल हैं।
कीमत—३ माशा ॥=), ६ माशा १=), १ तोला २)

३. जौहर संखिया—यह अन्य औषधियों के साथ मिला कर सेवन किया जाता है। रक्तदोष, नपुंसकता, जीर्ण ज्वर तथा दुर्बलता में लाभदायक है। कीमत ३ माशा ॥=), ६ माशा १=), १ तोला २)

४. जौहर हरताल वर्की—विषम ज्वर (मलेरिया) में।
कीमत—३ माशा ॥|–), ६ मा. १||–), १ तोला ३)

५. जौहर नौसादर—पेट दर्द, अजीर्ण और बढ़े हुये जिगर तिल्ली में लाभदायक है। कीमत ३ मा. ≡), ६ मा. ||–), १ तो. ||), ५ तो. २)

६. जीर्ण ज्वरारि—पुराने मलेरिया ज्वर में अत्यन्त लाभदायक है।
कीमत—३ माशा ॥=), ६ माशा १=), १ तोला २)

७ शंख द्राव—अजीर्ण, अरुचि, अफारा, अग्निमान्द्य और गुल्म में लाभकारी है। मात्रा—५ बूंद भोजनोपरांत जल मिला कर।
कीमत—½ औंस ॥|), १ औंस १।), २ औंस २॥)

८. शिलाजीत सत्व—(शुद्ध सूर्यतापी) हमारे यहां से परम शुद्ध शिलाजीत सप्लाई किया जाता है, क्योंकि हम शिलाजीत का पत्थर मंगा कर सूर्य-ताप द्वारा उससे ही शिलाजीत निकालते हैं। आग पर पकाकर निकालने से शिलाजीत के गुण नष्ट हो जाते हैं। हम अग्नितापी शिलाजीत

नहीं तैयार करते । शिलाजीत अत्यन्त हितकारी और योगवाही रसायन है। अनुपान भेद से यह हजारों रोगों में लाभ करती है।

कीमत—६ माशा ।≡), १ तोला ३)

९. च्यवनप्राश कैलिशियम विद हाईपो फास्फेट—कैलशियम के इस लवण को मिला देने से श्वास, कास, यक्ष्मा और फेफड़ों की कमजोरी में भी विशेष लाभ होता है। साथ ही इसमें फास्फोरस का अंश होने के कारण प्रमेह, धातु विकार का दूर कर वाजीकरण गुण भी करता है।

कीमत—१० तोला १॥), २० तोला २॥)

---

# महर्षि च्यवन और सुकन्या

ले०—प्रो० देवकीनन्दन शर्मा B. I. M. S.
प्रतिनिधि पटियाला फार्मेसी, सरहिन्द

मनु पुत्र राजा शर्याति वड़े विद्वान् और निष्ठावान् शासक थे। उनकी कमलनयना कन्या का नाम सुकन्या था। राजा शर्याति एक दिन वन विहार को गये। सुकन्या भी पिता के साथ थी पिता और पुत्री दोनों विचरण करते च्यवन ऋषि के आश्रम पर जा पहुंचे। सुकन्या अपनी सखियों के साथ वन में घूम २ कर लता गुल्मों का सौंदर्य देख रही थी। सहसा उसने एक नव कुसुमित वृक्ष के नीचे वांवी देखी। वांवी के शिरोभाग में जुगनू की तरह दो ज्योतियां चमक रही थीं। संयोग ही कुछ ऐसा था कि सुकन्या ने वालसुलभ चपलता से उन दोनों ज्योतियों को कांटे से बींध दिया। ज्योतियों से रक्तधारा वह निकली।

सुकन्या के हाथ से भारी दुष्कर्म हो गया था। उधर राजा शर्याति के अंग रक्षकों का पेट फूलने लगा।

अपने अंगरक्षकों को पीड़ित देख कर राजा शर्याति को वड़ा आश्चर्य हुआ।

राजा ने पूछा—अरे, किसी ने जान या अनजान में महर्षि च्यवन के साथ अनुचित वर्ताव तो नहीं किया ?

भय से प्रकम्पित राजकन्या ने उत्तर दिया, तात ! मुझसे भारी अपराध हो गया है। मैंने अनजान में एक वांवी में चमकती दो ज्योतियों को कांटे से बींध दिया है। उनसे रक्त प्रवाह जारी है।"

कन्या की वात सुन कर राजा शर्याति घवरा गये। वह तत्काल उस बांबी के पास पहुंचे। और दीमकों ने महर्षि के शरीर को जिस मृत्तिका पिण्ड से ढक दिया था, उसे फोड़कर उन्हें वाहर निकाला।

राजा महर्षि च्यवन की शक्ति और उनके उग्र स्वभाव से परिचित था। उसे भय था कि महर्षि कहीं अपने श्राप से उसके सारे राज्य का ही नाश न कर

दें। अतएव नाना प्रकार से उनकी स्तुति करने लगा। राजा की स्तुति से कुछ प्रसन्न होकर महर्षि च्यवन ने उन्हें श्राप तो न दिया, पर कहा—राजन्, तुम्हारी पुत्री ने मुझे नेत्रहीन बना दिया है। अब परिचर्या के लिये तुम्हें उसको मुझे सौंपना होगा।"

ऋषि का आदेश अकाट्य था। राजा शर्याति अपनी किशोरी, कुसुमसम कोमल कन्या को विगलितयौवन महर्षि च्यवन को सौंप कर विदा मांग राजधानी की ओर लौट पड़े।

सुकन्या पिता का आदेश शिरोधार्य कर वृद्ध च्यवन को ही अपना पति मान उनकी सेवा-शुश्रूषा में तल्लीन हो गई।

जन्म जात क्रोधी च्यवन नेत्रहीन होकर अत्यधिक उग्र स्वभाव वाले बन गये थे। सुकन्या के प्रति उनकी उदासीनता तो स्वाभाविक थी ही, वह उसकी सेवा के प्रतिदान में भी तिरस्कार ही देते थे।

कहां कोमलांगी, नव-यौवना राजकन्या सुकन्या! और कहां वीतराग महर्षि च्यवन!! एक ओर षोडषी कन्या और दूसरी ओर जराग्रस्त च्यवन! घोर वैषम्य! पर सद्पत्नी की भांति अपना कर्तव्य निर्वाहन करने की लालसा और सेवा द्वारा ही मुनि को प्रसन्न करने की सतत चेष्टा में सुकन्या राजमहिषी सुलभ वैभवविलास की सभी आकांक्षाओं को तिरोहित कर चुकी थी।

सुकन्या परम क्रोधी, अन्ध और जराग्रस्त पति से तिरस्कृत और उपेक्षित होकर भी प्रसन्न थी। मुनि की हर उपेक्षा और तिरस्कार का उसके पास एक ही उत्तर था—और अधिक तन्मयता से उनकी सेवा करना। वस्तुतः सुकन्या जीवन की दुस्साध्य साधना में संलग्न थी। पति की मनोदशा को समझ कर उसके अनुकूल आचरण करने में ही वह अपने नश्वर जीवन की सार्थकता समझती थी।

सेवा जैसी अनन्य साधना में जो प्राणी जीवन की आहुति चढ़ा देता है, निश्चय ही उसे उसका मधुर फल भी प्राप्त होता है। सुकन्या की अहर्निश साधना से आखिर महर्षि च्यवन का स्वभाव बदला और एक दिन जब दोनों अश्विनीकुमार उनके आश्रम में आये तो यथोचित स्वागत-सत्कार के बाद महर्षि च्यवन बोले, "आप दोनों समर्थ हैं, इसलिये मुझे युवा अवस्था प्रदान कीजिये। इसके बदले में, यद्यपि मैं यह जानता हूं कि आप सोमपान के अधिकारी नहीं हैं, तथापि यज्ञ में आपको सोमरस का भाग दूंगा।"

वैद्य शिरोमणि अश्विनीकुमारों ने महर्षि च्यवन की बात मान कर उनके

लिये विशेष तौर से पौष्टिक अवलेह तैयार किया जिसके सेवन से च्यवन ऋषि युवा बन गये। इसलिये ही इस अवलेह का नाम "च्यवनप्राशावलेह" पड़ गया। "चरक" चिकित्सा स्थान में लिखा भी है "अस्य प्रयोगाच्च्यवनः सुवृद्धोऽभूत्पुनर्युवा"

महर्षि च्यवन का शरीर इतना जराग्रस्त हो गया था कि अस्थि पञ्जर पर चर्म चोला सा चढ़ा प्रतीत होता था। सारी नसें झलक रही थी। मुख पर झुर्रियां पड़ जाने, दन्त गिर जाने और बाल सफेद हो जाने से उनकी आकृति और भी भद्दी लगती थी।

च्यवनप्राश सेवन करने से उनके वदन से रूप और यौवन की अनुपम आभा विकीर्ण हो रही थी।

परम-साध्वी, सुन्दरी ने जब देखा कि महर्षि च्यवन की पहचान कर सकना कठिन है तब उसने अश्विनीकुमारों की शरण ली। कुमार सुकन्या के पतिव्रत से परम प्रसन्न होकर युवा च्यवन को सौंप करके विमान द्वारा अपने धाम को चलेगये।

राजा शर्याति को अपनी कन्या महर्षि च्यवन के पास छोड़े हुये वर्ष व्यतीत हो गये थे। राजा ने एक यज्ञ का अनुष्ठान किया। महर्षि च्यवन को आमन्त्रित करने और पुत्री को देखने के उद्देश्य से राजा ने स्वयं ही उनके आश्रम जाने का निश्चय किया।

राजा शर्याति महर्षि च्यवन के आश्रम पहुँचे। यह देख कर उनको महान् विस्मय और शोक हुआ कि उनकी पुत्री एक गौर वर्ण, स्वस्थ युवा-पुरुष के साथ पर्णशाला के द्वार पर स्फटिक शिला पर आसीन है।

पिता के शोक और विस्मय को समझ कर सुकन्या उनके समक्ष आ उपस्थित हुई। और विनम्र भाव से अभिवादन किया।

राजा शर्याति अभिवादन का उत्तर दिये बिना आवेश में बोले—कुलांगार तूने मेरे कुल को कलंकित किया। तूने अपने सुख की लालसा से वृद्ध च्यवन के साथ विश्वासघात किया है। तू जार पति का सेवन कर रही है। तुझे लज्ज नहीं आती। बता, महर्षि च्यवन कहां हैं ?

सुकन्या ने शांत भाव से पिता का परितोष किया और महर्षि च्यवन के यौवन लाभ की आद्योपांत कथा कह सुनाई। महर्षि च्यवन ने भी सुकन्या की सतीत्व साधना और सेवा वृत्ति की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। राजा शर्याति सारी कथा सुन कर गद्‌गद् हो उठे। उनके नेत्रों में श्रद्धा और भक्ति के अश्रु झलक आये। उन्होने अपनी पुत्री को बड़े स्नेह से गले लगाया।

# हिस्टीरिया

(ले०—वैद्य कविराज रामप्रकाश शर्मा आयुर्वेदाचार्य
प्रतिनिधि पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी हैडआफिस सरहिंद ब्रांच जबलपुर)

हिस्टीरिया का रोग अधिकतर युवती स्त्रियों में पाया जाता है वैसे यह पुरुषों को भी होता है। बच्चों को भी हो सकता है परन्तु बहुत कम मात्रा में। हिस्टीदिया प्रायः मानसिक कारणों से होता है। स्त्रियां क्योंकि कोमल मन की होती हैं इसलिये उनका मन शीघ्र ही भिन्न२ कारणों से विचलित हो जाया करता है। वे दुःखी होती हैं घबरा जाती हैं और उन्हें हिस्टीरिया के दौरे आने शुरु हो जाते हैं। आंकड़ों को देखने से पता चलता है कि भारत वर्ष में यह रोग पढ़ी लिखी स्त्रियों में अधिक पाया जाता है। वेपढ़ी या अर्धशिक्षित युवतियों में अपेक्षाकृत यह रोग बहुत कम होता देखा गया है। गांव तथा देहातों की युवतियों में अपेक्षाकृत यह रोग वहुत कम होता देखा गया है गांव तथा देहातों की युवतियों में तो अब भी यह रोग कम देखने में आता है।

## रोग के मूल कारण

आम तौर पर सन्तान न होने से मन दुखी रहना, पति से झगड़ा होना, कई स्त्रियों का स्वभाव होता है कि पति को अपनी इच्छानुसार चलाना अगर तो पति ने कथनानुसार कार्य किया तो ठीक अन्यथा यह भी स्त्रियों में इस रोग का मूलकारण समझा जाता है। इच्छानुसार आभूषण अथवा खान पान का न मिलना, मासिक धर्म के बाद पुरुष समागम न मिलना अथवा पति समागम से काम सन्तुष्टि न होना, पति का आयु में स्त्री से छोटा होना। पति का किसी दूसरी स्त्री से प्रेम करना, मासिक धर्म अधिक कष्ट से आना किसी भी कारण से तबीयत में अधिक शोक मानना अधिक क्रोध करना, ज़रा सी बात पर मन ही मन कुढ़ना जलना, प्रेम प्राप्ति में असफलता, नींद का न आना आदि कारण हिस्टीरिया के उत्तरदायी होते हैं। प्रायः यह रोग वंश परम्परागत भी होता है और आतशक पीड़ित माता पिता की सन्तान को भी हिस्टी-

रिया का रोग हो जाया करता है। हिस्टीरिया रजोदर्शन से पूर्व बहुत कम देखने में आता है रजोदर्शन के बाद ही अधिकतर देखने में आता है कभी २ प्रथम रजोदर्शन होने पर ही हिस्टीरिया शुरु होता देखा गया है। जिन स्त्रियों को मासिकधर्म विकार होते हैं उन्हें प्रायः हिस्टीरिया का रोग होता है। किशोर अवस्था के बाद लड़कियों के शरीर में महत्वपूर्ण परिवर्तन होने लगते है और उस समय वह किसी भी कठिन या नियमित कार्य के योग्य नहीं होती। पढ़ने वाली लड़कियों को भी उन्हीं दिनों में परीक्षा पास करने के लिये बहुत परिश्रम करना पड़ता है। जिसके कारण उनके मस्तिष्क और शरीर दोनों पर श्रम का भार पड़ता है इस कारण उनका स्नायुमंडल सम्वेदनशील हो जाता है तथा सहनशीलता बल की बहुत कमी हो जाती है। जिन स्त्रियों में सहनशीलता की कमी हो जाती है उन्हें ही प्रायः हिस्टीरिया रोग होता देखा गया है जिन का मन दुर्बल तथा स्नायूमण्डल कमजोर नहीं होता उन्हें हिस्टीरिया का रोग प्रायः नहीं होता। जो लड़कियां बचपन में बड़े लाड़ चाव से पाली जाती हैं अनेक बार भावुक पत्नियों को पति से ज़रा सा मन मुटाव होजाने पर हिस्टीरिया का दौरा पड़ जाया करता है। आपस में स्वभाव न मिलने में स्त्री पुरुष दोनों उत्तरदायी हो सकते हैं किन्तु जहां कामातुर स्त्री पति से सन्तुष्ट नहीं हो पाती वहां पूर्णरूप से ही पति ही उसके लिये उत्तरदायी है,

शीघ्रपतन के रोगी की स्त्री को अगर हिस्टीरिया का रोग हो जाय तो उस पुरुष को चाहिये कि अपनी चिकित्सा शीघ्र करा ले। वहां स्त्री को हिस्टीरिया की औषधि खिलाने से कुछ न होगा। जिन लड़कियों को ऋतुस्राव शीघ्र जारी हो जाता है और जो चञ्चल और विलासी स्वभाव की होती हैं उनमें कामेच्छा की जागृति अपेक्षाकृत शीघ्र हुवा करती है इस प्रकार की लड़कियों को यदि पुरुष समागम शीघ्र नहीं मिलता तो काम पीड़ा के कारण उन्हें हिस्टीरिया के दौरे आने लग जाते हैं ऐसी लड़कियों का विवाह होने पर जब पति समागम प्राप्त होता है तो उनके दौरे स्वयम् शान्त ही जाया करते हैं। अधिक काम तृषित स्त्रियों के साथजहां अधिक मैथुन करना उनके रोग को दूर करदेता है दूसरी ओर कम काम वासना वाली स्त्रियों से अधिक मैथुन करने से उनका मस्तिष्क कमज़ोर होकर उन्हें हिस्टीरिया पैदा भी कर देता है कई बार जब किसी स्त्री को सन्तान नहीं होती तो चिन्तावश उसे दौरे आने लग जाते हैं जब ऐसी स्त्री को गर्भ ठहर जाता है तो स्वतः उसके दौरे शांत हो जाते हैं। अगर धनवान की लड़की किसी ग़रीब

र में दी जाये अथवा सास के साथ झगड़ा रहता हो तो ऐसी अवस्था में भी

माने शुरू हो जाते है।

## हिस्टीरिया के मुख्य लक्षण

पेट पर अफ़ारा आना हिचकियां आना या वमन हो जाना हृदय की धड़कन का बढ़ना कभी कभी पेट में दर्द होकर उसमें से एक गोला सा उठता है जो गले तक आता है ऐसा प्रतीत होता है कि दम घुटा जा रहा है आवाज़ नहीं निकलती और मूर्छा आने पर रोगी या तो भूमि पर गिर पड़ता है अथवा मूर्छा आने से पूर्व किसी सुरक्षित स्थान वर लेट जाती है दौरे की अवस्था पर रोगिणी कभी छाती पीटती है कभी उठती है कभी बैठती है। इधर उधर हाथ पांव मारती है। श्वास प्रश्वास अनियमित हो जाता है दांत भिच जाते हैं। हाथ पैर अकड़ने लगते हैं। आंखों की पुतलियां ऊपर को फिर जाती हैं। मुंह से झाग निकलने लगता है। कभी कभी स्त्री प्रलाप करने लग जाती है यह सब लक्षण जैसे दौरा तेज होता जाता है लक्षण भी तेज होते जाते हैं अगर दौरा हलका होता जाता है तो लक्षण भी हल्के होते जाते हैं। हिस्टीरिया का दौरा कुछ मिण्टों से लेकर कई घण्टों तक रह सकता है। दौरा समाप्त होने पर रोगिणी अपने को बहुत से रोगों के लक्षणों से घिरा पाती है जैसे हाथ पांव का मारा जाना शरीर के बहुत से अंगों में दर्द होना स्वर भंग हिचकी अफारा मूत्र बन्द हो जाना आदि आदि। किन्तु यह सब मिथ्या रोग होते हैं किन्तु मिथ्या रोग होने से यह नहीं समझना चाहिये कि रोगिणी बहाने बना रही है वरन् उसके मस्तिष्क की अवस्था ही ऐसी हो जाया करती है यह सभी चेष्टाएँ हिस्टीरिया के लक्षण ही होते हैं।

## चिकित्सा

दौरे के समय रोगिणी के वस्त्र ढीले कर देने चाहियें और उसे खुली हवा में रखना चाहिये अथवा पंखे से खूब हवा करनी चाहिये। चेहरे पर ठण्डे पानी के छींटें देने चाहियें दशांगधूप का धुवां देना चाहिये और हाथ पैर मल देने चाहिये हिस्टीरिया के रोगी के साथ कठोरता का व्यवहार कभी नहीं करना चाहिये और सहानुभूति प्रकट करनी चाहिये दौरे का रोकना वास्तव में रोगी के हाथ में नहीं होता परन्तु सावधानी बरतने से उन पर बहुत अंशों में काबू पाया जा सकता है। उनको यह बात अच्छी तरह समझा देनी चाहिये कि रोग निवारण में वह

स्वयं बहुत बड़ी सहायता कर सकती है। और फिर अन्त में सुपाच्य और पौष्टिक भोजन करना चाहिये। खाली न रह कर किसी न किसी काम में लगे रहना चाहिये। कब्ज न रहने दें सदा पेट साफ रखें और ठण्डे पानी से स्नान करना चाहिये। कहने की आवश्यकता नहीं हिस्टीरिया से छुटकारा पाने के लिये उनके मूल कारणों को दूर करना चाहिये। हमारी संस्था के मालिक डा० साधुराम जी विनायक ने कई रोग ऐसे ही ठीक किये हैं कि जब रोग समाप्त हुआ रोगी से प्रेमभाव पैदा कर मूल कारण का पता लें और उन मूल कारणों को दूर करना हमेशा के लिये रोग शान्त कर देता है। हिस्टीरिया के मूल कारण को दूर करना सत्य है कि हिस्टीरिया भगा देना है। बाकी इससे शरीर दुर्बल हो जाता है 'मुक्ता भस्म पटियाला' 'हिस्टीरिया रसायन पटियाला' 'शामक पटियाला' 'अर्जुनारिष्ट' 'सर्पगन्धा चूर्ण' आदि आदि औषध का प्रयोग करना चाहिये।

---
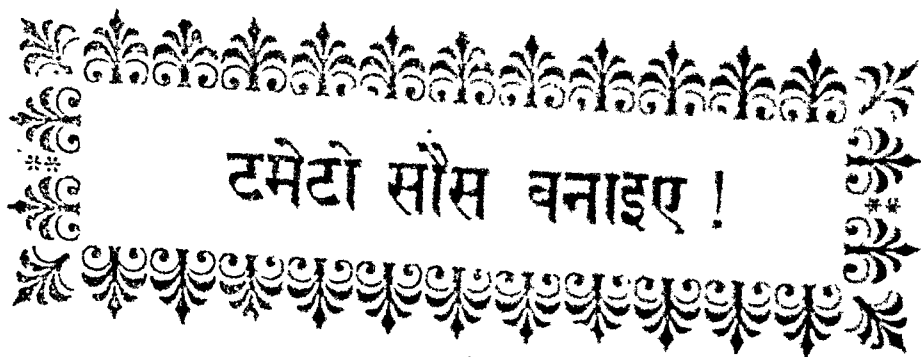
# टमेटो सौस बनाइए !

—उर्मिला माथुर—

खूब पके हुये लाल टमाटर लीजिये और उनको धोकर साफ़ कर लीजिये। अब इन टमाटरों को एक स्वच्छ व बारीक मलमल के टुकड़े में बांध कर दो मिनट तक खौलते हुये पानी में रहने दीजिये। फिर निकाल कर टमाटर पर से ऊपरी छिल्का छील डालिये। और इन्हें किसी वर्तन में रख कर चम्मच से कुचल डालिये। जिस वर्तन में टमाटर रक्खे जायें वह कलई का या एल्युमोनियम का होना चाहिये। इन कुचले टमाटरों को खूब पकाओ इस प्रकार वे खूब घुट मिल जायेंगे। तब उतार कर छलनी में छान कर उनका बीच व शेष छिलका अलग

र दीजिये। अब इस छने हुये गूदे में निम्न लिखित मसाला मिलाइये। यदि गूदा एक गैलन हो तो मसाला यह होगा।

दो बड़े चम्मच नमक, २ से चार बड़े चम्मच शक्कर, २ चम्मच पिसी हुई लाल मिर्च, एक चम्मच पिसा हुआ गर्म मसाला, दो बारीक कटे हुये प्याज। यह मसाला अपनी रुचि के अनुसार घटाया व बढ़ाया जा सकता है। गर्म ममाले को एक बारीक कपड़े में बांध कर गूदे में डाल कर पकाना चाहिये इससे चटनी मसाले के कारण काली न होगी और जब चटनी पक चुके तब पोटली निकाल लेनी चाहिये। टमाटर के गूदे में यह सब मसाला मिलाकर गर्म मसाले की पोटली लटका कर एक घण्टे तक पकाइये और तब उसमें तीन पाव (१ पिन्ट) अच्छा सिरका डालकर गूदे को फिर पकाओ। इसको इतना पकाओ कि खूब गाढ़ा हो जाय। पकाते समय वर्तन को खुला ही रखना चाहिये। क्योंकि इससे गूदा जल्दी गाढ़ा हो जायगा लेकिन गूदे को बराबर हिलाते व चलाते रहना चाहिये ताकि बर्तन के बीच वह चिमट कर जल न जाय। अब इसको उतार कर रख लीजिये। यह जिन बोतलों में भरनी हो उन्हें व उनके डाटों को खूब उबाल लीजिये। पके हुये गूदे को इन स्टरलाइज्ड बोतलों में भर कर ढीला डाट लगा दीजिये और बोतलों के मुंह के साथ डोरे से बांध दीजिये। इन बोतलों को तुरन्त ही किसी गर्म पानी के चौड़े बर्तन में आड़ी लिटाकर पानी में अच्छी तरह डुबो दीजिये और लगभग आध घण्टे तक खौलाइए ताकि माल अच्छी तरह शुद्ध हो जाय। ऐसे समय में बोतलों को टूटने से बचाने के लिये इनके नीचे वर्तन की तली में कपड़े की मोटी तह रख दो। जिससे गर्मी सीधी वर्तन पर न लगे, अब बोतलों को बर्तन से निकाल कर डाट को कस कर ठूँस दीजिये और ठण्डी होने पर बोतलों को औंधा करके उनके मुंह को पिघले हुये मोम में एक इंच डुबो दीजिये। ताकि मोम डाट को अच्छी तरह ढक ले। इस प्रकार यह एयर टाइट बोतलें हो जाती हैं और टामेटों सौस आप एक साल से दो साल तक हालत में रख सकती हैं। रोज में खाने के लिये टमाटर का यह गूदा या टामेटोसौस बड़ी ही स्वादिष्ट और अत्यन्त लाभप्रद होती है।

# भस्म प्रकरण

| | २० तो. | १० तो. | ५ तो- | १ तो. | ६ मा. | ३ मा. | १½ मा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अकीक भस्म | | ६|||) | ३|||) | |||=) | ||) | |) | |
| अभ्रक भस्म १००० पुटी | | | | ६४) | ३३) | १७) | ९) |
| अभ्रक भस्म ५०० पुटी | | | | ४०) | २१) | १०|||) | ५||) |
| अभ्रक भस्म १०० पुटी | | | | ९) | ४||-) | २|-) | १≡) |
| अभ्रक भस्म ६० पुटी | ३३) | १७) | ९) | २|) | १|) | ||) | |
| अभ्रकभस्म २१ पुटी | १६||) | ८||) | ४||) | १) | ||) | |) | |
| अभ्रक श्वेत भस्म | ८||) | ४||) | २||) | ||=) | |-) | ≡) | |
| कपर्दिका भस्म | ४|||) | २||) | १||) | ||) | |-) | ≡) | |
| कहरवा भस्म | | | ९) | २) | १=) | ||=) | |
| कान्तलोह भस्म | | ८) | ४||) | १) | ||) | |) | |
| कांस्य भस्म | | ८) | ४||) | १) | ||) | |) | |
| कासीस भस्म | ४|||) | २||) | १||) | ||) | |-) | ≡) | |
| कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म | १६||) | ८||) | ४||) | १) | ||) | |) | |
| खर्पर भस्म | | १०) | ५||) | १|) | ||≡) | |=) | |
| गोदन्ती हरताल भस्म | ३|) | १|||) | १) | |-) | ≡) | =) | |
| गोमेद भस्म | | | | ९) | ५) | ३|||) | १||) |
| जहर मोहरा पिष्टी | | २||) | १||) | ||) | |-) | ≡) | |
| ताम्र भस्म | | १९) | १०) | २||) | १|=) | |||) | |
| तीक्ष्ण लोह भस्म | | | १०) | २||) | १|=) | |||) | |
| तुत्थ भस्म | ६||) | ३||) | २) | ||) | |-) | ≡) | |
| नाग भस्म पीत | ८||) | ४||) | २||) | ||=) | |-) | ≡) | |

| नाम औषधि | २०तो. | १०तो. | ५तो. | १तो. | ६मा. | ३मा. | १½मा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नाग भस्म (काली) | ८।।) | ४।।) | २।।) | ।।=) | ।-) | ≡) | |
| नीलम भस्म | | | | १५) | ८) | ४=) | २।) |
| नीलाञ्जन भस्म | ८।।) | ४।।) | २।।) | ।।≡) | ।-) | ≡) | |
| एल्वा भस्म | | | | १२) | ६) | ३।) | १।।।) |
| पारद भस्म श्वेत | | | | ४) | २=) | १≡) | ।।=) |
| पुष्पराग (पुखराज) भस्म | | | | १२) | ६) | ३।) | १।।।) |
| प्रवाल भस्म (अग्निपुटी) | १६) | ८।।) | ४।।) | १।) | ।।≡) | ।=) | |
| प्रवाल भस्म (चन्द्रपुटी) | १६) | ८।।) | ४।।) | १।) | ।।≡) | ।=) | |
| पीतल भस्म | | ८) | ४।।) | १) | ।।) | ।) | |
| फिरोजा भस्म | | | ६) | ५) | २।।।) | १।।) | |
| फौलाद भस्म अपूर्व | | | | १८) | ६) | ४।।) | २।=) |
| वंग भस्म श्वेत | १५।।) | ८) | ४।।) | १।) | ।।≡) | ।=) | |
| वंग भस्म (हरताल योग) | १५।।) | ८) | ४।।) | १।) | ।।≡) | ।=) | |
| बेर पत्थर भस्म | ८।।) | ४।।) | २।।) | ।।=) | ।-) | ≡) | |
| मण्डूर भस्म | ४।।।) | २।।) | १।।) | ।।) | ।-) | ≡) | |
| मधु मण्डूर भस्म | | | | २) | १=) | ।।=) | |
| माणिक्य भस्म | | | | १२) | ६।) | ३।) | १।।) |
| मुक्ता भस्म नं० १ | | | | ८०) | ४०।।) | २०।) | १०≡) |
| मुक्ता भस्म नं० २ | | | | ४८) | २५) | १३) | ६।।) |
| मुक्ता पिष्टी नं० १ | | | | ८०) | ४०।।) | २०।) | १०≡) |
| मुक्ता पिष्टी नं० २ | | | | ४८) | २५) | १३) | ६।।) |
| मुक्ता शुक्ति पिष्टी | ६।।) | ३।।) | २) | ।।) | ।-) | ≡) | |
| मयूर पंख भस्म | | | | ३) | १।।-) | ।।।) | |
| मृगशृंग भस्म | ४।।।) | २।।) | १।।) | ।।) | ।-) | ≡) | |
| यशद भस्म | १०) | ५।।) | ३) | ।।।) | ।≡) | ।) | |
| राजावर्त भस्म | | | ६।।) | १।।) | ।।।-) | ।≡) | ।) |
| रौप्य भस्म (चान्दी भस्म) काली | | | | ६) | ३।) | १।।≡) | ।।।=) |
| रौप्य भस्म (लाल) | | | | ६) | ३।) | १।।≡) | ।।।=) |

पटियाला आयुर्वेदिक फार्मेसी (रजि०)

सरहिन्द * जबलपुर * जालन्धर

| नाम औषधि | २०तो. | १०तो. | ५तो. | १तो. | ६मा. | ३मा. | १॥मा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| रौप्य माक्षिक भस्म | | ४॥) | २॥) | ॥=) | ।-) | ≡) | |
| लोहभस्मस्पेशल १००पुटी | | | | ६) | ४॥-) | २।-) | १≡) |
| लोहभस्म नं०१ हिंगुल योग | १५॥) | ८) | ४॥) | १) | ॥=) | ।-) | |
| लोह भस्म नं० २ | | ७) | ३॥) | ॥।=) | ॥) | ।) | |
| वैक्रान्त भस्म | | | | २॥) | १।) | ॥≡) | |
| शंख भस्म | ४) | २।) | १।) | ।=) | ≡) | =) | |
| संगयशव भस्म | | ५॥) | ३) | ॥।) | ।≡) | ।) | |
| संगजराहत भस्म | | १॥।) | १) | ।=) | ≡) | =) | |
| स्फटिका (फिटकरी) भस्म | | १॥।) | १) | ।=) | ≡) | =) | |
| स्वर्ण माक्षिक भस्म | १०॥) | ५॥) | ३) | ॥।) | ।≡) | ।) | |
| स्वर्ण भस्म | | | | १४०) | ७१) | ३५॥।) | १८) |
| सोमल (संखिया) भस्म | | | | ४) | २।) | १≡) | |
| सौवीराञ्जन भस्म | | | १) | ।=) | ≡) | =) | |
| हरतालवर्की भस्म | | | | ४) | २।) | १≡) | |
| हिंगुल भस्म | | | | ४) | २।) | १≡) | |
| त्रिवंग भस्म | १६॥) | १०) | ५॥) | ३।) | ॥≡) | ।=) | |

# कूपी पक्व रसायन प्रकरण

| नाम औषधि | ५तो० | १तो० | ६मा० | ३ मा० |
|---|---|---|---|---|
| स्वर्ण घटित चन्द्रोदय मकरध्वज षटगुण | | १२) | ६=) | ३=) |
| ताम्रसिन्दूर | १४) | ३) | १॥-) | ॥।-) |
| तालसिन्दूर | १४) | ३) | १॥-) | ॥।-) |
| नागसिन्दूर | १४) | ३) | १॥-) | ॥।-) |
| वंग सिन्दूर | १४) | ३) | १॥-) | ॥।-) |
| पूर्णचन्द्रोदय | | १६) | ८।) | ४।) |

| नाम औषधि | १० तो. | ५तो. | १तो. | ६ मा. | ३मा. |
|---|---|---|---|---|---|
| मल्ल सिन्दूर | | १४) | ३) | १॥-) | ।॥-) |
| रजत सिन्दूर | | | ६) | ३=) | १॥=) |
| रस सिन्दूर षटगुण | २२) | १२॥) | २।॥) | १॥) | ।॥) |
| रस सिन्दूर द्विगुण | १८) | ६॥) | २) | १=) | ॥=) |
| व्याधिहरण रसायन | | | ८) | ४=) | २=) |
| शिला सिन्दूर | | १४) | ३) | १॥-) | ।॥-) |
| समीर पन्नग रस | | १६) | ४) | २=) | १=) |
| स्वर्णवंग | | १०) | २।) | १।) | ॥=) |
| सिद्ध मकरध्वज | | | | | |
| स्वर्ण भस्म युक्त पिसा हुआ | | | ४८) | २५) | १३) |

# रस प्रकरण

| नाम औषधि | १०तो० | ५तो० | १तो० | ६मा० | ३मा० |
|---|---|---|---|---|---|
| अगस्त्य सूतराज रस | | | ४) | २=) | १≡) |
| अमृतार्णव रस | | २।) | ॥) | ।-) | ≡) |
| अग्नि रस | ४॥) | २॥) | ॥=) | ।=) | ≡) |
| अग्नि तुण्डी वटी | ४॥) | २॥) | ॥=) | ।=) | ≡) |
| अग्नि कुमार बृहत् | ५॥) | ३) | ॥≡) | ।=) | ≡) |
| अग्नि मुख रस | ६) | ३॥) | ।॥) | ।≡) | ।) |
| अग्निसूनु रस | ६) | ३॥) | ।॥) | ।≡) | ।) |
| अजीर्ण कण्टक रस | ६) | ३॥) | ।॥) | ।≡) | ।) |
| अमीर रस | | | ५) | २॥=) | १।=) |
| अश्वकंचुकी रस | ५॥) | ३) | ।=) | ।=) | ≡) |
| अर्श कुठार रस | १०) | ५॥) | १।) | ॥≡) | ।=) |

| | १० तो० | ५ तो० | १ तो. | ६ मा० | ३ मा० |
|---|---|---|---|---|---|
| अश्विनी कुमार रस | १०) | ५।।) | १।) | ।।≡) | ।=) |
| अम्लपित्तान्तक रस | १३) | ७) | १।।) | ।।।–) | ।≡) |
| आनन्द भैरव रस (लाल) | ५।।) | ३) | ।।≡) | ।=) | ।) |
| आनन्द भैरव रस (काला) | ५।।) | ३) | ।।≡) | ।=) | ।) |
| आमवातारि वटी | ३।।) | २) | ।।) | ।–) | ≡) |
| आरोग्य वर्धनी वटी | ६) | ३।।) | ।।।) | ।≡) | ।) |
| इच्छाभेदी रस | ५।।) | ३) | ।।=) | ।≡) | ।) |
| उन्मत्त रस | | | १।) | ।।≡) | ।=) |
| उन्माद गजाकुंश | | | २।) | १≡) | ।।=) |
| उन्माद गजकेसरी | | | २) | १=) | ।।=) |
| उपदंश सूर्य | | | ३) | १।।=) | ।।।=) |
| एकांग वीर रस | | | ५) | २।।=) | १।=) |
| कनक सुन्दर रस | ६) | ३।।) | ।।।) | ।≡) | ।) |
| कफ केतु रस | ६) | ३।।) | ।।।) | ।≡) | ।) |
| कफ कुठार रस | ६) | ३।।) | ।।।) | ।≡) | ।) |
| कफ चिन्तामणि रस | १०) | ५।।) | १।) | ।।≡) | ।=) |
| कपूर रस (कपूर वटी) | | | ३) | १।।–) | ।।।–) |
| कल्प तरु रस | | | ।।।) | ।≡) | ।) |
| कस्तूरी भैरव बृहत | | | १६) | ८।।) | ४।=) |
| कस्तूरी भूषण | | | १५) | ८) | ४) |
| कामिनी विद्रावण रस | | | ६।।) | ३।=) | १।।।) |
| काम दुघा रस (मोती रहित) | | | १।।) | ।।।=) | ।≡) |
| काम दुघा रस (मोती युक्त) | | | ८) | ४≡) | २–) |
| काम धेनु रस | | | ३) | १।।–) | ।।।–) |
| कास श्वास विधूनन रस | ८) | ४।।) | १) | ।।) | ।) |
| कासहर | ३।।) | २) | ।।) | ।–) | ≡) |
| कालारि रस | | ७) | १।।) | ।।।–) | ।≡) |
| कालकूट रस | | ७) | १।।) | ।।।–) | ।≡) |

| नाम औषधि | १०तो० | ५ तो० | १ तो० | ६मा० | ३मा० |
|---|---|---|---|---|---|
| काञ्चनाभ्र रस | | | ६०) | ३१) | १६) |
| कास केसरी रस | | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| कुष्ठ भैरव (कुष्ठ दलन) रस | | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| कुष्ठ कुठार रस | | | २॥) | १।=) | ॥।) |
| कुमार कल्याण रस | | | ४८) | २५) | १३) |
| कृमि कुठार रस | ५) | २॥) | ॥=) | ।=) | ≡) |
| कृमि मुद्गर रस | ८॥) | ४॥) | १) | ॥-) | ।-) |
| क्रव्यादि रस बृहत् | | ७) | १॥) | ॥।-) | ।≡) |
| केशरादि वटी | | | २॥) | १।-) | ॥≡) |
| गोरोचन मिश्रण | | | ८) | ४=) | २=) |
| गंगाधर रस | | | २) | १=) | ।।=) |
| गण्ड माला कण्डू रस | | | १।) | ॥≡) | ।=) |
| गन्धक रसायन | ८॥) | ४॥) | १) | ॥-) | ।-) |
| गर्भपाल रस | ८॥) | ४॥) | १) | ॥-) | ।-) |
| गर्भ विलास रस | | | १) | ॥-) | ।-) |
| गर्भ विनोद रस | ६॥) | ३॥) | ॥।=) | ॥) | ।) |
| गर्भ चिन्तामणि रस | | ७) | १॥) | ॥।-) | ।≡) |
| गुल्मकालानल रस | ८॥) | ४॥) | १) | ॥-) | ।-) |
| गुल्म कुठार रस | | | १॥) | ॥।-) | ।≡) |
| ग्रहणी कपाट रस | | ६) | २) | १-) | ॥-) |
| ग्रहणी गज केसरी | | ७) | १॥) | ॥।-) | ।≡) |
| चन्द्रप्रभा वटी | ५॥) | ३) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| चन्द्रकला रस | | ७) | १॥) | ॥।-) | ।=) |
| चन्द्रामृत रस | ६॥) | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| चन्द्रशेखर रस | | | ७) | ३॥-) | १॥।=) |
| चिन्तामणि रस | | | २०) | ११) | ५॥=) |
| चिन्तामणि चतुर्मुख रस | | | २०) | ११) | ५॥=) |
| चौसंठ प्रहरी पीपल | | | १॥) | ॥।-) | ।≡) |

| नाम औषधि | १०तो० | ५तो० | १ तो० | ६मा. | ३ मा० |
|---|---|---|---|---|---|
| श्रीजयमंगल रस | | | ३०) | १६) | ८=) |
| जयमंगल रस (सादा) | | | ४) | २=) | १=) |
| जलोदरारि रस | १०) | ५॥) | १।) | ॥≡) | ।=) |
| ज्वर केसरी | | | ॥।) | ।≡) | ।) |
| ज्वरघ्नी वटी | ६॥) | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| ज्वर धूमकेतु | | | ॥।) | ।≡) | ।) |
| ज्वर मुरारि रस | ६॥) | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| ज्वरारि अभ्र रस | ६॥) | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| ज्वरांकुश (स्वर्णक्षीरी वाला) | ६॥) | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| जाति फलादि ग्रहणी कपाट रस | | | ४) | २=) | १=) |
| जीर्ण ज्वरांकुश | | | १) | ॥−) | ।−) |
| जीर्ण ज्वरारि रस | | | २) | १=) | ॥=) |
| दन्तोद्भेदगदान्तक रस | | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| दुर्जल जेता रस | | | १।) | ॥≡) | ।=) |
| नष्ट पुष्पान्तक | | | ४) | २=) | १=) |
| नारायण ज्वरांकुश रस | ६॥) | ३॥) | ॥।=) | ॥) | ।) |
| नागार्जुनाभ्र रस | | | ४) | २=) | १=) |
| नाराच रस | ५॥) | ३) | ॥=) | ।=) | ≡) |
| नित्यानन्द रस | १०) | ५॥) | १।) | ॥≡) | ।=) |
| नित्योदित रस | ६॥) | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| नृपतिवल्लभ रस | ८॥) | ४॥) | १) | ॥−) | ।−) |
| पञ्चवक्त्र रस | ६॥) | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| पाशुपत रस | | | १।) | ॥≡) | ।=) |
| पीयूष वल्ली रस | ६॥) | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| प्लीहारि रस | | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| पुष्पधन्वा रस | | | ४) | २=) | १=) |
| पूर्णचन्द्र रस बृहत् | | | १२) | ६=) | ३=) |

| नाम औषधि | १०तो० | ५तो० | १ तो० | ६ मा० | ३मा० |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रताप लंकेश्वर | | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| प्रदरान्तक रस | | | १॥) | ॥।-) | ।≡) |
| प्रदर रिपु रस | ८॥) | ४॥) | १) | ॥-) | ।-) |
| प्रवाल पञ्चामृत नं० १ | | | ३०) | १५॥) | ८) |
| प्रवाल पञ्चामृत नं० २ | | | ६) | ३=) | १॥=) |
| वंगेश्वर रस (सादा) | | | ८) | ४=) | २=) |
| वंगेश्वर रस वृहत् | | | १५) | ७॥।) | ४) |
| बाल रस | ६॥) | ३॥) | ॥।=) | ॥) | ।) |
| बाल ज्वरहर चन्द्रशेखर रस | | | ४) | २=) | १=) |
| बालवर्द्धरस | १०) | ५॥) | १।) | ॥=) | ।=) |
| भुवनेश्वर रस | | | ॥=) | ।=) | ≡) |
| भूत भैरव रस | | ६) | २) | १=) | ॥=) |
| मन्मथाभ्र रस | | | ४) | २=) | १=) |
| मधुमालिनी वसन्त | | | १०) | ५।) | २॥।) |
| महागन्धकम् | | | २) | १=) | ॥-) |
| महाज्वरांकुश | ५॥) | ३) | ॥=) | ।=) | ≡) |
| महामृत्युञ्जय रस | | | १॥) | ॥।-) | ।≡) |
| महाराज नृपति वल्लभ रस | | | १०) | ५=) | २॥=) |
| महा वातविध्वंसन रस | | | ५) | २॥=) | १।=) |
| मृगांक रस | | | ६०) | ३१) | १५॥) |
| मृत्युञ्जय रस | ५॥) | ३) | ॥=) | ।=) | ≡) |
| मृत संजीवनी रस | | | १५) | ७॥=) | ३॥।=) |
| योगेन्द्र रस | | | | २५॥) | १३) |
| रक्तपित्तान्तक रस | | ७) | १॥) | ॥।-) | ।≡) |
| रसमाणिक्य | | १०) | २) | १=) | ॥=) |
| रसराज रस | | | ३०) | १५=) | ७॥=) |
| राजचण्डेश्वर रस | | | २) | १=) | ॥=) |

| नाम औषधि | १०तो० | ५तो० | १तो० | ६ मा० | ३मा० |
|---|---|---|---|---|---|
| राजवल्लभ रस | | | १॥) | ॥।–) | ।≡) |
| राजमृगांक रस (स्वर्णयुक्त) | | | ४०) | २१) | ११) |
| रामबाण रस | ६॥) | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| लघु मालिनी वसन्त | | | २) | १=) | ॥=) |
| लक्ष्मीनारायण रस | | ७॥) | १॥।) | ॥।≡) | ॥) |
| लक्ष्मी विलास नारदीय(स्वर्णयुक्त) | | | ६) | ३=) | १॥=) |
| लक्ष्मी विलास नारदीय | | ७॥) | १॥) | ॥।–) | ।≡) |
| लीला विलास रस | | | ४) | २=) | १=) |
| लोकनाथ रस वृहत् | ६॥) | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| वसन्त कुसुमाकर रस | | | ३२) | १६॥) | ८॥) |
| वसन्त तिलक रस | | | ५) | २॥=) | १।=) |
| वसन्त मालनी (स्वर्ण) | | | २४) | १२।) | ६≡) |
| वात कुलान्तक रस | | | १२) | ६=) | ३=) |
| वात गजांकुश रस | | ७) | १॥) | ॥।–) | ।≡) |
| वातचिन्तामणि रस वृहत् | | | ३६) | १८॥) | ६।=) |
| वातविध्वंसन रस | | ७) | १॥) | ॥।–) | ।≡) |
| वात राक्षस रस | ६) | ५) | १।) | ॥≡) | ।=) |
| वात रक्तान्तक रस | | | २॥) | १।–) | ॥≡) |
| वातारि रस | | | ॥।) | ।≡) | ।) |
| विद्याधराभ्र रस वृहत् | | | २) | १=) | ॥=) |
| विश्वताप हरण रस | १०) | ५॥) | १।) | ॥≡) | ।=) |
| विसूचिका विध्वंस रस | | ७) | १॥) | ॥।–) | ।≡) |
| वेताल रस | | | १॥) | ॥।–) | ॥) |
| श्वासचिन्तामणि रस वृहत् | | | ४०) | २१) | ११) |
| श्वास कुठार रस | ५॥) | ३) | ॥≡) | ।=) | ≡) |
| शिरः शूलाद्रि वज्र | ५॥) | ३) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| शीत भंजी रस | | | २॥) | १।=) | ॥।) |
| शीतारि रस | | १०) | २।) | १≡) | ॥=) |

| नाम औषधि | १० तो० | ५ तो० | १ तो० | ६ मा० | ३ मा० |
|---|---|---|---|---|---|
| शूल कुठार रस | | | २) | १=) | ॥-) |
| शूल गज केसरी ताम्र | | १०) | २।) | १≡) | ॥=) |
| शोथ कालानल रस | ५॥) | ३) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| शंखोदर रस | | | ३॥) | १॥।=) | १) |
| श्लेष्म कालानल रस | ६॥) | ३॥) | ॥।) | ।=) | ।) |
| शृंगाराभ्र रस | | ७) | १॥) | ॥।-) | ।≡) |
| श्रीजयमंगल रस | | | ३०) | १६) | ८=) |
| सन्निपात भैरव रस | | | २।) | १=) | ॥=) |
| सर्वांग सुन्दर रस (स्वर्णयुक्त) | | | ४८) | २४=) | १२=) |
| सर्वांग सुन्दर रस (अतिसारे) | | | २) | १=) | ॥-) |
| सर्वज्वरांकुश रस | | | १) | ॥-) | ।-) |
| स्मृति सागर रस | | १०) | २।) | १≡) | ॥=) |
| स्वच्छन्द भैरव रस | १०) | ५॥) | १।) | ॥≡) | ।=) |
| स्वर्ण वसन्त मालती (मालिनी) | | | २४) | १२।) | ६≡) |
| स्वर्ण सूतशेखर नं० १ | | | ८) | ४।=) | २।) |
| सूतशेखर (सादा) नं० २ | | | २) | १=) | ॥-) |
| सिद्ध प्राणेश्वर रस | १०) | ५॥) | १।) | ॥≡) | ।=) |
| सुधानिधि रस | ६॥) | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| सूतिका विनोद रस | ६॥) | ३॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| सूतिकाभरण रस | | | ३०) | १५।) | ८) |
| सोमनाथ रस (स्वर्ण) | | | २४) | १२।) | ६=) |
| सोमनाथ रस (सादा) | | | १।) | ॥≡) | ।=) |
| हिरण्य गर्भपोटली रस | | | ७२) | ३६=) | १८=) |
| हिंगुलेश्वर रस | ६।) | ४॥।) | १) | ॥-) | ।-) |
| हेमगर्भपोटली रस | | | ५५) | २८।) | १४।) |
| हेमनाथ रस | | | ४०) | २१) | १०॥=) |
| हुताशन रस | ४॥) | २॥) | ॥=) | ।=) | ।) |

| नाम औषधि | १०तो० | ५तो० | १ तो० | ६मा० | ३मा० |
|---|---|---|---|---|---|
| हृदयार्णव रस | | ४॥) | १) | ॥-) | ।-) |
| त्रिनेत्र रस | | | ४) | २=) | १=) |
| त्रिविक्रम रस | | | ४) | २=) | १=) |
| त्रिभुवन कीर्त्ति रस | ५॥) | ३) | ॥≡) | ।=) | ≡) |

| नाम औषधि | १० तो० | ५ तो० | १ तो० | ६ मा० | ३मा० |
|---|---|---|---|---|---|
| ताम्र पर्पटी | | ७) | १॥) | ॥।-) | ।≡) |
| पञ्चामृत पर्पटी | २२) | १२) | २॥) | १।-) | ॥≡) |
| विजय पर्पटी | | | २०) | १०।) | ५।) |
| बोल पर्पटी | | ६) | २) | १=) | ॥=) |
| रस पर्पटी | | ७) | १॥) | ॥।-) | ।≡) |
| लोह पर्पटी | | ६) | २) | १=) | ॥=) |
| श्वेत पर्पटी | | १॥।) | ।=) | ≡) | =) |
| स्वर्ण पर्पटी | | | २०) | १०।) | ५।) |

# लौह तथा मण्डूर प्रकरण

| नाम औषधि | १० तो० | ५ तो० | १ तो० | ६ मा० | ३ मा० |
|---|---|---|---|---|---|
| अग्नि मुख लौह | | | २) | १=) | ॥=) |
| अम्ल पित्तान्तक लौह | | | २) | १=) | ॥=) |
| गुडूच्यादि लौह | | | ॥।=) | ॥) | ।-) |
| चन्दनादि लौह | | ५॥) | १।) | ॥≡) | ।=) |
| चन्द्रामृत लौह | | ५॥) | १।) | ॥≡) | ।=) |
| ताप्यादि लौह | | | १॥।) | ॥।≡) | ॥) |
| तारा मण्डूर | | | ॥।) | ।=) | ।) |
| धात्री लौह | ६॥) | ३॥) | ॥।=) | ॥) | ।) |
| नवायस लौह | ६॥) | ३॥) | ॥।=) | ॥) | ।) |
| प्रदरान्तक लौह | १७) | ६) | १।) | ॥≡) | ।=) |
| प्रदरारि लौहम् | | | १) | ॥-) | ।-) |
| पुनर्नवादि मण्डूर | ५॥) | ३) | ॥।) | ।≡) | ।) |
| यकृदारि लौह | | ८॥) | १॥।) | ॥।≡) | ॥) |
| यकृद् प्लीहारि लौह | | ८॥) | १॥।) | ॥।=) | ॥) |
| रक्त पित्तान्तक लौह | | | २।) | १≡) | ॥=) |
| वरुणाद्य लौह | | | १) | ॥-) | ।-) |
| विडगांदि लौह | | | ॥।) | ।≡) | ।) |
| विषम ज्वरान्तक लौह | | | ४) | २=) | १=) |
| विषम ज्वरान्तक लौह (टपक्व) | | | १५) | ७॥।) | ४) |
| शोथारि लौह | | | १) | ॥-) | ।-) |
| सप्तामृत लौह | | | १) | ॥-) | ।-) |

पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी (रजि०)

सरहिन्द ★ जबलपुर ★ जालन्धर

| नाम औषधि | १० तो० | ५ तो० | १ तो० | ६ मा० | ३ मा० |
|---|---|---|---|---|---|
| सर्व ज्वरहर लौह | | ५॥) | १।) | ॥≡) | ।=) |
| त्र्यूषणाद्य मण्डूर | | | १॥=) | ||=) | ॥) |
| त्रिफला मण्डूर | | | १॥) | |||-) | ।≡) |
| त्रिफलादि लौह | | | |||) | ।≡) | ।) |

# वटी तथा गुटिका प्रकरण

| | १०तो. | ५तो. | १तो. | ६मा. | ३मा. |
|---|---|---|---|---|---|
| अमृत वटी | | | ३) | १॥=) | |||) |
| आमवात प्रमथनी वटी | | | १) | ॥-) | ।-) |
| इन्द्रयवादि गुटिका | | | १) | ॥-) | ।-) |
| एलादि वटी | २॥) | १।) | ।-) | ≡) | =) |
| कर्पूरादि वटी | | | |||=) | ॥) | ।) |
| करञ्जादि वटी | | | |||) | ।≡) | ।) |
| कस्तूरी वटी | १६ गोली पैकिंग १) | | | | |
| कुंकुमादि वटी | | | ३) | १॥=) | |||=) |
| कांकायण गुटिका | | | ॥) | ।-) | ≡) |
| केशरादि वटी | | | १) | ।-) | ।-) |
| खदिरादि वटी | ४॥) | २॥) | ॥=) | ।=) | ≡) |
| गन्धक वटी | ३॥) | २) | ॥) | ।-) | ≡) |
| चन्दनादि वटी | | | १॥) | |||-) | ॥) |
| चन्द्रप्रभा वटी | ५॥) | ३) | |||) | ।≡) | ।) |
| चित्रकादि वटी | २॥) | १॥) | ।=) | ≡) | =) |
| दुग्ध वटी नं० १ | | | ३) | १॥=) | |||=) |
| दुग्ध वटी नं० २ | ५॥) | ३) | |||) | ।≡) | ।) |

| नाम औषधि | १० तो. | ५ तो. | १ तो. | ६ मा. | ३ मा. |
|---|---|---|---|---|---|
| नाग गुटी | | | २॥) | १।=) | ॥) |
| प्राणदा गुटिका | ४॥) | २॥) | ॥–) | ।–) | ≡) |
| भल्लातक वटी | | | २) | १=) | ॥=) |
| मधुरान्तक वटी नं० १ | | | १५) | ७॥) | ४) |
| मधुरान्तक वटी नं० २ | | | ॥) | ।≡) | ।) |
| मकरध्वज वटी | | | १५) | ७॥) | ४) |
| मण्डूर वटी | ५॥) | ३) | ॥) | ।≡) | ।) |
| मरिचादिवटी | ३॥) | २) | ॥) | ।–) | ≡) |
| महा शंख वटी | ५॥) | ३) | ॥) | ।≡) | ।) |
| माणिक्य रसादि गुटिका | | | ५) | २॥=) | १।=) |
| रजः प्रवर्तनी वटी | ५॥) | ३) | ॥) | ।≡) | ।) |
| रस चन्द्रिका वटी | ५॥) | ३) | ॥) | ।≡) | ।) |
| लवंगादि वटी | ३॥) | २) | ॥) | ।–) | ≡) |
| वज्रवटी | | | २॥) | १।=) | ॥) |
| लशुनादि वटी | ३॥) | २) | ॥) | ।–) | ≡) |
| व्योषादि वटी | ३) | १॥) | ।=) | ।) | =) |
| विष मुष्टी (कुचला) वटी | ६॥) | ३॥) | ॥=) | ॥) | ।) |
| विजयादि वटी | | | ६) | ४॥=) | २।=) |
| विष तिन्दुक वटी | | | १) | ॥–) | ।–) |
| शंख वटी | ३॥) | २) | ॥) | ।–) | ≡) |
| शूल वज्रणी वटी | ५॥) | ३) | ॥) | ।≡) | ।) |
| शूल गज केसरी वटी | ५॥) | ३) | ॥) | ।≡) | ।) |
| शुक्रमातृका वटी | | | ४॥) | २।–) | १।) |
| स्तम्भन वटी | | | ४) | २।) | १=) |
| सुदर्शनचूर्ण (महा) टिकिया | १।=) | ॥) | ≡) | | |
| सोमकल्प (लता) टिकिया | | १) | ।) | | |
| समीर गज केसरी वटी | | | ३) | १॥=) | ॥=) |

पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी (रजि०)

सरहिन्द ※ जबलपुर ※ जालन्धर

| नाम औषधि | १० तो. | ५ तो. | १ तो. | ६ मा. | ३ मा० |
|---|---|---|---|---|---|
| संजीवनी वटी | ३॥) | २) | ॥) | ।-) | ≡) |
| सर्पगन्धा(चन्द्रभागा) टिकिया | | १॥) | ।-) | ≡) | |
| सुख विरेचनी वटी | ४) | २=) | ॥) | ।-) | ≡) |
| सूरणवटक लघु | ३॥।) | २) | ॥) | ।-) | ≡) |
| सौभाग्य वटी | ६॥) | ३।) | ॥=) | ॥) | ।) |

## गुग्गुल प्रकरण

| नाम औषधि | | १० तो. | ५ तो. | १ तो. | ६ मा. | ३ मा. |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अमृतादि | गुग्गुल | | २) | ॥) | ।-) | |
| कांचनार | ,, | ३) | १॥) | ।=) | ।) | |
| कैशोर | ,, | ३) | १॥) | ।=) | ।) | |
| गोक्षुरादि | ,, | ३) | १॥) | ।=) | ।) | |
| पुनर्नवादि | ,, | ३) | १॥) | ।=) | ।) | |
| महायोगराज | ,, | १०) | ५॥) | १।) | ॥≡) | ।=) |
| लघु योगराज | ,, | | २) | ॥) | ।-) | |
| रास्नादि | ,, | | १।=) | ।-) | ≡) | |
| लाक्षादि | ,, | | १।=) | ।-) | ≡) | |
| सप्तविंशति | ,, | | १।=) | ।-) | ≡) | |
| सिंहनाद | ,, | ३) | १॥) | ।=) | ।) | |
| त्रयोदशांग | ,, | ३) | १॥) | ।=) | ।) | |
| त्रिफलादि | ,, | ३) | १॥) | ।=) | ।) | |

# आसव प्रकरण

| | कालीबोतल २२ औंस | १ पौंड | ८ औंस | ४ औंस |
|---|---|---|---|---|
| अमृतारिष्ट | २।।।) | २) | १=) | ।।=) |
| अभयारिष्ट | २।।।) | २) | १=) | ।।=) |
| अर्जुनारिष्ट | २।।।) | २) | १=) | ।।=) |
| अशोकारिष्ट | २।।।) | २) | १=) | ।।=) |
| अश्वगन्धारिष्ट | ३।) | २।।) | १।=) | ।।।) |
| अरविन्दासव | २।।।) | २) | १=) | ।।=) |
| अहिफेनासव | २ औंस ३), १ औंस १।।।), ½ औंस १) | | | |
| उशीरासव | २।।।) | २) | १=) | ।।=) |
| कनकासव | २।।।) | २) | १=) | ।।=) |
| कुमार्यासव नं० १ | ३।) | २।।) | १।=) | ।।।) |
| कुमार्यासव नं० २ | ४) | ३) | १।।=) | १) |
| कुटजारिष्ट | २।।।) | २) | १=) | ।।=) |
| कर्पूरासव | २ औंस ३), १ औंस १।।।), ½ औंस १) | | | |
| खदिरारिष्ट | २।।।) | २) | १=) | ।।=) |
| चन्दनासव | २।।।) | २) | १=) | ।।=) |
| चविकासव | ३।) | २।।) | १।=) | ।।।) |
| जीरकाद्यरिष्ट | ३।) | २।।) | १।=) | ।।।) |
| दशमूलारिष्ट | ३।) | २।।) | १।=) | ।।।) |
| दशमूलारिष्ट (कस्तूरी युक्त) | ४) | ३) | १।।=) | १) |
| द्राक्षासव | २।।।) | २) | १=) | ।।=) |
| द्राक्षारिष्ट | २।।।) | २) | १=) | ।।=) |
| पत्रांगासव | ३।) | २।।) | १।=) | ।।।) |

| नाम औषधि | २२ औंस | १ पौंड | ८ औंस | ४ औंस |
|---|---|---|---|---|
| पिप्पल्यासव | ३।) | २॥) | १।=) | ।||) |
| पुनर्नवासव | २॥|) | २) | १=) | ||=) |
| फलासव | ५॥) | ४) | २=) | १=) |
| बलारिष्ट | ३।) | २॥) | १।=) | |||) |
| बब्बूलारिष्ट | २॥|) | २) | १=) | ||=) |
| मध्वासव | २॥|) | २) | १=) | ||=) |
| महामञ्जिष्ठाद्यरिष्ट | ३।) | २॥) | १।=) | |||) |
| मृगमदासव | ½ औंस ६), | ६ मा. ३=), | ३ मा. १॥=) | |
| रोहितकारिष्ट | २॥|) | २) | १=) | ||=) |
| लोहासव | २॥|) | २) | १=) | ||=) |
| लोध्रासव | २॥|) | २) | १=) | ||=) |
| विडंगारिष्ट | २॥|) | २) | १=) | ||=) |
| वासकासव | २॥|) | २) | १=) | ||=) |
| सारस्वतारिष्ट | ३।) | २॥) | १।=) | |||) |
| सारिवाद्यासव | २॥|) | २) | १=) | ||=) |
| महा द्राक्षाद्यासव | ४) | ३) | १॥=) | १) |
| अंगूरासव | ५॥) | ४) | २) | १) |
| मृत संजीवनी आसव | ४) | ३) | १॥=) | १) |
| लक्ष्मणारिष्ट | ५॥) | ४) | २) | १) |

# चूर्ण प्रकरण

| नाम औषधि | १ सेर पैकट | २० तो. पैकट | १० तो. शीशी | ५ तो. शीशी | २॥ तो. शीशी |
|---|---|---|---|---|---|
| अजमोदादि चूर्ण | ७॥) | २।) | १।) | ॥।) | ।≡) |
| अग्निमुख ,, | ७॥) | २।) | १।) | ॥।) | ।≡) |
| अविपत्तिकर ,, | ७॥) | २।) | १।) | ॥।) | ।=) |
| अश्वगन्धादि चूर्ण | ५) | १॥) | १) | ॥=) | ।=) |
| अष्टांग लवण ,, | ७॥) | २।) | १।) | ॥।) | ।≡) |
| उलटकम्बल ,, | ११) | ३) | १॥=) | ॥।=) | ॥) |
| एलादि ,, | १२) | ३।) | १॥।=) | १) | ॥=) |
| कामदेव ,, | ८) | २॥।) | १॥) | ॥।-) | ।≡) |
| गंगाधर ,, वृहत | ७॥) | २।) | १=) | ॥=) | ।=) |
| गोक्षुरादि ,, | ७॥) | २।) | १=) | ॥=) | ।=) |
| चन्दनादि ,, | ७॥) | २।) | १।) | ॥।) | ।≡) |
| चोपचिन्यादि ,, | ८) | २॥।) | १॥) | ॥।-) | ।≡) |
| जातिफलादि ,, | ८) | ३॥।) | १॥) | ॥।-) | ।≡) |
| तालीसादि ,, | ७॥) | २।) | १।) | ॥।) | ।≡) |
| दाडिमाष्टक ,, | ७॥) | २।) | १=) | ॥=) | ।=) |
| नारसिंह ,, | ७॥) | २।) | १।) | ॥।) | ।≡) |
| नारायण ,, | ७॥) | २।) | १।) | ॥।) | ।≡) |
| निम्बादि ,, | ७॥) | २।) | १) | ॥-) | ।-) |
| पंचसकार ,, | ७॥) | २) | १=) | ॥=) | ।=) |
| प्रदरान्तक चूर्ण | ७॥) | २।) | | | |

| नाम औषधि | १ सेर पैकट | २० तोला पैकट | १० तोला शीशी | ५ तोला शीशी | २॥ तो. शीशी |
|---|---|---|---|---|---|
| पुष्यानुग चूर्ण(केसर युक्त) | १६) | ५) | २॥।) | १॥) | ॥।–) |
| महाखांडव चूर्ण | ७॥) | २।) | १=) | ॥=) | ।=) |
| मधुयष्ठ्यादि चूर्ण | ७॥) | २।) | १=) | ॥=) | ।=) |
| लवणभास्कर चूर्ण | ७) | २) | १) | ॥) | ।–) |
| लाई (नायिका) चूर्ण लघु | १२) | ३।) | १॥।) | ॥।=) | ॥) |
| लवंगादि चूर्ण वृहत | ७॥) | २।) | १।) | ॥।) | ।≡) |
| शिवाक्षार पाचक चूर्ण | ७॥) | २) | १=) | ॥=) | ।=) |
| स्वादिष्ट विरेचक चूर्ण | ७) | १॥।=) | ॥।=) | ॥) | ।–) |
| सर्पगन्धाचूर्ण नेट (साफी) | २०) | ५) | २॥) | १।) | १।) |
| सारस्वत चूर्ण | ७॥) | २।) | १=) | ॥=) | ।=) |
| सितोपलादि चूर्ण | १३) | ३॥) | १॥।) | ॥।=) | ॥) |
| सुदर्शन चूर्ण (महा) | ७) | १॥।) | १) | ॥–) | ।–) |
| सोमलता चूर्ण | ७) | २) | १=) | ॥=) | ।=) |
| हिंग्वाष्टक चूर्ण | १२) | ३) | १॥) | ॥।–) | ।≡) |
| हिंग्वादि चूर्ण | ११) | ३) | १॥) | ॥।–) | ।≡) |
| त्रिफला चूर्ण | ५॥) | १॥) | ॥।) | ।≡) | ।) |

नोट—१ सेर, ४० तोला, २० तोला चूर्णों के पैकिंग पैकटों में होगा। १० तोला, ५ तोला २॥ तोला का पैकिंग शीशी में किया जाता है।

---

# अवलेह-पाक-मोदक प्रकरण

| नाम औषधि | २॥ सेर डिब्बा | १ सेर डिब्बा | ४० तोला डिब्बा | २० तोला शीशी | १० तो. शीशी |
|---|---|---|---|---|---|
| कुटजावलेह | १४) | ६) | ३) | १॥।) | १) |
| कूष्माण्ड अवलेह | १४) | ६) | ३) | १॥।) | १) |
| च्यवनप्राश अवलेह अष्टवर्ग युक्त | १४) | ६) | ३॥) शी. | २) | १) |
| च्यवनप्राश अवलेह अष्टवर्ग युक्त | | | ३) डिब्बा | १॥।) डि० | |
| च्यवनप्राश अवलेह (कैलसियम हाइपो अष्टवर्ग युक्त) | | ६) | ४॥।)शी. | २॥)शी. | १॥)शी. |
| च्यवनप्राश (अष्टवर्ग शिलाजीत लोह भस्म युक्त) | | १२) | ६॥) | ३॥)शी. | २) शी. |
| बादाम पाक | | १२) | ६॥) | ३॥) | २) |
| श्री मदनान्दमोदक | २८) | १२) | ६॥) | ३॥) | १॥।=) |
| मुसली पाक | १६) | ७) | ४) | २) | १) |
| वासावलेह | १४) | ६) | ३) | १॥।) | १) |
| सुपारी पाक (त्रिवंग भस्म, लोह भस्म कैलशियम युक्त) | २५) | १०)पैकट | ५॥)पैकट | २) | १॥=) |
| सौभाग्य शुण्ठी पाक | १४) | ६)पैकट | ३)पैकट | १॥।) | १) |

---

पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी (रजि०)

सरहिन्द ★ जबलपुर ★ जालन्धर

# साधित तैल प्रकरण

| नाम औषधि | २ पौंड | १ पौंड | ८ औंस | ४ औंस | २ औं. |
|---|---|---|---|---|---|
| अर्क तैल | १०) | ५।।) | ३) | १।।।) | ।।।=) |
| अपामार्गक्षार तैल | १०) | ५।।) | ३) | १।।।) | ।।।=) |
| आमला तैल | | | | १।) | ।।=) |
| इरिमेदादि तैल | १०) | ५।।) | ३) | १।।।) | ।।।=) |
| कासीसादि तैल | १०) | ५।।) | ३) | १।।।) | ।।।=) |
| चन्दनादि तैल | १४) | ७।।) | ४) | २) | १) |
| दशमूल तैल | ८) | ४।) | २।।) | १।।) | ।।।) |
| प्रसारिणी तैल | १०) | ५।।) | ३) | १।।।) | ।।।=) |
| मरिचादि तैल | १०) | ५।।) | ३) | १।।।) | ।।।=) |
| महानारायण तैल | १४) | ७।।) | ४) | २) | १) |
| महाभृंगराज तैल | ८) | ४।) | २।।) | १।।) | ।।।) |
| महामाष तैल | १४) | ७।।) | ४) | २) | १) |
| महा लाक्षादि तैल | १४) | ७।।) | ४) | २) | १) |
| विषगर्भ तैल | १४) | ७।।) | ४) | २) | १) |
| षट्बिन्दु तैल | १०) | ५।।) | ३) | १।।।) | ।।।=) |
| क्षार तैल | १०) | ५।।) | ३) | १।।।) | ।।।=) |
| वेदनाहर तैल | | | ४) | २) | १) |

———

# साधित घृत प्रकरण

| नाम औषधि | २ पौंड | १ पौंड | ८ औंस | ४ औंस | २ औंस |
|---|---|---|---|---|---|
| अशोक घृत | | | | २\|\|\|=) | १\|\|) |
| अश्वगन्धादि घृत | | | | २\|\|\|=) | १\|\|) |
| जात्यादि घृत | | | ३) | १\|\|\|) | १) |
| फल घृत | १६) | ८\|\|) | ५) | २\|\|\|) | १\|\|) |
| ब्राह्मी घृत | १६) | ८\|\|) | ५) | २\|\|\|) | १\|\|) |
| महात्रिफलादि घृत | १६) | ८\|) | ५) | २\|\|\|) | १\|\|) |

# अञ्जन तथा वर्ती प्रकरण

| नाम औषधि | १० तोला | ५ तोला | १ तोला | ६ मा. | ३ मा. |
|---|---|---|---|---|---|
| चन्द्रोदयावर्ती | ५\|\|) | ३) | \|\|\|) | \|≡) | \|) |
| चन्द्रप्रभा वर्ती | ५\|\|) | ३) | \|\|\|) | \|≡) | \|) |
| नागार्जुन वर्ती | ५\|\|) | ३) | \|\|\|) | \|≡) | \|) |
| मुक्तादि महाञ्जन | | ७\|\|) | १\|\|\|) | \|\|\|≡) | \|\|) |
| नयनामृत सुरमा | | ७\|\|) | १\|\|\|) | \|\|≡) | \|\|) |
| शान्ति सुरमा | | | २) | १) | \|\|) |

पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी (रजि०)

सरहिन्द ★ जबलपुर ★ जालन्धर

# परिशिष्ट औषध सूची

चन्दनादि चूर्ण (दाह रोगे)—योग—सफेद चन्दन, नेत्रबाला, अगर, तगर, वंशलोचन आदि।

यह चूर्ण दाह, पित्तज शिर दर्द तृषा, मूत्रकृच्छ्र को दूर करता है। मस्तिष्क को शान्त बनाता है।

मात्रा—३ से ६ माशा दूध के साथ दिन में २ बार लें।

कीमत—२॥ तोला ।=), ५ तोला ॥=), १० तोला १=)

## मसान (सूखा रोग)

बच्चों का दिन प्रति दिन सूख कर कांटें के समान होते जाना, सर्दी, जुकाम, ज्वर, गर्मी और सूखा आदि व्याधियों से घिरे रहना, समस्त शरीर दुर्बल एवं कृश होकर अस्थि पञ्जर मात्र दिखाई देने लगना, चिड़चिड़ापन, बदहज्मी, सूखी उबकाई आना, सोते सोते चौंक पड़ना दांत निकलते समय की तकलीफें, जिगर व पेट की बीमारियां हरे पीले दस्त आना, उल्टी होना, दूध उलटना आदि लक्षण सूखा रोग के होते हैं। सूखा रोग में हमारी ३ औषधि परिचित हैं। उपयोग कर लाभ उठावें।

(क) बाल शोषान्तक अक्सीर नं० १—सूखा रोग में जब खांसी का प्रकोप ज्यादा हो, उस अवस्था में विशेष लाभदायक है।

कीमत—१५ दिन की औषध का ४)

(ख) बाल शोषान्तक अक्सीर नं० २—सूखा रोग में जब दस्तों का प्रकोप हो। कीमत—१५ दिन की औषधि का मूल्य ४)

(ग) बाल शोषान्तक तेल—सूखा रोगी को इस लाल तेल की मालिश सारे शरीर पर करनी चाहिये।

कीमत—२ औंस शीशी १)

**वात नाशक टिकिया**—भिलावा, तेल, समीर पन्नग, शु. कुचला, शु. आमलासार असगन्ध, सोंठ आदि का योग है। सब प्रकार की वायु की दर्दों में लाभदायक है।

मात्रा—१—१ टिकिया प्रातः शाम महारास्नादि क्वाथ या महा रास्नादि तरल सार से दें।

कीमत—३ माशा १।), ६ मा. २=), १ तोला ४)

**पुत्र दाता**—जिन स्त्रियों के लड़के ही लड़के होते हों या जिनको लड़कियां ही लड़कियां होती हों उनकी अवस्था में इसके प्रयोग से परिवर्तन हो जाता है। गर्भावस्था के तीसरे महीने इसका सेवन किया जाता है।

मूल्य—एक बार प्रयोग करने की औषध का मूल्य १०)

**च्यवनप्राश हाइपो कैलसियम युक्त**—अष्टवर्ग युक्त च्यवनप्राश में कैलशियम के लवण को मिला देने से श्वास, कास, यक्ष्मा और फेफड़ों की कमजोरी में विशेष लाभ होता है।

मूल्य—१० तोला शीशी १॥), २० तोला २॥)

**सिद्ध मकरध्वज स्वर्ण युक्त**—बल तथा तेज वर्धक सुप्रसिद्ध सर्वोत्तम रसायन है। दुर्बल तथा बूढ़े रोगियों को पुष्ट करता है। कर्म तथा ज्ञानेन्द्रियों की शक्ति को बढ़ाता है। अद्वितीय तथा शक्ति वर्धक औषध है। हृदय की निर्बलता, क्षय श्वास, प्रमेह, जीर्ण ज्वर मन्दाग्नि आदि को दूर कर बल वीर्य की वृद्धि करता तथा आयु को बढ़ाता है।

मात्रा—१ मात्रा प्रातः १ शाम मक्खन मलाई या मधु या पान पत्ते के साथ सेवन करें।

**महा द्राक्षासव**—यह आसव कास, श्वास राज यक्ष्मा, निर्बलता निद्रानाश, मानसिक श्रम, अरुचि, मलावरोध, सिर दर्द आदि रोगों को दूर करता है। बल वीर्य वर्धक, क्षुधावर्धक तथा वलि पलित का नाश

करता है।

मात्रा—१ औंस में सम भाग पानी मिलाकर भोजन के पश्चात दें। कीमत ४ औंस १) ८ औंस १॥=), १ पौंड ३)

**अंगूरासव**—द्राक्षासव के योग में मुनक्का की जगह अंगूर स्वरस का प्रयोग किया गया है। अंगूरासव कास, श्वास, यक्ष्मा में विशेष लाभकारी है।

कीमत—४ औंस १), ८ औंस २) १ पौंड ४)

**मृतसंजीवनी आसव**—आयुर्वेदिक ग्रन्थों में मृतसंजीवनी सुरा के खींचने का विधान है। पर कानूनन आसव का खींचना निषिद्ध है। इस लिये हमने सुरा न बना कर आसव ही बनाया है।

प्रयोग—वातनाशक, पुष्टी कारक, कामोद्दीपक वीर्य स्तम्भक है। सन्निपात आदि ज्वरों में हृदयावसाद और नाड़ी क्षीणता को दूर करने में अति प्रशस्त है।

मात्रा—१ से २ तोला तक समभाग पानी मिलाकर भोजनोपरान्त दें।

कीमत—४ औंस १), ८ औंस १॥=), १ पौंड ३)

**लक्ष्मणारिष्ट**—लक्ष्मणा बूटी अज्ञात है। उसके अभाव में मयूर शिखा शिवालिंगी बीज, जियापोता का प्रयोग किया गया है। परीक्षण करना चाहिये।

प्रयोग—वन्ध्या रोग के लिये उत्तम है।

मात्रा—१¼—२½ तोला तक सम भाग पानी मिला कर भोजनोपरान्त लें।

कीमत—४ औंस १), ८ औंस २), १ पौंड ४)

**मध्वासव**—यह प्रमेह नाशक है। कीमत—४ औंस ॥=), ८ औंस १=) १ पौं. २)

मात्रा—२॥ तोला।
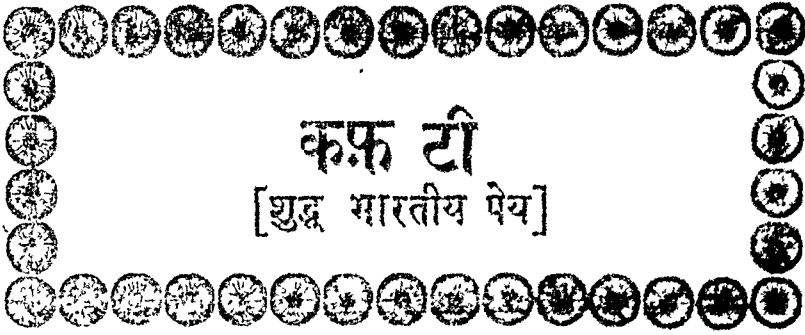
योग—बनफशा, तुलसी पत्र, सौंफ, चन्दन, पिप्पली, इलायची आदि।

१. कफ टी—एक हानि रहित प्रयोग है। जिसका बच्चे, जवान वृद्ध सब प्रयोग कर सकते हैं।

२. कफ टी—खांसी, सर्दी या छाती के रोग होने पर बलगम को नरम करके खांसी को कम कर देती है।

३. कफ टी—भूख लगाती है।

४. कफ टी—दैनिक व्यवहार में चाय की तरह प्रयोग करें।

५. कफ टी—हर मौसम में प्रयोग कर सकते हैं।

प्रयोग विधि—½ से १ तोला तक कफ टी सेर भर पानी में डालें, उबाल आने पर छान कर इच्छानुसार मीठा और दूध मिला कर पान करें।

कीमत—५ तोला का पैकट नेट मूल्य ।-)

सूची पत्र का

# द्वितीय भाग

## शुद्ध पदार्थ, लेप मरहम, क्वाथ, सत्व क्षार तथा लवण, विष, उपविष, वानस्पतिक रोगन, प्राणिज-खनिज द्रव्य आयुर्वैदिक तथा यूनानी वनस्पतियां, उपकरण आदि

---

इन द्रव्यों पर किसी प्रकार की कमीशन या रियायत किसी ग्राहक को नहीं दी जायेगी। यदि किसी औषध या वनस्पति के मूल्य में बाज़ार भावानुसार फर्क हो जायगा तो तदनुसार कीमत लगेगी।

---

जनरल मैनेजर—

**पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी (रजि०)**

सरहिंद ● जबलपुर ● जालन्धर

## फार्मेसी द्वारा प्रस्तुत शुद्ध वस्तुएँ

| | १से. | २०तो. | ५तो. |
|---|---|---|---|
| कज्जली शुद्ध पारद से | ४) | | |
| कपर्दिका [लघु] शुद्ध | ३) | ।।।=) | ।) |
| कांतलोह शुद्ध | ६) | १।।।) | ।।) |
| कुचला चूर्ण ,, | १०) | २।।।) | ।।।) |
| खर्पर | ३०) | ८) | २।।) |
| गन्धक आमलासार शुद्ध | ८) | २) | ।।=) |
| गुग्गुल शुद्ध | ५) | १।।) | ।=) |
| जमालगोटा शुद्ध | | | १।) |
| ताम्र शुद्ध | ६) | १।।।) | ।।) |
| दाल चिकना शुद्ध | | | ५) |
| धतूरबीज श्याम,, | १२) | ३।) | ।।।=) |
| नाग ,, | ५) | १।) | ।=) |
| पारद अष्टसंस्कार पूर्ण शुद्ध | | | १०) |
| पारद हिंगुलोथ शुद्ध | | | ५) |
| पीतल बुरादा ,, | ८) | २।) | ।।=) |
| मण्डूर ,, | २) | ≡।) | ≡) |
| मीठा तेलिया चूर्ण शुद्ध | १२) | ३।।) | १) |
| मनसिल शुद्ध | | | ।।।) |
| यशद ,, | ६) | १।।।) | ।≡) |
| रसकपूर ,, | | | ५) |
| रसौंत ,, | ६) | १।।।) | ।≡) |
| लोह चूर्ण रेती शुद्ध | ४) | १।) | ।–) |
| वंग शुद्ध | | | १।।) |

| | १से. | २०तो. | ५तो. |
|---|---|---|---|
| वज्राभ्रक [धान्याभ्रक] शुद्ध | ४) | १।) | ।–) |
| शंख टुकड़े तथा नाभी शुद्ध | १।।) | ।=) | =) |
| शिंगरफ शुद्ध | | | ३) |
| सीप मोतीदाना शुद्ध | ६) | १।।।) | ।≡) |
| संखिया श्वेत ,, | | | ।।।) |
| स्वर्ण माक्षिक असली शुद्ध | | | १।) |
| हरतालवर्की चूर्ण शुद्ध | | | ३) |

## लेप और मरहम

| | ४०तो. | ५तो. |
|---|---|---|
| दशांगलेप [विसर्परोगे] | ३।।) | ।।) |
| पीली मरहम व्रण रोपक | ३।।) | ।।) |
| श्वेतकुष्ठलेप (श्वित्र कुष्ठे) | ७) | १) |
| सिध्महर लेप (सिध्मरोगे) | ७) | १) |

## क्वाथ

| | १से. | १०तो. |
|---|---|---|
| दशमूल क्वाथ प्रसूतारोगे | १।।) | ।) |
| देवदार्व्यादि क्वाथ [शा. ध.] ज्वर कासे | २) | ।–) |
| महामंजिष्ठादि क्वाथ [शा. ध.] रक्तविकारे कुष्ठे | ३) | ।।) |
| महारास्नादि क्वाथ [शा. ध.] वात रोगे | ३) | ।।) |
| सुदर्शन क्वाथ [शा. ध.] सर्व ज्वरे | ३) | ।।) |

पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी (रजि०)

सरहिन्द ★ जबलपुर ★ जालन्धर

## क्षार तथा लवण

| | १ सेर | २० तो. | ५ तो. |
|---|---|---|---|
| अर्कक्षार | १०) | ३) | १) |
| अपामार्ग क्षार | १०) | १) | १) |
| इमली क्षार | १२) | ४) | १।) |
| कटेली (कण्टकारी क्षार) | १०) | २) | १) |
| कदली क्षार | १०) | ३) | १) |
| गोक्षुरू क्षार | १०) | ३) | १) |
| गोमूत्र क्षार | १०) | ३) | १) |
| पलाश क्षार | १०) | ३) | १) |
| मूली क्षार | १०) | ३) | १) |
| वज्र क्षार | १६) | ५) | १।।) |
| बांसा क्षार | १०) | ३) | १) |
| यव क्षार | १०) | ३) | १) |
| सत्यानाशी क्षार | १०) | ३) | १) |
| स्नुही क्षार | १२) | ४) | १।) |
| सज्जी क्षार | ४) | १=) | ।—) |
| अर्क लवण | ७) | २) | ।।=) |
| अष्टांग लवण | ७) | २) | ।।=) |
| नारी केल लवण | ८) | २।) | ।।=) |

## वर्क (पत्र) सोना चांदी

| | |
|---|---|
| वर्क स्वर्ण १ दफ्तरी १२० पत्र ५ रत्ती | ८) |
| वर्क स्वर्ण १ दफ्तरी १२० पत्र १ माशा | १५) |
| वर्क चांदी १ दफ्तरी १२० पत्र १ तोला | ६) |
| वर्क चांदी चूर्ण साफ नं० १ १तो. | ४) |
| वर्क सोने का चूरा १ माशा | १०) |

## लाइसेन्स विष

(संखिया तथा अन्य विष)

विष मंगाते समय लाइसेन्सदार और वैद्य अपना नम्बर तथा पूरा पता डिवीजन के साथ दें। तथा डाक्टर या वैद्य महोदय पत्र में यह शब्द अवश्य लिखें कि हमें "व्यवहार के लिये चाहिये" तभी विष भेजे जायेंगे।

| नाम विष | १ सेर | ५ तो. |
|---|---|---|
| संखिया सफेद | ६) | ।।) |
| संखिया पीला | | १) |
| संखिया लाल | | १) |
| कुचला | १) | =) |
| दाल चिकना | | ४) |
| धतूर बीज श्याम | १२) | ।।।=) |
| रस कपूर उत्तम | | ४) |
| शृङ्गिक काला [मीठा तेलिया काला] | ७) | ।।=) |
| शृङ्गिक श्वेत | ६) | ।।) |
| हरिताल वर्की चूरा | | ३) |
| हरताल वर्की नं० १ | | ७।।) |

## आयुर्वैदिक वानस्पतिक रोगन और प्राणिज तेल

| नाम वस्तु | १ पौंड | २औं. | ½ औं. |
|---|---|---|---|
| इलायची तेल [विलायती] | | | १) |
| कास्ट्रायल [उत्तम] | २) | ।=) | |
| रोगन वीर बहूटी | | | ।।।) |
| गुल रोगन | ४।।) | ।।-) | =) |
| जमालगोटा तेल [विलायती] | | ६) | १।।) |
| जायफल तेल | | ४) | १) |
| तारपीन तेल | १।।) | ।) | =) |
| नीम तेल [निम्बोली का असली | ३) | ।।) | =) |
| पिपरमेंट आइल (पोदीना तेल ) [विलायती] | | | ३) |
| बावची तेल | ८) | १) | ।) |
| बादाम रोगन | | १।।) | ।=) |
| भिलावा तेल | | १) | ।) |
| माल कंगनी तेल | | ।।।) | ।) |
| यूक्लिप्टिस आइल | | १) | ।) |
| दालचीनी तेल (विलायती) | | ५) | १।) |
| लवंग तेल (विलायती) | | ५) | १।) |
| बिरोजा तेल (विलायती) | | ५) | १।) |
| सौंफ तेल (विलायती) | | | १।।) |
| सन्दल[चन्दन] तेल मैसूर का | | | १।।।) |
| शेर की चर्बी | ११) | १।।) | ।=) |
| रीछ की चर्बी | ८) | १) | ।) |
| सूअर की चर्बी | २।।) | ।।) | =) |

## प्राणिज व खनिज द्रव्य

| नाम वस्तु | १ सेर | १ तो० |
|---|---|---|
| अम्बर अशहब नं० १ [अग्निजार] | | ३०) |
| अभ्रक वज्र बड़े कण का श्याम | १।।) | |
| अभ्रक श्वेत | ।।) | |
| अकीक़ दाना नं० १ चुना हुआ | | १) |
| अकीक नं० २ | | ।।।) |
| अकीक खरड़ | ८) | =) |
| कस्तूरी नैपाली उत्तम नं० १ | | ६५) |
| कस्तूरी काश्मीरी | | ४०) |
| कांतलोह नं०२ [ग्वालियर] | ३) | |
| केंचुए साफ | ७) | =) |
| कौड़ी पीली छोटी | १।।) | |
| कौड़ी पीली मोटी | ३) | |
| खर्पर असली | १५) | ।) |
| गोरोचन असली | | ३२) |
| गोमेद | | ८) |
| गन्धक आमला सार | ४) | |
| जहर मोहरा पत्थर | ५) | |
| जहर मोहरा खताई नं० १ | | १) |
| जस्त फूला(आंखमें डालने का) | | २।।) |

असली केसर, कस्तूरी, अम्बर, मोती, शिलाजीत सूर्यतापी, मधु, हींग, सत्त गिलोय, यवक्षार आदि थोक या परचून हम से मंगवाएं।

| | १ सेर | १तो. |
|---|---|---|
| जोंक | १५) | ।) |
| जुन्द बिदस्तर (असली) | | ३) |
| ताम्र बुरादा (छील) | ५) | |
| नाग (सिक्का) | २) | |
| नील थोथा | २) | |
| नीलम | | ८) |
| नीलम खरड़ | | २) |
| नौसादर देशी | २) | |
| नौसादर टिकिया | १।।।) | |
| नौसादर डण्डा | १।।) | |
| पन्ना [जमुर्रद] | | ७) |
| पन्ना खरड़ | | १।।) |
| प्रवालशाखा नं० १ | १५) | |
| प्रवालशाखा नं० २ | १२) | |
| प्रवालशाखा नं० ३ | १०) | |
| प्रवाल मूल | ३) | |
| पारद | ३८) | ।-) |
| पीतल चूर्ण बुरादा | ४) | |
| पुखराज | | ७) |
| फिरोजा खरड़ | | ४) |
| फिटकर श्वेत तथा लाल | ।।=) | |
| बंग [कलई] ईंट की | १२) | |
| बारासींगा [मृगशृंग] | १।।) | |
| बेर पत्थर | ५) | |
| मुर्दासंग | ३) | |
| मण्डूर पुराना | ।।) | |
| मैनसिल | ४) | |
| माणिक्य नं० १ | | ८) |

| | १ सेर | १तो. |
|---|---|---|
| माणिक्य खरड़ | | २) |
| मोती बसरई नं० १ | | ७५) |
| मोती आस्ट्रेलिया नं० १ | | ७५) |
| मोती मेडौल बड़ा दाना नं १ | | ४८) |
| मधु श्वेत | ४) | |
| यशद [जस्त] | ३) | |
| रूपामक्खी चौकोर उत्तम | ४) | |
| लोह चूर्ण गुण्ड | १) | |
| ,, ,, रेती का | ३) | |
| लाख पीपल | २।।) | |
| वैक्रांत | ८) | |
| शिलाजीत पत्थर | २।।) | |
| शिलाजीत सत्व [सूर्यतापी] | ४०) | ।।।) |
| शंखनाभी | १) | |
| शंख टुकड़े | ।।।) | |
| शोरा कलमी | १) | |
| सफेदा काशगरी | ।।।=) | |
| समुद्र फेन | ३) | |
| सिंदूर | ३) | |
| शिंगरफ रूमी | ३८) | |
| सीप मोती असली छेदवाले | ५) | |
| सुरमा काला | ४) | |
| सुहागा विलायती | १।।) | |
| सोना गेरु | ।=) | |
| सोनामक्खी असली | १२) | |
| सोना मक्खी नं० २ | ३) | |
| हरताल गोदन्ती | १) | |

पारा, प्रवालशाखा, वंग, मनसिल, शिंगरफ आदि के भाव ऑर्डर आने पर बाजार भाव से लगाये जायेंगे। इस के भावों में परिवर्तन की सम्भावना ज्यादा रहती है।

# आयुर्वैदिक तथा यूनानी वनस्पतियां

| नाम वनस्पतियां | १ सेर |
|---|---|
| अष्टवर्ग | ५) |
| अकरकरा नं० १ | १०) |
| अकरकरा नं० २ | ५) |
| अगर बुरादा असली | ५) |
| अजमोद | ।।।) |
| अजवायन दाना | ।।।) |
| अतीस कड़वी नं० १ | २६) |
| अतीस मीठी | ५) |
| अतिबला पंचांग (कंघी) | ।।।) |
| अनन्तमूल बंगाल | १।।) |
| अनन्तमूल [देशी] | ।।।) |
| अनारदाना | १।।) |
| अपराजिता [विष्णुक्रांता] | २) |
| अम्लवेद गुच्छी [चुका] | ४।) |
| अमलतास गूदा | ।=) |
| अर्जुनत्वक् | ।।) |
| अरणी छाल | ।।।) |
| अशोकत्वक् बंगाल | १) |
| असगन्ध नागौरी | २) |
| अंजबार | ।।।) |
| आंवले सूखे | ।≡) |
| आम्बा हलदी | १) |
| आबरेशम | १६) |
| आलू बुखारा | २।) |
| इन्द्रयव [मीठे] | १।।) |
| इन्द्रायण मूल | ।।।=) |
| ,, फल | ।।।=) |

| नाम वनस्पतियाँ | १ सेर |
|---|---|
| इलायची छोटी | २५) |
| ,, बड़ी | ४) |
| इलायचीदाना बड़ी का | ७) |
| इश्कपेचा [काला दाना] | १।) |
| इरिमेद छाल | ।।) |
| ईसबगोल दाना | १।) |
| ईसबगोल सत्व | ४।।) |
| उटंगन | २) |
| उन्नाव असली | २।) |
| उशबा मगरबी | १२) |
| उलट कम्बल | ८) |
| उस्ते खद्दूस | २०) |
| उशारारेवन्द | २५) |
| एलुवा [मुसब्बर] नं० १ | ८) |
| ऋषभक् (हरा) | ३) |
| ऋद्धि [चिड़ियाकन्द] | ३) |
| कचूर | १) |
| कंकोल दाना | १) |
| कंटकारी लघु | ।।) |
| कंटकारी वृहद् | ।।।) |
| कत्था लाल | ५) |
| कत्था सफेद | १०) |
| कपित्थ फल | ।।।) |
| कमीला | ४) |
| कपूर देशी | १२) |
| कपूर भीमसेनी | ।।) तोला |

| नाम वस्तु | १ सेर | नाम वस्तु | १ सेर |
|---|---|---|---|
| कमरकश [पलाश गोंद] | २।) | गज पीतल | ॥=) |
| कमल फूल लाल | ३) | गन्ध प्रसारणी | ।।) |
| कचनार छाल | ।।) | गम्भारी त्वक् | ।।) |
| करंज बीज फल | १।) | गावजुबां | १।) |
| कनेर मूल श्वेत | ॥=) | गिलोय सूखी | ॥=) |
| काश्मीरी पत्ता | १) | गुग्गुल | २) |
| काकोली बंगाल | १०) | गुंजा श्वेत | ४) |
| कहरवा शमई मोटा | १०) | गुड़मार बूटी | ॥) |
| काकड़ासिंगी | ३॥) | गुल बनफशा | १२) |
| कायफल | ।॥) | गुल सुर्ख देशी | ५) |
| कालमेघ | १) | गुल सुपारी | २) |
| काली जीरी | १=) | गोंद कतीरा | ३) |
| काहू | १।।) | गोरख मुण्डी | ।।) |
| कुटकी [कौड़ नं० १] | ३) | गोखरू पंचांग लघु | ।-) |
| कुठ कड़वी | २।।) | गोखरू फल छोटा | ॥) |
| कुठ मीठी | १।॥) | गोखरू बृहद् | १।।) |
| कुटज छाल | ॥) | गोरीसर [सलारा] | १) |
| केसर मोंगरा काश्मीरी ६) तोला | | चक्रमर्द बीज | ॥) |
| केसर सूरज छाप असली ८) तोला | | चन्दन श्वेत बुरादा असली | ५।) |
| केसर काश्मीरी चूरा ३) ,, | | चन्दन लाल बुरादा | १।) |
| कौंच बीज काले छोटे १) सेर | | चव्य | २) |
| खसखास | १।।) | चावल मोंगरा बीज | ४) |
| खस साफ | १।।) | चित्रक मूल त्वक् | ३।।) |
| खदिर छाल | ॥=) | चिरायता कड़वा | १।॥) |
| खूब कलां | १।) | चोपचीनी असली | ६) |
| गंगेरन छाल | ।॥) | चोक मूल | १।।) |

उत्तर प्रदेश के लिये सोल एजण्ट की आवश्यकता है। पत्र व्यवहार करें।

| नाम वस्तु | १ सेर |
|---|---|
| छरीला [शिला पुष्प] | १=) |
| जलनिंब | १।।।) |
| जलापा हरड़ नं० १ | ८) |
| जवासा पंचांग | ।।।) |
| जामुन गुठली तथा छाल | ।।।) |
| जायफल | ७) |
| जावित्री असली | २०) |
| जीयापोता | १।।) |
| जीवक | ३) |
| जीरा श्वेत | २।।।) |
| जीरा काला नं० १ | ८) |
| जीवन्ती बंगाल | ३) |
| जैपाल बीज [जमालगोटा] | ५) |
| तगर | २।) |
| तालीस पत्र | २) |
| तालमखाना | ३) |
| तिन्तड़ीक [समाकदाना] | ।।।=) |
| तेज पत्र | ।।।) |
| तेज बलत्वक् | १।।) |
| तेजबल बीज (कबावा) | १।।।) |
| दन्ती मूल | १) |
| दालचीनी असली | २।) |
| दशमूल कुटा [क्वाथ] | १) |
| दारु हल्दी [लकड़ी] | ।=) |
| दरियाई नारियल | ७) |
| देवदारु बुरादा | १) |

| नाम वस्तु | १ सेर |
|---|---|
| देवदाली फल [बंदाल डोडा] | १) |
| धनियां | १) |
| धमासा | ।।) |
| धवल बरुआ [सर्पगन्धा] छोटा-चान्द, चन्द्रभागा | १८) |
| धात की पुष्प [धावे के फूल] | ।।=) |
| नक छिकनी असली | ।।।) |
| नागर मोथा | ।।=) |
| नागकेसर असली पीलीतुरीवाला | २०) |
| नागकेशर बाजारी दाना | ३) |
| नागबाला | ।।।) |
| नासपाल | ।।) |
| निम्बोली | ।।) |
| निम्ब त्वक् | ।।) |
| निर्गुण्डी [सम्भालु] पंचांग | ।।=) |
| ,, बीज | ।।।=) |
| निर्मली बीज | १) |
| निर्विसी [जदवार] | १२) |
| निशोथ [त्रिवृत्ता] नं० १ | ६) |
| नीलोफर फूल | १।) |
| नेत्र बाला (सुगन्ध बाला) | १।।) |
| पटोलपत्र | ।।।) |
| पद्म काष्ठ | ।।) |
| प्रसारिणी [खीप] | ।।=) |
| पाटला त्वक् | ।।।) |

वनस्पति किराने के भाव बाज़ार भावानुसार घट बढ़ सकते हैं।

| नाम वस्तु | १ सेर |
|---|---|
| पाठा मूल [जलजमनी] | १।) |
| पानड़ी असली | ३) |
| पाषाण भेद | ।।।) |
| पिप्पली वृहत् | ७) |
| पिप्पला मूल नं० १ | ६) |
| पित्त पापड़ा [शाहतरा] | ।।) |
| प्रियंगु फल बंगाल | १०) |
| ,, ,, पंजाब असली | २।।) |
| पुनर्नवा मूल श्वेत | १) |
| पोदीना सूखा देशी | ।।।≡) |
| पुष्कर मूल असली | ३।।।) |
| पृष्टपर्णी लम्बा पत्र | १।।) |
| ,, बड़े पत्र | १) |
| पतंग काष्ट | ३) |
| वच तीक्ष्ण | ।।।) |
| वच मधुर [दुग्ध वच] | ४) |
| बला पंचांग | ।।।) |
| बहमन श्वेत | २) |
| बहमन लाल | २) |
| बहुफली | १) |
| बहेड़ा फल | ।) |
| बाल छड़ [जटामांसी] | २।) |
| बराही कन्द | १) |
| बावची | ।।।) |
| वंसलोचन [कलकत्ता] नं० १ | ४०) |
| ,, २—३ | ३८) ३५) |

| नाम वस्तु | १ सेर |
|---|---|
| बांसा पंचांग | ।) |
| विजया [भांग] बीज | १।।) |
| विडंग [वाय विडंग] | ।।=) |
| बिही दाना | १२) |
| विदारी कन्द | १) |
| विधारा मूल | ।।।) |
| विधारा बीज | १०) |
| बीजा बोल [मुरमकी] | ८) |
| बिल्व त्वक | ।।) |
| विजयसार छाल | १) |
| विजयसार गोन्द [दमउल खवैन] | ३०) |
| ब्राह्मी बूटी असली | २) |
| वरुण त्वक् | ।।) |
| भल्लातक [भिलावा] | ।=) |
| भारंगी | ।।।) |
| भांगरा पंचांग | ।।।) |
| भोजपत्र | १।।) |
| मयूर शिखा | १।।) |
| ममीरी मूल पीत | ८) |
| मंजीठ | २) |
| महाबला [सहदेवी] | ।।।) |
| महुआ छाल | ।।।) |
| महुआ फूल | ।।=) |
| माजूफल | ५) |
| माषपर्णी | १) |

जायफल, पिप्पली, काली मिरच, लौंग, सोंठ आदि के भाव समयानुसार बाजार भाव लगाये जायेंगे।

| नाम वस्तु | १ सेर | नाम वस्तु | १ सेर |
|---|---|---|---|
| मरिच काली | ५) | लोबान कौड़िया | २।) |
| मुनक्का काला आबजोश | २॥) | शंख पुष्पी | १) |
| मुनक्का काला असली | २) | शालपर्णी | ॥।) |
| मुद्गपर्णी | १) | शिवलिंगी बीज | ५) |
| मुलहठी | १।) | श्योनाक छाल | ॥।) |
| मूसली श्वेत | १५) | सतावर | १॥) |
| मूसली श्याम | १।) | सत्यानाशी बीज | ॥।=) |
| मूर्वा मूल असली | १॥) | समुद्र फल | १) |
| मेदा [शकाकुल] | १॥) | सपिस्तान | ॥=) |
| महामेदा | ६) | सनाय | १॥) |
| मौलश्री त्वक् | १) | सप्तपर्णी त्वक् | १॥) |
| मस्तगी रूमी असली | २०) | सिरस छाल | ॥=) |
| मोचरस असली | २॥) | सिरस बीज | ५) |
| रसौत असली | ४) | सिम्बल मूसली | १॥) |
| रास्नापत्र | १) | सर्द चीनी [शीतल चीनी] | ६) |
| रास्नामूल बंगाल | १॥) | सकमूनिया [कंटनी मार्का] | १६) तो. |
| राल | २॥) | सालब पंजा | २०) सेर |
| रेणुका बीज | २) | सालब मिश्री | २५) |
| रेवन्द चीनी | १॥।) | सालब गट्टा | ८) |
| रूब्बुलसूस [सत्व मुलहठी] | १०) | सालब लहसुनी | ८) |
| रोहितक छाल | १) | सुगन्धबाला पंचांग | १॥) |
| लता कस्तूरी [मुश्क दाना] | ६) | सुपारी दक्षिणी | १॥) |
| लाजवन्ती बीज असली | २॥) | सोंठ | ३।) |
| लवंग [लौंग] | १२) | सोमवल्ली [इफेड्रावलगेरिस] | २) |
| लांगली मूली [कलिहारी] | ५) | सौंफ | १) |
| लोध पठानी | ॥।) | सोभांजन छाल | ॥) |

पटियाला आयुर्वेदिक फार्मेसी (रजि०)

सरहिन्द ★ जबलपुर ★ जालन्धर

| नाम वस्तु | १ सेर |
|---|---|
| रीभांजन बीज | ३॥) |
| हरड़ साधारण | ॥) |
| हरड़ जंग [काली] | ॥।) |
| हाउवेर | १) |
| हिंगु पत्री | १) |
| हींग अंगूरी | २०) |
| हींग हीरा | २०) |
| हींग बाजारी | ८) |
| क्षीर काकोली बंगाल | ८) |

## आयुर्वैदिक सत्व तथा घनसत्व

| नाम वस्तु | ८० तो. | ५ तो. |
|---|---|---|
| अमलतास घनसत्व | ५॥) | ॥=) |
| गिलोय सत्व सफेद | ८) | ॥≈) |
| सत निंबू असली | ५) | ॥) |
| रसौंत घनसत्व | ६) | ॥) |
| मुलहटी सत्त | १०) | ॥।) |
| लोबान सत्व विलायती | | १) |
| सत पोदीना असली | | १) तोला |
| सत अजायन | | ॥) तोला |

नोट—जबलपुर ब्रांच में आयुर्वैदिक वनस्पतियां तथा प्राणिज, खनिज द्रव्य सरहिन्द के भाव पर ।-) सेर रेल का किराया =) रुपया महसूल चुंगी तथा बिक्री टैक्स लगा कर मिलेंगी।

पटियाला रसायन शाला का खरल मैशीन विभाग

# सम्मतियां तथा शुभ कामनाएँ

पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी की औषधियों की उपयोगिता के विषय में योग्य विद्वानों की बहुत सम्मतियों में से कुछ एक सम्मतियां तथा शुभ कामनाएँ इस प्रकार हैं—

(१) २५-११-४८ के रोज आपकी फार्मेसी द्वारा जो द्रव्य हमको मिला है जो बहुत उमदा था इस बाबत हम आभारी हैं।

हस्ताक्षर—जी भाई राम भाई वैद्य
दहेज (भड़ौच)

६-३-४९

(२) भवता प्रेषितानि जीवनीयानि गण द्रव्याणि बहु उत्तमीयानिति प्रमोदं जनयते मे मनः। हस्ताक्षर—

टी गोपा लैय्या वेंकटागी रिटाउन (नेल्लौर)

१५-३-४९

(३) आपकी वी. पी. मुझे मिली। बड़े हर्ष की बात है कि आपका माल अति सुन्दर निकला। हस्ताक्षर—

वैद्य धर्मपाल सिंह, अतरौली

६-४-४९

(४) फार्मेसी की औषधियों का मैंने स्वयम् प्रयोग किया है वे सर्वथा शास्त्रीय तथा शुद्ध हैं। वैद्य समाज उक्त फार्मेसी से लाभ उठा सकता है

हस्ताक्षर—गयाप्रसाद शास्त्री वैद्य
अध्यक्ष हैद्राबाद स्टेट आयुर्वेद महामण्डल
मुरलीधर बाग (हैद्राबाद)

२१-१०-४९

(५) शास्त्रीय विधि से धातुओं का शोधन मारण पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी में होता है। आप की विश्वसनीय औषधियों का मुझे अत्यन्त विश्वास है।

हस्ताक्षर—वैद्य ब्रह्मानन्द दीक्षित, विद्यालंकार, आयुर्वेदाचार्य
आगरा

६-६-५०

(६) आप को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि शामक टिकिया ने जोरदार काम किया। इससे मैंने पुराने निद्रानाश पीड़ित दो रोगियों

को मुक्त किया। वास्तव में निद्रानाश पर आपका यह प्रयोग रामबाण है। मैं जनता से भी इसके प्रयोग करने का आग्रह करता हूँ।

हस्ताक्षर—वैद्य पं० चन्द्रशेखर जैन शास्त्री
१४-७-५० जैन धर्मार्थ औषधालय, जबलपुर

(७) अब तक कई एक फार्मेसियों द्वारा प्रस्तुत औषधियों का व्यवहार हमने किया किन्तु जो विशेषता 'पटियाला आयुर्वेदिक फार्मेसी'' की औषधियों में हमने पाई वह अन्य किसी में नहीं। इसका एक मात्र कारण यही हो सकता है कि इस फार्मेसी में औषधिया आधुनिक ढंग द्वारा शास्त्रोक्त विधि से ही निर्माण की जाती हैं। तभी तो वैद्यों को इससे चिकित्सा में यश प्राप्त होता है। हम विश्वास के साथ वैद्यों से प्रार्थना करते हैं कि वे एक बार स्वयम् इसका अनुभव करें। उन्हें अवश्य सन्तोष होगा। फार्मेसी के संचालक या व्यवस्थापक वर्ग का व्यवहार अत्यन्त सरल है, साथ ही योग्य दामों पर सच्ची औषधियां उच्चतम पैकिंग में सप्लाई करके देश के धन को देश में रखना एवं आयुर्वेद की सेवा करना ही इनका एक मात्र ध्येय वर्तमान प्रणाली को देखते हुये प्रतीत होता है। यदि इसी लगन के साथ ये लोग कार्य-व्यस्त रहे तो आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि निकट भविष्य में इस फार्मेसी को उच्च स्थान मिल सकेगा। हस्ताक्षर—

४-५-५१ वैद्य—खेमराज शर्मा छांगाणी, आर्वी

(८) हमने आपके कारखाने की दवाइयां सेठ रघुवीर शरण के यहां से लेकर इस्तेमाल की, और मरीजों को इस्तेमाल कराई फायदा आश्चर्य जनक हुआ। सब दवाएं सच्ची आयुर्वेदिक रीति पर बनी हुई हैं।

हस्ताक्षर—वैद्य गंगादीन, बांदा यू. पी.

(९) मेरा अनुमान है कि इस इलाके के वार्षिक सैकड़ों ऑर्डर मेरे निर्णय या राय पर आप के यहां गये है। यद्यपि मैं हिन्दुस्तान की सैकड़ों फार्मेसियों को अच्छी तरह जानता और अच्छी तरह से विदित हूं तथापि मुझे जब से आपकी फार्मेसी से परिचय हुआ अत्यधिक प्रसन्न

हूं। आपकी संस्था की और आपकी जगदीश से सर्वदा समुन्नति की कामना है। मेरे अनुभव में मुझे आपके यहां की बनी औषधियों के प्रति व पैकिंग के प्रति शुद्धता, शास्त्रोक्त विधि से निर्मित होने पर अधिक विश्वास व श्रद्धा है।

हस्ताक्षर—
वैद्य राधाकृष्ण जी किमोठी आयुर्वेदाचार्य

८-६-५१

(१०) I am using your "Chyavan prash & found it to be most afficient ? Also used your "chandra prabha vati" to my great satisfaction.

८-६-५१ हस्ताक्षर.—W. Bhale. Amravati. 12/12/51

(११) आपका "अशोकारिष्ट" बहुत अच्छा साबित हो रहा है। आशा है कि भविष्य में भी आप अपनी औषधियों को सर्व गुण सम्पन्न बनाते रहेंगे। इसकी मुझे पूर्ण आशा है। आपकी अन्य औषधियां भी सर्व गुण सम्पन्न हैं।

हस्ताक्षर—
कविराज शान्तिस्वरूप सोनी

१४-१-५२

(१२) मैंने पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी की औषधियां कई बार अपने औषधालय में उपयोग की और बहुत ही सन्तोषजनक परिणाम मिला। आयुर्वैदिक औषधियां प्रचुर मात्रा में तय्यार करने वाली यह उत्तर भारत की प्रमुख रस शाला है। मैं हृदय से इस संस्था की उन्नति चाहता हूं।

हस्ताक्षर—पं० दीनदयालु तिवारी आयुर्वेदाचार्य
सदस्य आयुर्वैदिक यूनानी चिकित्सा बोर्ड,
नागपुर मध्य प्रदेश

११-२-५२

(१३) आपकी भेजी हुई औषधियां हमें प्राप्त हुई। हम अत्यन्त कृतज्ञता पूर्वक आपको सूचित करते हैं कि हिन्दुस्तान में सर्व श्रेष्ठ फार्मेसी होने के योग्य 'पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी" ही है। औषधियां अत्युत्तम प्राप्त हुई हैं।

हस्ताक्षर—जनार्दन शर्मा वैद्य शास्त्री,
प्रधानमन्त्री तहसील वैद्य सभा इगलास

२२-४-५२

(१४) पटियाला 'च्यवनप्राश, द्राक्षारिष्ट आसव अरिष्ट, रस, अभ्रक भस्म श्वास, कास, क्षय, दुर्बलता, अजीर्ण आदि के शत्रु है'। 'पटियाला

प्रदर नाशक वटी, सुपारी पाक तो सचमुच ही महिला समाज के जन्म जातशत्रु प्रदर के लिये रामबाण एवं अपूर्व उपहार हैं। मुझे इनका सेवन कराने का अवसर प्राप्त हुआ है। हस्ताक्षर

आचार्य रसेशचन्द्र उपाध्याय बी. आई. एम. एस.

१५-१२-५२ रामपुरा

१५) मैं पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी की औषध चार पांच वर्ष से निरन्तर प्रयोग में ला रहा हूं। जो कि मेरे अनुभव में बहुत ही गुण-कारी साबित हुई हैं। उत्तरी भारत की यह प्रमुख रसशाला है जो सच्चे रूप में शुद्ध आयुर्वैदिक औषध निर्माण कर देश की सेवा कर रही है। इनके औषध सस्ते होते हुये भी अपूर्व गुणकारी हैं। मैं फार्मेसी की उन्नति चाहता हुआ वैद्य बन्धुओं को प्रेरणा करता हूँ कि वह पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी की गुणकारी औषधि प्रयोग में अवश्य लावें।

२३-८-५३ हस्ताक्षर—वैद्य के. जी. जानकीराम मुदलियार अकोला

(१६) आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति की रक्षा और उन्नति के लिये जिन्हें दिलचस्पी हो वह फार्मेसी को सहायता और सहयोग प्रदान करें। मैं इस फार्मेसी की औषधियां प्रयोग करता हूं और अच्छी तथा फलप्रद पाता हूँ। हस्ताक्षर—प्रकाशनाथ तिवारी वैद्य

१७-४-५४ प्रधान पञ्जाब प्रान्तीय वैद्य मण्डल, जालन्धर

(१७) पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी की औषधियों का प्रयोग किया है जो गुणों में यथावत् हैं। उत्तम औषध निर्माता ऐसी फार्मेसी की अहर्निश उन्नति चाहता हूं। हस्ताक्षर—

१८-४-५४ प्रियव्रत वैद्यवाचस्पति, शास्त्री, जालन्धर

(१८) मैंने पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी की कतिपय औषधियों का प्रयोग अपने कई एक रोगियों पर किया जो वस्तुतः अनुपम प्रतीत हुईं। मैं आशा करता हूँ कि यह फार्मेसी आयुर्वेद का नाम अपने सदा-चरण से उज्ज्वल करेगी। हस्ताक्षर—वैद्य शिरोमणि नारायणदत्त शर्मा

१६-४-२४ आयुर्वेद महोपाध्याय जालन्धर

**पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी (रजि०)**

**सरहिन्द * जबलपुर * जालन्धर**

(१६) आ० औषधालय नाद् घाट
ता० १—६—५४

श्रीमान् व्यवस्थापक जी पटियाला आर्वैदिक फार्मेसी जबलपुर

महोदय,

आपकी फार्मेसी द्वारा भेजी गई औषधियों में से मैंने नवागढ़ औषधालय में विशेप कर श्वासचिन्तामणि तथा लक्ष्मीविलास का प्रयोग दो श्वास रोगियों पर किया। अद्वितीय लाभ पहुंचाया रोगी स्वयम् कहता है कि दो दिनों में ही उसे आधी बीमारी निकल गई जैसे प्रतीत हुआ। ऐसी शुद्ध औपधियों के निर्माण के लिये आपकी हम प्रशंसा करते हैं। कृपया नीचे लिखी दवाइयां वी. पी. द्वारा नांद्घाट के पते पर भेजें।

*(१) श्वासचिन्तामणि ६ माशे (२) लक्ष्मीविलास ६ माशे*

आपका—
विश्रामधर शर्मा ए. एम. एस.

(२०) पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी की औषधियों का अनुभव करने के पश्चात् मैं इस परिणाम पर पहुंचा हुं कि उक्त फार्मेसी के संचालकों का कार्य प्रशंसनीय है। खनिज काष्ठादिक मणि मुक्तादि औषधियां यहां से विश्वस्त मिलती हैं। यदि ऐसी फार्मेसियां देश में और भी हो जांय तो आयुर्वेद का गौरव है।

हस्ताक्षर—रामजीलाल शास्त्री, फिरोजाबाद आगरा

(२१) च्यवनप्राश अवलेह (अष्टवर्ग युक्त) को स्थायी रूप से प्रयोग करता हूँ और अब तक बहुधा गुरुकुल कांगड़ी से मंगवाया करता था। किन्तु गत माह में मुझे अपने मित्र के यहां जाना पड़ा। उस समय मैंने उनके यहां आपके यहां का बना हुआ उक्त अवलेह देखा उसे सेवन भी किया। ऐसा करने से मुझे वह अधिक भला प्रतीत हुआ।

१७-१-५४ हस्ताक्षर—मुन्शीलाल गुप्ता, आगरा

(२२) चतुर्दश पञ्जाब प्रान्तीय आयुर्वेद महा सम्मेलन अमृतसर

पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी को उत्तम आयुर्वेद औषधि प्रदर्शनार्थ प्रदर्शन समिति के निर्णयानुसार प्रशंसा पत्र सहर्ष प्रदान किया जाता है।

स्वागताध्यक्ष— १. स्वागत प्रधान मन्त्री—मदनमोहन पाठक
कृष्णदयाल २. प्रदर्शन मन्त्री—छविदत्त शर्मा आयुर्वेदाचार्य

(२३) श्री पटियाला राज्य संघ आयुर्वेदीय द्वितीय वैद्य महासम्मेलन भटिण्टा

पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी सरहिन्द, श्री मद्भ्यः आयुर्वैदिक औषध तथा कला विज्ञाने स्वागत समितिः पटियाला राज्य संघ आयुर्वेदीय द्वितीय वैद्य महा सम्मेलनाधिवेशने उच्चतम प्रमाणपत्रम् सबहुमानं वितरति।

| स्वागताध्यक्ष | स्वागतमन्त्री | सभापति |
|---|---|---|
| मुन्शीराम | ब्रह्मानन्द | रामप्रसाद |

(२४) TRUE COPY

*No. 9952-Dev, dated Kasauli. the 29th Dec., 1953.*

From,

The Director of Health Services, punjab.

To,

The General Manager,
The patiala Ayurvedic pharmacy,
Sirhind

Refeaence your letter No. 3145 dated the 5th December, 1953. Yonr name has already been registered for inviting quotations fcr tne purchase of Ayurvedic and Unani medicines in future.

Sd/...................
P. C. M. S.
Deputy Director.
For Director of Health Services, punjab.
28/12.

(२५) TRUE COPY.

No. M. 61-347/50.

To,

The District Medical Officers,
Mandi/Sirmur.

Dated Simla-4, the 22nd december, 1953.

Sub:— REGISTRATION OF FIRM.

The firm named "Patiala Ayurvedic Pharmacy (Registered) Sirhind has been registered as an approved firm for the supply of Ayurvedic Medicinal herbs and raw materials required for tne preparation of Ayurvedic medicines in our Ayurvedic Pharmacies Joginderngar and Majra. Quotations may please be obtained whenever necessity arises.

Sd/........................

Director of Health Services, Himachal

No. M. UI-347/50. Date the 22nd december; 1953.

(२६) To

Messrs. Patiala Ayurvedc Pharmcy (Regd)
Sirhind. (Patiala) Union)

Dear Sir,

Your Patent medicine "ASHOKAMRIT" has given satisfactory results and has been appreciated by the medical practitioners.

Yours feithfully

Sd/.........................

For Amar Medical Stores.

20-7-54

(२७) I was very glad to meet pt. Brahmanand Ji Ayurvedalkar. in charge Patiala Ayurveic Pharmacy Jubbulpur, who had brought some of Raw material and prepared medicines in the Ayurvedic Exhibition held at the occasion of the opening ceremony of Government Ayurvedic School Raipur.

Pandit ji has a charming personality and also holds stocks of standard herbs. I recommand him to those who love genuine medicines and Raw materials of Ayurvedic and Uuani system.

2- The Phrmacy which he represents, is an old one and has established its name for supply of a above said Drugs and herbs.

I wish success to the Pharmacy Proprieters and Pandil ji both.

Sd/-Shukdeva Sharma
M. O. L. G, A. M. S.
Sahitya-Ayurveda Sankhyayogacharya
Superintendent of Government
Avasthi Ayurvedic School
Raipur

17-8-50

(२८) Office of the Deputy Commissioner RAIPUR.
22nd Augst, 1950

Certificate

It gives me great pleasure to give this testimonial to Patiala Ayurvedic Pharmacy, Arya Smaj Road Sirhind, (E. P. R.) who had put up their stall of medicines etc, in the Ayurvedic Exhibition held in connection with the opening ceremony of the N. P. Awasthy Ayurveda Vidyalaya, Raipur, by the Honable the ChiefMinister of Madhya pradesh, on the 15th August 1950.

2. The Manager of Patiala Ayurvedic Pharmacy

Branch Jawahrganj Jabblpur, took commendable pain in making the stall of his Firm, an attractive item in the Exhibition. The Artistic display of his products aroused considerable interest in them amongst the visitors to the Exhibition.

3. Their products attracted all classes of people and I feel that the Firm deserves recognition and encouragement.

Sd/-
Deputy Comissioner
Raipur.

(२६) Dear friends :-

My wife and I have enjoyed our visit to the Ayurvedic Pharmacy very much. The opportuuity of seeing the manufacture of Indian medicines was greatly appreciated You are te be complemented on the successfull private enterprise you have built up an unaided by outside help'

We thank you kindly for your hospitality and interest in us. We wish you continued success and the best of every thing.

Jai Hind.

Sd/ Mr & Mrs W.G. Mitchell
P. O. Nangal Township
Distt. Hoshiarpur,
Punjab in India.

# पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी

—के—

# व्यापारिक नियम

१. इससे पूर्व के समस्त सूचीपत्रों के भाव रद्द समझें जांय।

२. औॅर्डर देते समय अपना नाम पूरा पता स्टेशन आदि स्पष्ट लिखना चाहिये।

३. फार्मेसी निर्मित औषध का ऑर्डर ५०) का जरूर होना चाहिये। इससे कम ऑर्डर पर कोई कमीशन नहीं दिया जायगा। कमीशन सिर्फ एजण्टों या स्टाकिस्टों या सोल एजण्टों को ही दिया जाता है।

४. २) से कम मूल्य का पार्सल नहीं भेजा जायगा।

५. नये ग्राहकों को ऑर्डर के साथ कम से कम चौथाई मूल्य पेशगी जरूर भेजना चाहिये।

६. सूचीपत्र में निर्दिष्ट भावों के अतिरिक्त पोस्ट, पैकिंग, रेल किराया, बिक्री कर आदि खर्च ग्राहक को देने होंगे।

७. प्रत्येक छोटे पार्सल पर -) तथा बड़े पार्सलों पर -) सैकड़ा अशोक स्कूल के लिये लगाया जायगा।

८. आज कल पोस्ट खर्च ½ सेर के पार्सल पर ।।।≡) लगते हैं। ½ सेर से अधिक वजन पर प्रत्येक ½ सेर पर ।।) और लगते हैं। इस लिये औषध मूल्य के अतिरिक्त पोस्ट खर्च को ध्यान में रख कर ऑर्डर दें। वी. पी. आने पर जरूर स्वीकार करनी चाहिये। ध्यान रहे ५ दिन बाद वी. पी. वापिस हो जाती है। इसमें असावधानी न करें अन्यथा व्यर्थ नुकसान होगा।

९. कदाचित् यदि बिल में कोई गलती भी हो तब भी वी. पी. स्वीकार कर लें पीछे उसका संशोधन कर दिया जायगा।

१०. वनस्पति, किराना के भाव समयानुसार बदलते रहते हैं। ऑर्डर के समय जो भाव होगा उसी भाव से माल भेजा जायगा।

---

**पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी (रजि०)**

**सरहिन्द ❂ जबलपुर ❂ जालन्धर**

११. सूचीपत्र भाग २ में वर्णित वनस्पति, किराना, शुद्ध वस्तु, क्वाथ, केसर, कस्तूरी, मोती, अम्बर, विष, उपविष, क्षार, प्रवास पेटिका, उपकरण आदि द्रव्यों पर किसी प्रकार का कोई कमीशन या रेल किराया आदि किसी भी ग्राहक को न दिया जायगा।

१२. एजण्टों या स्टाकिस्टों, सोल एजण्टों को एजन्सी नियमानुसार कमीशन, बोनस, रेल किराया, पैकिंग आदि की सुविधा दी जायगी। इसके लिये एजन्सी नियम मंगवाकर देखें। साधारण ग्राहकों को कमीशन, रेल किराया आदि की कोई रियायत नहीं दी जाती।

१३. औषध व्यवस्था—रोग का पूरा विवरण लिख कर भेजने पर फार्मेसी के वैद्यों का बोर्ड रोग का निदान कर उचित औषध व्यवस्था कर सकेगा। इसके लिये =) का लिफाफा भेजना जरूरी है।

१४. पत्र व्यवहार के लिये जवाबी कार्ड या लिफाफा जरूर भेजें।

१५. वृहत् सूचीपत्र तथा पंचांग मंगवाने के लिये ।।) का टिंकट भेजना जरूरी है।

१६. सब प्रकार की शीशी, कार्क **पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी जवाहरगंज जबलपुर** से मिल सकेंगी। शीशी भेजने पर रास्ते की टूट फूट की जिम्मेवारी फार्मेसी की न होगी।

१७. फार्मेसी की ओर से प्रत्येक प्रान्त में सोल एजन्सी या ब्रांचें स्थापित की जा रही हैं। इसलिये ऑर्डर अपने प्रांत की ब्रांच में ही भेजें। जिन प्रान्तों में हमारी सोल एजन्सी या ब्रांच नहीं हैं वे अपनी सुविधा अनुसार अपने समीप के स्टाकिस्ट से लें अथवा प्रधान कार्यालय से मंगवा लें।

१८. पटियाला फार्मेसी की औषध खरीदते समय हमारा ट्रेड मार्क देख कर औषध खरीदें।

पटियाला आयुर्वैदिक फार्मेसी PTA SIRHIND सरहिन्द

१९. मूल्य—दर परिवर्तन की सूचना यथा समय व्यापारियों को भेज दी जाती है। डाकखाने की अव्यवस्था के कारण सूचना न मिले तो फार्मेसी जिम्मेवार नहीं। चालू सूचीपत्र ही कीमतों के लिये प्रमाणिक समझा जायगा।

२०. माल मंगवाकर वी. पी, या बैंक की हुण्डी या वी. पी. पार्सल वापिस

करना कानून अपराध है। इससे व्यापारी की बहुत अप्रतिष्ठा होती होती है। फिर भी जाने या अनजाने में यदि किसी ग्राहक के यहां से वी. पी. या बैंक हुण्डी वापस आ जायगी तो उसके कुल खर्च तथा हरजाने के वही जिम्मेवार होंगे। पार्सल भेजने तथा वापिस मंगवाने तथा डेमरेज आदि का कुल खर्च ग्राहक से वसूल किया जायगा।

२१. सब प्रकार का व्यवहार वी. पी. या बैंक की मार्फत होगा। वी. पी. मनीआर्डर कमीशन या बैंक का कमीशन ग्राहकों को ही देना होता है। उधार पर कोई कार्य न होगा।

२२. प्रत्येक क्षेत्र में बिक्री बढ़ाने के लिये विज्ञापन तथा प्रचार आदि का प्रबन्ध आवश्यकता तथा सुविधानुसार किया जायगा। साइनबोर्ड, हैंडबिल, सिनेमास्लाइड, कैलेंडर सूचीपत्र आदि विज्ञापन सामग्री सुविधानुसार दी जायगी। साइनबोर्ड के लिये प्रथम ऑर्डर १५०) के नेट मूल्य का होना आवश्यक है। थोड़े मूल्य के ऑर्डर पर साइनबोर्ड देना सम्भव नहीं।

२३. औषधियां फार्मेसी द्वारा निश्चित मूल्य पर ही वेचनी चाहियें। स्थानीय बिक्री टैक्स पृथक् ले सकते हैं।

२४. प्रत्येक ऑर्डर पर )॥ बिक्री टैक्स (Sales Tax) लगाया जायगा। Sale Tax लाइसेन्स होल्डर को अपना नम्बर आदि भर कर छपा फार्म ऑर्डर के साथ भेजना चाहिये अन्यथा )॥ प्रति रुपया बिक्री कर जरूर लगेगा।

२५. किसी ऑर्डर का माल सप्लाई करने या न करने या उस समय स्टाक में कोई दवा तैयार नहीं रहने के कारण ऑर्डर में कमी वेशी करने का फार्मेसी को पूरा अधिकार होगा।

२६. यद्यपि फार्मेसी को सर्वदा इस विषय का ध्यान रहता है कि किसी भी ग्राहक के साथ व्यापार के सिलसिले में अनावश्यक अप्रियता न हो फिर भी यदि किसी कारणवश कोई अड़चन उपस्थित हो जायगी तो सरहिन्द [पटियाला यूनियन] तथा ब्राञ्च कार्यालय जबलपुर (म. प्र.) या ब्राञ्च कार्यालय जालन्धर (पंजाब) अथवा अन्य जिस कार्यालय से भी माल भेजा जायगा वहीं की अदालत का निर्णय मान्य समझा जायगा। अन्य किसी स्थान का नहीं।

जनरल मैनेजर

**पटियाला आयुर्वेदिक फार्मेसी, सरहिन्द**